सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 37, नई दिल्ली । गुरुवार, 17 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 सौंदर्य और तकनीक का अनोखा संगम
06 खेती में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी
08 ओडिशा कांग्रेस ने राजनीतिक मामलों की समिति गठित की

जब जनता की रक्षा करने वाला जनता को लुटवाने लगे और प्रशासक (उपराज्यपाल दिल्ली) देख कर भी रहे चुप तो जनता कैसे हो सकती है सुरक्षित ?

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली की जनता जिनके समय सीमा समाप्त और समय सीमा बचे हुए **वाहनों को दिल्ली परिवहन आयुक्त ने अपने प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो को फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से अपने पद की ताकत का दुरुपयोग करते हुए परिवहन विभाग, दिल्ली नगर निगम और दिल्ली यातायात पुलिस से जबरदस्ती उठवा कर सुपुर्द करवा दिए और उनको जनता के वाहनों के बल पर खरबपति बनवा दिया वह आज परिवहन आयुक्त के जनता के समक्ष दिखावी आदेशों के बाद भी भारत सरकार द्वारा जारी वाहन की निम्न स्क्रैप मूल्य दर भी ना तो वाहन मालिकों को दे रहे है और ना ही सरकारी विभाग (परिवहन विभाग, दिल्ली नगर निगम और दिल्ली यातायात पुलिस) में जमा करवा रहे हैं** और परिवहन आयुक्त सिर्फ दिखावटी नोटिस दर नोटिस भेज कर अपने आप को साफ सुथरा दिखाने में लगे हैं। **जनता को अपने पद का दुरुपयोग कर लुटवाने वाला आई.ए.एस. ईमानदार और जनहित कारी, इतनी जनहितकारी और ईमानदारी दिखानी थी तो दिल्ली परिवहन निगम** की और **दिल्ली परिवहन विभाग के प्रवर्तन शाखा में खड़े** और समय सीमा समाप्त वाहनों को भारत सरकार द्वारा घोषित निम्न स्क्रैप दर पर अपने प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो को सुपुर्द करवा देने थे उन्हें नीलामी द्वारा उच्च मूल्य पर वाहन स्क्रैप डीलरो को क्यों बेचा ? **जनता का माल मिट्टी और सरकारी विभाग में पड़ा कबाड़ सोना।** कैसा है यह नियम कानून और कायदा **जहां एक जनहित के पद पर बैठा अधिकारी खुले आम जनता को लुटवा रहा हैं और प्रशासक उपराज्यपाल दिल्ली, गृह मंत्री भारत सरकार देखते हुए भी बैठे हैं चुप।**

जाने कुछ महत्वपूर्ण बाते और परिवहन आयुक्त द्वारा 15 अप्रैल 2025 की बैठक के मुद्दे

___ - १ - ___

दिनांक 15/04/2025 को प्रातः 10:00 बजे योग्य ACS - सह - आयुक्त, परिवहन विभाग, GNCTD की अध्यक्षता में गूगल मीट के माध्यम से ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई। बैठक में निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा की गई:

वाहन मालिक की शिकायत से संबंधित मुद्दे / **परिवहन विभाग एवं आर.वी.एस.एफ. नियम अनुपालन से संबंधित मुद्दे**

1. वाहन रिलीज के लिए भुगतान (जैसे, टोइंग शुल्क, हैंडलिंग शुल्क, लॉजिस्टिक्स शुल्क, आदि) की अधिक वसूली देखी गई, जबकि विभाग द्वारा जारी रिलीज आदेश में स्पष्ट रूप से कहा गया था कि शुल्क दिल्ली पार्किंग नियम, 2019 के नियम 16 के अनुसार लगाया जाना चाहिए,:- **सीओडी के सृजन के लिए राजपत्र अधिसूचना दिनांक 15/10/2024 का अनुपालन।**

2. मालिक द्वारा दावा प्रस्तुत करने के बाद स्क्रैप मूल्य का समय पर भुगतान नहीं किया गया, :- **दिनांक 23/01/2025 के आदेश का अनुपालन, जिसके तहत सभी आरवीएसएफ को निर्देश दिया गया था कि वे उन वाहनों के संबंध में पूर्ण स्क्रैप मूल्य (राशि) सरकारी खजाने में 15 दिनों की अवधि के भीतर बिना किसी शुल्क काटे समयबद्ध तरीके से जमा कराएं, जिनके स्क्रैप मूल्य का दावा नहीं किया गया है।**

3. वाहन मालिकों को टोइंग और पार्किंग शुल्क की कटौती के बाद कम स्क्रैप मूल्य का भुगतान किया गया, जो कि इस्पात मंत्रालय द्वारा जारी कार्यालय ज्ञापन दिनांक 23/01/2023 और दिल्ली के सार्वजनिक स्थानों पर जीवन समाप्ति वाले वाहनों के संचालन के लिए दिनांक 20/02/2024 के दिशानिर्देशों के खंड 10(i) के अनुरूप नहीं है, :- **सीओडी और लेनदेन विवरण डेटा दिनांक 07/02/2025 के ईमेल और आज तक के अनुस्मारक के अनुपालन में।**

4. वाहन मालिकों को समयबद्ध तरीके से जमा प्रमाणपत्र (सीओडी) उपलब्ध नहीं कराना, :- **कोई अन्य मुद्दे**

5. राजपत्र अधिसूचना दिनांक 15/10/2025 का उल्लंघन करते हुए गलत सीओडी उत्पन्न करना और मालिक की सहमति के बिना उस सीओडी का व्यापार करना।

6. वाहन को नुकसान पहुंचाना,

7. स्क्रैप यार्ड के मालिकों को स्क्रैप लेने की अनुमति नहीं दी जा रही है।

इस संबंध में सभी आरवीएसएफ को 07 दिनों के भीतर सभी बिंदुओं का अनुपालन करने का निर्देश दिया गया है।

कार्यालय उपायुक्त (स्क्रैपिंग सेल) परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी।

__ - २ - ___

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार
परिवहन विभागः स्क्रैपिंग सेल
5/9, अंडर हिल रोडः दिल्ली-110054
एफ.24(1)/एनओ/एससीआरएपी/टीपीटी/2024/075786517/4136
दिनांकः 23/01/2025

आदेश

सभी आरवीएसएफ को निर्देश दिया जाता है कि वे उन वाहनों के संबंध में पूर्ण स्क्रैप मूल्य (राशि) सरकारी खजाने में 15 दिनों की अवधि के भीतर बिना किसी शुल्क काटे समयबद्ध तरीके से जमा करें, जिनके लिए स्क्रैप मूल्य का दावा नहीं किया गया है। खाते का विवरण इस प्रकार हैः

खाते का नाम- कमिश्नर टीपीटी- संग्रह
खाता संख्याः 00000010577522233
आईएफएससी कोडः SBIN0005453
एमआईसीआर कोडः 110002094

इसके अलावा, यदि कोई आरवीएसएफ परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी द्वारा जारी दिनांक 20/02/2024 को दिल्ली के सार्वजनिक स्थानों पर जीवन समाप्ति वाले वाहनों को संभालने के लिए दिशानिर्देश के खंड 10 में उल्लिखित निर्धारित समय के भीतर सरकारी खजाने में स्क्रैप राशि जमा नहीं करता है, तो संबंधित आरवीएसएफ को ब्लैक लिस्ट करने के आदेश के बाद कारण बताओ नोटिस जारी किया जा सकता है।

इसे सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन से जारी किया जाएगा।

उप आयोग23/01/25 (स्क्रैपिंग सेल)

में कॉपीः-

1. अपर मुख्य सचिव-सह-आयुक्त, परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी के निजी सचिव।
2. विशेष आयुक्त (स्क्रैपिंग/एनएफ), परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी के पीए।
3. सभी संबंधित आरवीएसएफ।
4. सीनियर सिस्टम एनालिस्ट, परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी को परिवहन विभाग की वेबसाइट पर अपलोड करने के अनुरोध के साथ।

___ - 3 - ___

परिवहन विभाग, अधिसूचना
दिल्ली, 15 अक्टूबर, 2024
एफ. संख्या डीसी/ओपीएस/टीपीटी/2022/390/21.- सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (एमओआरटीएच), भारत सरकार द्वारा जारी अधिसूचना संख्या जीएसआर 720(ई), दिनांक 5 अक्टूबर 2021 के साथ पठित दिल्ली मोटर वाहन कराधान अधिनियम, 1962 की धारा 13 की उपधारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के उपराज्यपाल की यह राय है कि ऐसा करना जनहित में आवश्यक या समीचीन है, इसके द्वारा पंजीकृत वाहन स्क्रैपिंग सुविधा (आरवीएसएफ) में स्क्रैपिंग के लिए सौंपे गए पुराने वाहनों के पक्ष में जमा प्रमाणपत्र के विरुद्ध नए परिवहन और गैर-परिवहन वाहनों के पंजीकरण पर मोटर वाहन कर में रियायत का प्रावधान किया जाता है, जो नीचे निर्धारित शर्तों के अधीन हैः

1. गैर-परिवहन वाहनों के लिए, नए गैर-परिवहन पेट्रोल/सीएनजी/एलपीजी चालित वाहनों के पंजीकरण पर मोटर वाहन कर का 20% देय होगा और नए गैर-परिवहन डीजल चालित वाहनों के पंजीकरण के मामले में ऐसे कर का 15% देय होगा।
2. परिवहन वाहनों के लिए, नए परिवहन पेट्रोल/सीएनजी/एलपीजी चालित वाहनों के पंजीकरण पर मोटर वाहन कर का 15% देय होगा तथा नए परिवहन डीजल चालित वाहनों के पंजीकरण के मामले में ऐसे कर का 10% देय होगा।

बशर्ते कि उपर्युक्त दोनों मामलों में कुल मोटर वाहन कर रियायतें स्क्रैप मूल्य के 50% से अधिक नहीं होंगी।

स्पष्टीकरण 1: इस अधिसूचना के प्रयोजन के लिए, अभिव्यक्ति रजमा प्रमाणपत्र (सीओएल) का वही अर्थ होगा जो समय-समय पर संशोधित रमोटर वाहन (वाहन स्क्रैपिंग सुविधा का पंजीकरण और कार्य) नियम, 2021र के नियम 3 के उप-नियम (1) के खंड (सी) में दिया गया है।

स्पष्टीकरण 2: मोटर वाहन (पंजीकरण एवं मानक) नियम, 2010 के नियम 10 के खंड (xii) एवं (xiii) के अनुसार, मोटर वाहन (पंजीकरण एवं मानक) नियम, 20 ...

और समय-समय पर संशोधित वाहन स्क्रैपिंग सुविधा के कार्य) नियम, 2021 के अनुसार, नए वाहन की खरीद पर मोटर वाहन कर रियायत का लाभ उठाने के लिए मालिक के लिए जमा प्रमाणपत्र एक आवश्यक और पर्याप्त दस्तावेज होगा। उक्त प्रमाण पत्र की वैधता इसके जारी होने की तारीख से तीन वर्ष होगी और यह इलेक्ट्रॉनिक रूप से व्यापार योग्य होगा। बशर्ते कि सरकारी स्वामित्व वाले वाहन या किसी प्रवर्तन एजेंसी द्वारा सौंपे गए जब्त वाहन के खिलाफ जारी जमा प्रमाणपत्र पर कोई प्रोत्साहन नहीं होगा और ऐसा जमा प्रमाणपत्र इलेक्ट्रॉनिक रूप से व्यापार योग्य नहीं होगा।

स्पष्टीकरण 3: इस प्रयोजन के लिए, स्क्रैप मूल्य की गणना जमा प्रमाणपत्र में उल्लिखित अनुसार की जाएगी।

यह अधिसूचना आधिकारिक राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से लागू होगी।

आदेश द्वारा तथा उपराज्यपाल के नाम से
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का,
प्रशांत गोयल, प्रधान सचिव

___ - 4 - ___

दिल्ली के सार्वजनिक स्थानों पर जीवन के अंत वाले वाहनों को संभालने के लिए दिशानिर्देशों का खंड 10(i) दिनांक 20/02/2024।

10. वाहनों का स्क्रैप मूल्यः

(i) जीवन के अंत में वाहन के लिए स्क्रैप मूल्य वाहन के लौह स्क्रैप घटक के मूल्य के 90% के रूप में निर्धारित किया जाएगा। जीवन के अंत में वाहनों में लौह स्क्रैप का प्रतिशत निकालने के लिए मानक सूत्र वाहन के कर्ब वजन के 65% पर लिया जा सकता है। फेरस स्क्रैप की दर को ईएलवी के स्क्रैप मूल्य को तय करने के समय पिछले तीन महीनों के दौरान स्टील स्क्रैप की कीमत के मूविंग एवरेज के रूप में लिया जा सकता है।

(ii) आरवीएसएफ द्वारा वाहन स्वीकार किए जाने के 15 दिनों के भीतर सभी स्क्रैप मूल्य का भुगतान केवल डिजिटल मोड के माध्यम से वाहन मालिक के नाम के बैंक खाते में किया जाएगा।

(iii) जिस वाहन के स्क्रैप मूल्य का दावा 15 दिनों की अवधि के भीतर नहीं किया जाता है, उसका स्क्रैप मूल्य संबंधित आरवीएसएफ द्वारा प्रवर्तन एजेंसी के सरकारी खाते में डिमांड ड्राफ्ट / आरटीजीएस / एनईएफटी / आईएमपीएस के माध्यम से जमा किया जाएगा।

11. लागू अधिनियम/नियमः-

(i) मोटर वाहन अधिनियम, 1988, समय-समय पर संशोधित

(ii) समय-समय पर संशोधित केंद्रीय मोटर वाहन नियम, 1989

(iii) दिल्ली मोटर वाहन नियम, 1993, समय-समय पर संशोधित

(iv) मोटर वाहन (वाहन स्क्रैपिंग सुविधा का पंजीकरण और कार्य) नियम, 2021 और इसके संशोधन नियम, 2022।

यह मुद्दा माननीय मंत्री (परिवहन), जीएनसीटीडी के पूर्व अनुमोदन से
विशेष आयुक्त (स्क्रैपिंग सेल)

'50 से 80 हजार के चालान हों माफ', सीएनजी से इलेक्ट्रिक में जाने को ग्रामीण सेवा वाले तैयार

दिल्ली की मौजूदा इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) नीति को तीन महीने के लिए बढ़ा दिया गया है जिससे ईवी नीति 2.0 को लागू करने के लिए और समय मिल जाएगा। इस बीच जहां एक ओर सीएनजी ऑटो चलाने वाले इलेक्ट्रिक में बदलने का विरोध कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर ग्रामीण सेवा चलाने वाले ड्राइवर सीएनजी से इलेक्ट्रिक में जाने को तैयार हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। एक तरफ सीएनजी ऑटो वाले जहां अपने ऑटो को इलेक्ट्रिक में बदलने का विरोध कर रहे हैं। वहीं, ग्रामीण सेवा चलाने वाले अपने वाहन को इलेक्ट्रिक में बदलने के लिए आगे आए हैं। ये लोग चाहते हैं कि इनके पुराने हो चुके ग्रामीण सेवा वाहनों को इलेक्ट्रिक में बदला जाए।

दिल्ली में करीब 6000 ग्रामीण सेवा वाहन चलते हैं। इनकी जगह पर इलेक्ट्रिक में बदलने का इन्हें परमिट तभी मिल सकता है जब इन वाहनों पर कोरोना काल के समय से बकाया मोटे-मोटे चालान का भुगतान किया जाए। इन्हें माफ किए जाने के लिए ग्रामीण सेवा संचालकों ने मुख्यमंत्री से मांग की है।

कब हुई थी ग्रामीण सेवा की शुरुआत ?

दिल्ली में ग्रामीण सेवा की शुरुआत सन 2010 में की गई थी जब सुप्रीम कोर्ट ने डीजल बसों पर दिल्ली में बिल्कुल प्रतिबंध लगा दिया था। उस समय की शीला सरकार ने बसों की एकाएक हो गई कमी को देखते हुए फैसला लिया था कि ग्रामीण इलाकों में लास्टमाइल कनेक्टिविटी का साधन उपलब्ध कराने के लिए ग्रामीण सेवा वाहन चलाए जाएं।

उस समय 6000 परमिट जारी किए गए थे तभी से यह वाहन चले आ रहे हैं और लगभग अब उम्र पूरी करने के कगार पर हैं। पूर्व की आप सरकार ने इन्हें इलेक्ट्रिक में बदलने की घोषणा की थी और मंजूरी भी दी थी।

क्या है परिवहन विभाग का नियम ?

मगर यह योजना आगे नहीं बढ़ पाई और अब तक केवल एक ग्रामीण सेवा वाहन को इलेक्ट्रिक में बदला जा सका है। कारण यह है कि कोरोना महामारी के समय से अब तक इन वाहनों पर चालान आ रहे हैं। एक-एक ग्रामीण सेवा वाहन पर 50000 से लेकर 80000 तक के चालान लंबित हैं।

परिवहन विभाग का नियम है कि जब तक इन चालान का भुगतान नहीं किया जाता है तब तक इन वाहन मालिकों के नाम से इलेक्ट्रिक का परमिट जारी नहीं किया जा सकता है। भाजपा सरकार जब से सत्ता में आई है ग्रामीण सेवा संचालक लगातार सरकार से संपर्क बनाए हुए हैं और मुख्यमंत्री से मिलने के लिए भी समय मांगा हुआ है।

कैपिटल ड्राइवर वेलफेयर एसोसिएशन के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष चंदू चौरसिया का कहना है कि मुख्यमंत्री हस्तक्षेप करें और इन चालान को माफ कराएं। जिसमें से बड़ी संख्या में चालान कोरोना महामारी के समय जारी किए गए हैं। उन्होंने कहा कि पूर्व की आप सरकार ने इन्हें माफ कराने का भी भरोसा दिया था जो माफ नहीं किए गए।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

रात में सोने के पहले नाभि में तेल की बूंदें डालकर सोने के क्या फायदे हैं?

बहुत ऐसी बीमारियाँ है जिसे नाभि के जरिये ठीक किया जा सकता है।

नाभि पर तेल लगाने से कई रोगों से छुटकारा भी पाया जा सकता है। बहुत सारे तेलों में एंटी-बैक्टीरियल गुण होते है जिसे लगाने से छोटी-बड़ी समस्याएं भी दूर हो जाती है। नाभि में तेल लगाने से शरीर स्वस्थ और निरोगी बनता है। नाभि हमारे शरीर का चमत्कारी बिंदु है जिस पर तेल लगाने से कई बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है। आइये जानते है नाभि में तेल लगाने से क्या लाभ है - त्वचा (skin) मुलायम और ब्राइट बनती है - बादाम का तेल नाभि में लगाने से स्किन का कलर साफ होता है। आज के समय में पुरुष हो या महिला हर कोई दमकता हुआ स्किन चाहता है। अगर आप भी चमकदार और मुलायम त्वचा चाहते है अपनी नाभि में बादाम का तेल जरूर लगाए। बादाम में विटामिन ई पाया जाता है। जिसे नाभि में लगाने से चेहरे के रंगत के साथ स्किन का रूखापन भी दूर करता है। अगर आप की स्किन बहुत ज्यादा खुरदरी और सख्त है तो आपको नाभि में घी लगाना चाहिए। इससे भी त्वचा (Skin) मुलायम बनती है।

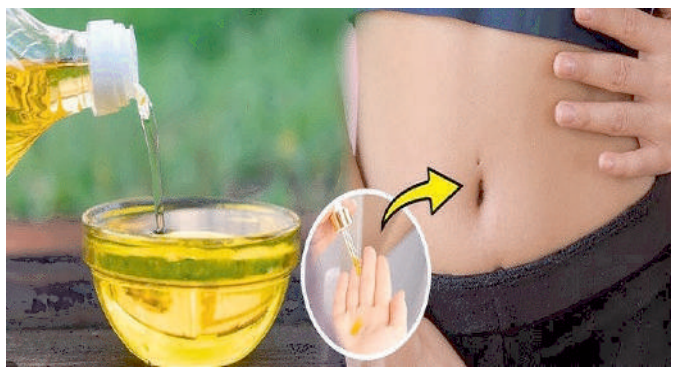

मुँहासे की समस्या से छुटकारा मिलता है - नीम और नीम से संबंधित सभी चीजो को त्वचा संबंधित समस्याओं से लेकर बहुत सी समस्याओं को दूर करने के लिए रामबाण उपाय माना जाता है।

किशोरावस्था और गलत खानपान के वजह से चेहरे पर मुँहासे और दाने निकल आते है जो चेहरे की खुबसुरती को बेकार बना देता है। अगर आप भी इन सब समस्याओं से परेशान है तो रोजाना अपनी नाभि में दो बून्द नीम का तेल लगाए।

होंठ मुलायम होते है - सर्दियों में स्किन के साथ-साथ फंटे होंठ की भी बहुत ज्यादा समस्या हो जाती है और फटे होंठो के कारण कई बार शर्मिंदगी भी उठानी पड़ती है। फटे होंठ से छुटकारा पाने के लिए नाभि में सरसो का तेल लगाए। यह फटी एड़ियों और रूखी स्किन की समस्या को भी दूर करता है।

पेट-दर्द की समस्या को दूर करता है - आपने देखा या सुना होगा बच्चों के पेट में दर्द होने पर माँ-दादी नाभि में हींग का पानी या तेल लगाती है ताकि पेट में गैस या अपच हो तो वो दूर हो जाय और ये सच में काम करता है। बड़े लोग भी इस नुस्खा को आजमा सकते है।

दाग-धब्बे दूर करता है - मुँहासे, दाने या फुंसी के वजह से चेहरे पर निशान रह जाते है जो देखने में भद्दे लगते है। अगर आप जल्द दाग-धब्बो से छुटकारा पाना चाहते है तो नींबू का तेल अपने नाभि में नहाने के बाद और सोने से पहले लगाए।

जोड़ों की दर्द को दूर करता है - जोड़ो के दर्द कई कारणों से हो सकता है जैसे गठिया, तनाव, चोट जो जोड़ो के आसपास लगी हो, ऑस्टियोअर्थराइटिस आदि हो सकते है। जोड़ो के दर्द में एक कारण मोटापा (Oil in belly button for weight loss) भी है तो मोटापा और जोड़ो का दर्द करने के लिए नाभि में जैतून का तेल दो बून्द सोने से पहले जरूर लगाए।

इम्युनिटी मजबूत करता है और बाल सिल्की बनाता है - नारियल का तेल भारत के हर घर में इस्तेमाल किया जाता है। यह तेल नाभि में लगाने से बालो में चमक आती है। साथ ही आँखों का सूखापन और कमजोरी को भी दूर करता है। आप नहाने के बाद या सोने से पहले दो या तीन बून्द तेल नाभि में डालें और नाभि के आसपास के हिस्से में गोलाई में फैलाये और कुछ देर मालिश करें। ऐसा करने से बाल सिल्की होंगे और आंखों की समस्या भी दूर होगी। नारियल का तेल या जैतून का तेल 3 से 7 बून्द नाभि में लगाने से प्रजजन क्षमता बढ़ती है।

साथ ही नाभि में तेल लगाने से फूड प्वाइजनिंग को दूर करता है, बच्चों के पेट के कीड़ों को दूर करता है, याददाश्त तेज होती है और शरीर का सूजन कम होता है।

नाभि में तेल क्यों लगाया जाता है और लगाने से क्या होता है - नाभि हमारे शरीर का नाड़ी का केंद्र (सेंटर प्वाइंट) होता है जिसके साथ बॉडी का नर्वस सिस्टम जुड़ा हुआ होता है यानि शरीर की सभी रक्त कोशिकाएं नाभि के केंद्र बिंदु से होकर गुजरती है इसलिए नाभि की साफ-सफाई जरुरी होता है और अगर नाभि पर तेल लगाया जाये तो उसके भी बहुत ज्यादे फायदे है। नाभि के पीछे पेकोटी ग्रंथि पायी जाती है। ये पेकोटी ग्रंथि शरीर की कई नसों और अंगों से जुड़ा होता है। पेकोटी ग्रंथि बहुत शक्तिशाली होता है और यहां पर तेल लगाने से आप शारीरिक और मानसिक रूप से बेहतर महसूस करते है।

मुंह की लार – सेहत का भंडार

मुंह की लार के विषय में आज हम जो बताने जा रहे हैं, उसे जानकर आप हैरान रह जाएंगे कि मुंह की लार आपके जीवन को संवारने में कितना महत्वपूर्ण साबित हो सकता है. जो हम आपको बताने जा रहे हैं, जिसे अपना कर आप कई बीमारियों को खुद से दूर रख सकते हैं.

1. दिन की शुरुआत पानी से करें सुबह उठते ही सबसे पहले उम्र के हिसाब से अगर छोटे बच्चे हैं तो एक क्लास बड़े हैं तो दो से तीन ग्लास पानी पी लें. याद रखें सुबह का पानी कुल्ला करने से भी पहले पीना चाहिए. और साथ हीं यह भी याद रखें की पानी कभी भी घूट – घूट कर धीरे-धीरे और बैठकर हीं पीना चाहिए.

2. सुबह का लार है अनमोल कहते हैं सुबह का लार पेट के लिए बेहद लाभदायक होता है. जब आप पानी पीते हैं तो रात भर मुंह में जमा लार पानी के साथ आपके पेट के अंदर जाता है. जो पेट के लिए काफी फायदेमंद साबित होता है. अगर आपका पेट अच्छा रहेगा तो और सब भी अच्छा, इसलिए सुबह की लार बेहद कीमती है. इसे यूं ही बर्बाद ना करें.

3. किडनी का दोस्त सुबह की लार ही नहीं पूरे दिवस व जीवन पर्यंत जब हम पानी को मुँह में घुमा घूमा कर पीते हैं जिसके कारण पानी में लार घुल कर पेट में जाता है और पेट से अन्य उपांगों में उन सभी उपांगों को स्वस्थ रहने में मदद करता है अमेरिका के डॉक्टर ने 12 वर्ष शोध करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचे की घुट घुट पानी पीने वाले किडनी रोगी का डायलसिस की प्रक्रिया

में कमी आती है और अंत में किडनी पूणतः स्वस्थ हो जाती है।

4. चश्मा उतारने में मददगार सुबह की लार काजल की तरह आंखों में लगाने से, आंखों की रोशनी बढ़ती है. और चश्मा तक उतर जाता है.

5. आंख आना (कंजक्टिवाइटिस) इसमें आंखें लाल हो जाती है. आंखों में काफी दर्द होता है. जलन के साथ खुजलाहट भी रहता है. आंखों से पानी आता रहता है. और आंखों में कीचड़ भी जमा होता रहता है. अगर सुबह की लार आप अपनी आंखों में लगाएंगे तो कहते हैं 24 घंटे के भीतर आंख ठीक हो जाता है.

6. नयन के सभी रोग जो इंसान सुबह की बासी लार काजल की तरहः आंखों में लगता है उसे जीवन भर नयन के कोई रोग नही होता है संक्षेप में कंहुँ तो लगभग आँखों के 22- 23 रोग इसके नियमित सेवन से नस्ट होता है

7. जलने के दाग यहां तक की सुबह – सुबह की लार जले हुए दाग पर रोज़ लगाने से 6 – 8 महीने में दाग मिटने लगते हैं.

8. सभी चर्म रोग सुबह की लार से नियमित मालिश से सभी चर्म रोग नष्ट होते हैं

9. सभी प्रकार के जख्म सुबह की बासी लार को मलहम की तरहः नियमित उपयोग कर सभी प्रकार के जख्म को भरा जा सकता है अनमोल औषधि है(यँहा तक मधुमेह रोगी के जख्म को भी जल्द से जल्द भरती है)

10. बालो की समस्या (झड़ना व सफेद व गंजापन) सुबह की बासी लार की नियमित मालिश से बालो की समस्या नष्ट होती है

11. चेहरे की समस्या त्वचा के सभी रोग इसके नियमित मालिस से नष्ट होता है कील मुँहासे रूखापन दाग धब्बे

ये है मुंह की लार के फायदे इतना ही नहीं मुंह की लार और भी बहुत सारी बीमारियां, जैसे एक्जिमा, सोरायसिस, और भेंगापन जैसी बीमारियों मे भी काफी फायदेमंद साबित होता है. तो क्यों ना आज से हीं हम अपना यह रूटीन बना लें, कि सुबह उठते हीं सबसे पहले भरपूर मात्रा में पानी पीएं, और बीमारियों को अलविदा कहें

कैंसर रोगी या अन्य रोग के कारण जब उनके लार बनने की प्रक्रिया बन्द हो जाती है तो यही लार 10ml लगभग 10 से 15 हजार में मिलती है वो भी किसी और का जुठा !

जब आपके लार बनने की क्षमता कम हो जाए तो उसकी अचूक औषधि है अपनी रसोई में हर कड़वी व कसैली जैसे मेथी, आवला, त्रिफला व सभी प्रकृति के द्वारा प्रदान किये गए दातुन व उनके पत्ते जैसे निम करंज बबूल महुआ जामुन कदम्ब आम अमरूद बेल पीपल अपामार्ग बांस इत्यादि

जो इंसान अप्राकृतिक मंजन (आर्थत पेस्ट केमिकल युक्त) का, नशीली वस्तुयों का, सेवन करते है या किसी रोग के उपचार में उपयोग एलोपैथी दवा का दुष्प्रभाव उनकी लार बनने की क्षमता कम होती है।

एक मूर्ति 25 चेहरे, 25 अलग-अलग मुस्कान

अभी यह बनाने में आधुनिक विज्ञान को भी पसीना आ जायेगा तो सोचिए हमारे पूर्वजों ने कितनी तल्लीनता से एक-एक मुद्रा को तराशा होगा, उनकी कुशलता का स्तर क्या रहा होगा जबकि आज यह आधुनिक कंप्यूटर के लिए भी एक चैलेंज हैI सनातन संस्कृति आधुनिक विज्ञान के उत्कृष्ट पैमाने से भी उन्नत पद्धति समाये बैठा है I सुचिन्द्रम में थानुमालयन मंदिर, जिसे स्थानुमलयन मंदिर या सुचिन्द्रम मंदिर भी कहा जाता है, एक महत्वपूर्ण हिंदू मंदिर है। यह मंदिर तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में स्थित है. यह शैव और वैष्णव दोनों संप्रदायों द्वारा पूजित है. यह मंदिर हिंदू धर्म के शैव और वैष्णव दोनों संप्रदायों का प्रतिनिधित्व करता है. ! यह मंदिर प्राचीन काल से ही अस्तित्व में है और इसके कई ऐतिहासिक संदर्भ हैं. ! यह मंदिर कन्याकुमारी के आसपास के क्षेत्र का एक प्रमुख धार्मिक केंद्र रहा है. मंदिर और उसके आसपास का क्षेत्र पहले त्रावणकोर राज्य का हिस्सा था, जो बाद में तमिलनाडु में मिला दिया गया. ! सुचिन्द्रम मंदिर कन्याकुमारी जिले में स्थित है. ! यह मंदिर कन्याकुमारी शहर से लगभग 10 किलोमीटर दूर स्थित है. ! मंदिर तक पहुंचने के लिए कन्याकुमारी रेलवे स्टेशन निकटतम है. ! यह मंदिर शैव और वैष्णव दोनों संप्रदायों के भक्तों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है. ! यह मंदिर अपनी स्थापत्य कला और इतिहास के लिए भी प्रसिद्ध है. ! मंदिर में विभिन्न प्रकार के धार्मिक समारोह आयोजित किए जाते हैं. ! मंदिर में प्रवेश के लिए एक ड्रेस कोड है, जिसमें पुरुषों को अपनी शर्ट उतारनी होती है, जबकि महिलाओं को रूढ़िवादी कपड़े पहनने चाहिए. ! मंदिर में प्रवेश करने से पहले आपको अपनी जूते और अन्य सामान मंदिर के बाहर रखना होगा. ! मंदिर के अंदर फोटोग्राफी या वीडियो रिकॉर्डिंग की अनुमति नहीं है. ! कन्याकुमारी जिले के सुचिन्द्रम में स्थित यह प्राचीन और राजसी मंदिर अपनी भव्यता और वैभव से हमेशा विस्मित करता रहता है। सुचिन्द्रम केरल में हिंदुओं द्वारा पूजे जाने वाले 108 शिव मंदिरों में से एक है।

मोहन मुरारी 'रांची' (झारखंड)

कौन कौन से पेड़ लगाएं कि ज्यादा लाभ हो और मेहनत सही दिशा में हो

स्कंदपुराण में एक सुंदर श्लोक है

अश्वत्थमेकम्पिचुमन्दमेकम्
न्यग्रोधमेकम् दश चिञ्चिणीकान्।
कपित्थबिल्वाऽऽमलकत्रयञ्च पञ्चाऽऽम्रमुप्त्वा नरकन्न पश्येत्।।

अश्वत्थः = पीपल (100% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)
पिचुमन्दः = नीम (80% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)
न्यग्रोधः = वटवृक्ष (80% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)
चिञ्चिणी = इमली (80% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)
कपित्थः = कविट (80% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)
बिल्वः = बेल (85% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)
आमलकः = आवला (74% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)
आम्रः = आम (70% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

(उप्ति = पौधा लगाना) अर्थात्- जो कोई इन वृक्षों के पौधो का रोपण करेगा, उनकी देखभाल करेगा उसे नरक के दर्शन नही करना पड़ेंगे। इस सीख का अनुसरण ना करने के कारण हमें आज इस परिस्थिति के स्वरूप में नरक के दर्शन हो रहे हैं। अभी भी कुछ बिगड़ा नही है, हम अभी भी अपनी गलती सुधार सकते हैं। और गुलमोहर, निलगिरी - जैसे वृक्ष अपने देश के पर्यावरण के लिए घातक हैं। पश्चिमी देशों का अंधानुकरण कर हम ने अपना बड़ा नुकसान कर लिया है। पीपल, बड और नीम जैसे वृक्ष रोपना बंद होने से सूखे की समस्या बढ़ रही है। यह सारे वृक्ष वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाते है। साथ ही, धरती के तापनाम को भी कम करते है। हमने इन वृक्षों के पूजने की परंपरा को अन्धविश्वास मानकर फटाफट संस्कृति के चक्कर में इन वृक्षो से दूरी बनाकर यूकेलिप्टस (नीलगिरी) के वृक्ष सड़क के दोनों ओर लगाने की शुरूआत की। यूकेलिप्टस झट से बढ़ते है लेकिन ये वृक्ष दलदली जमीन को सुखाने के लिए लगाए जाते हैं। इन वृक्षों से धरती का जलस्तर घट जाता है। विगत ४० वर्षों में नीलगिरी के वृक्षों को बहुतायात में लगा कर पर्यावरण की हानि की गई है। शास्त्रों में पीपल को वृक्षों का राजा कहा गया है

मूले ब्रह्मा त्वचा विष्णु शाखा शंकरमेवच।
पत्रे पत्रे सर्वदेवायाम्वृक्ष राज्ञो नमोस्तुते।।

भावार्थ -जिस वृक्ष की जड़ में ब्रह्मा जी तने पर श्री हरि विष्णु जी एवं शाखाओं पर देव आदि देव महादेव भगवान शंकर जी का निवास है और उस वृक्ष के पत्ते पत्ते पर सभी देवताओं का वास है ऐसे वृक्षों के राजा पीपल को नमस्कार है आगामी वर्षों में प्रत्येक ५०० मीटर के अंतर पर यदि एक एक पीपल, बड़, नीम आदि का वृक्षारोपण किया जाएगा, तभी अपना भारत देश प्रदूषणमुक्त होगा। घरों में तुलसी के पौधे लगाना होंगे। हम अपने संगठित प्रयासों से ही अपने ₹भारत₹ को नैसर्गिक आपदा से बचा सकते हैं, भविष्य में भरपूर मात्रा में नैसर्गिक ऑक्सीजन मिले इसके लिए आज से ही अभियान आरंभ करने की आवश्यकता है।

आइए हम पीपल, बड़, बेल, नीम, आंवला एवं आम आदि वृक्षों को लगाकर आने वाली पीढ़ी को *निरोगी एवं ₹ सुजलां सुफलां पर्यावरण ₹ देने का प्रयत्न करें।

भोजन करने से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण बातें जो हर किसी को पता होनी चाहिए

दक्षिण दिशा में मुंह करके खाना खाना, आपको अकाल मृत्यु की ओर ले जाता है। वास्तव, माना जाता है कि यह दिशा मरे हुए लोगों की है और इस दिशा में ऐसी ही ऊर्जा रहती है। जब आप इस दिशा में खाना खाते हैं तो नकारात्मक ऊर्जा आपके खाने में मिल जाती है या फिर आपके खाने का एक भाग इन्हें भी जाने लगता है फिर लगातार यह काम करना इनके साथ संपर्क बढ़ाता है और मृत्यु की दिशा क्रियाशील हो जाती है और आप या आपका कोई विशेष अचानक से अकाल मृत्यु की ओर जाता है।

खाने की सही दिशा क्या है- खाने की सही दिशा है पूर्व। वास्तव में, इस दिशा में खाना मानसिक तनाव को दूर करता है और आपके पाचन क्रिया को सही करता है। इसके अलावा इस दिशा में खाना खाने से आप स्वस्थ्य रहते हैं इतना ही नहीं इस दिशा में खाना खाने से आपके माता-पिता का भी स्वास्थ्य उत्तम रहता है।

भोजन करने के नियम सनातन धर्म के अनुसार

1. खाने से पूर्व अन्नपूर्णा माता की स्तुति करके उनका धन्यवाद देते हुये तथा सभी भूखों को भोजन प्राप्त हो इश्वर से ऐसी प्रार्थना करके भोजन करना चाहिये।

2. गृहस्थ के लिये प्रातः और सायं (दो समय) ही भोजन का विधान है।

3. दोनों हाथ, दोनों पैर और मुख, इन पाँच अंगों को धोकर भोजन करने वाला दीर्घजीवी होता है।

4. भींगे पैर खाने से आयु की वृद्धि होती है।

5. सूखे पैर, जुते पहने हुये, खड़े होकर, सोते हुये, चलते फिरते, बिछावन पर बैठकर, गोद मे रखकर, हाथ मे लेकर, फुटे हुये बर्तन में, बायें हाथ से, मन्दिर मे, संध्या के समय, मध्य रात्रि या अंधेरे में भोजन नहीं करना चाहिये।

6. रात्रि में भरपेट भोजन नहीं करना चाहिये।

7. रात्रि के समय दही, सत्तुएव तिल का सेवन नहीं करना चाहिये।

8. हँसते हुये, रोते हुये, बोलते हुये, बिना इच्छा के, सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण के समय भोजन नहीं करना चाहिये।

9. पूर्व की ओर मुख करके खाना खाने से आयु बढ़ती है।

10. उत्तर की ओर मुख करके भोजन करने से आयु तथा धन की प्राप्ति होती है।

11. दक्षिण की ओर मुख करके भोजन करने से प्रेतत्व की प्राप्ति होती है।

12. पश्चिम की ओर मुख करके भोजन करने से व्यक्ति रोगी होता है।

13. भोजन सदा एकान्त मे ही करना चाहिये।

14. यदि पत्नि भोजन कर रही हो, तो उसे नहीं देखना चाहिये।

15. बालक और वृद्ध को भोजन करने के बाद स्वंय भोजन ग्रहण करें।

16. बिना स्नान, पूजन, हवन किये बिना भोजन न करें।

17. बिना स्नान ईख, जल, दूध, फल एवं औषध का सेवन कर सकते हैं।

18. किसी के साथ एक बर्तन मे भोजन न करें।(पत्नि के साथ कदापि नहीं) अपना जूठा किसी को ना दें, ना स्वंय किसी का जुठा खायें।

19. काँसे के बर्तन में भोजन करने से (रविवार छोड़कर) आयु, बुद्धि, यश और बल की वृद्धि होती है।

20. परोसे हुये अन्न की निन्दा न करें, वह जैसा भी हो, प्रेम से भोजन कर लेना चाहिये। सत्कारपूर्वक खाये गये अन्न से बल और तेज की वृद्धि होती है।

21. ईर्ष्या, भय, क्रोध, लोभ, राग और द्वेष के समय किया गया भोजन शरीर मे विकार उत्पन्न कर रोग को आमन्त्रित करता है।

22. भोजन में पहले मीठा, बीच मे नमकीन एवं खट्टी तथा अन्त में कड़वे पदार्थ ग्रहण करें।

23. कोई भी मिष्ठान्न पदार्थ जैसे हलवा, खीर, मालपूआ इत्यादि देवताओ एवं पितरों को अर्पण करके ही खाना चाहिये।

24. जल, शहद, दूध, दही, घी, खीर और सत्तु को छोड़कर कोई भी पदार्थ सम्पुर्ण रूप से नहीं खाना चाहिये। (अर्थात्बिल्कुल थोड़ा सा थाली मे छोड़ देना चाहिये)।

25. जिससे प्रेम न हो उसके यहाँ भोजन कदापि न करें।

26. मल मूत्र का वेग होने पर, कलह के माहौल में, अधिक शोर में, पीपल, वट वृक्ष के नीचे, भोजन नहीं करना चाहिये।

27. आधा खाया हुआ फल, मिठाइयाँ आदि पुनः नहीं खानी चाहिये।

28. खाना छोड़ कर उठ जाने पर दोबारा भोजन नहीं करना चाहिये।

29. गृहस्थ को *२ ग्रास से अधिक नहीं खाना चाहिये।

30. थोडा खाने वाले को आरोग्य, आयु, बल, सुख, सुन्दर सन्तान, और सौन्दर्य प्राप्त होता है।

31. जिसने ढिंढोरा पीट कर खिलाया हो वहाँ कभी न खायें।

32. कुत्ते का छुआ, श्राद्ध का निकाला, बासी, मुँह से फूंक मरकर ठण्डा किया, बाल गिरा हुआ भोजन, अनादर युक्त, अवहेलना पूर्ण परोसा गया भोजन कभी न करें।

33. कंजूस का, राजा का, चरित्रहीन के हाथ का, शराब बेचने वाले का दिया भोजन कभी नहीं करना चाहिये।

34. भोजन बनाने वाला स्नान करके ही शुद्ध मन से, मन्त्र जप करते हुये ही रसोई में भोजन बनायें और सबसे पहले * रोटियाँ अलग निकाल कर (गाय, कुत्ता, और कौवे हेतु) फिर अग्नि देव का भोग लगा कर ही घर वालों को खिलायें।

भीष्म पितामह ने अर्जुन को 4 प्रकार का भोजन न करने की सलाह दी थी.

1. जिस थाली को क़ोई व्यक्ति लांघ कर गया हो वह भोजन नाली में पड़े कीचड़ के समान है! वह भोजन योग्य नहीं है!

2. जिस थाली को ठोकर लग गई या पांव लग गया वह भोजन भिष्टा के समान है! वह भोजन योग्य नहीं है!

3. जिस भोजन की थाली में या भोजन में बाल (केश) पड़ा हो वह दरिद्रता के समान है! भोजन योग्य नहीं है!

4. जिस थाली में पति पत्नी एक साथ भोजन कर रहे हों वह भोजन भी योग्य नहीं है! लेकिन पत्नी अगर अपने पति की झूठी थाली या पति का झूंठा खाती है तो उसे चारों धाम का पुण्य फल मिलता है!

हे अर्जुन, बेटी अगर कुमारी हो और पिता के साथ एक ही थाली में भोजन करती है तो उस पिता की कभी अकाल मृत्यु नहीं हो सकती क्योंकि बेटी पिता की अकाल मृत्यु को हर लेती है।

महुआ – एक पेड़ नहीं जीवन है

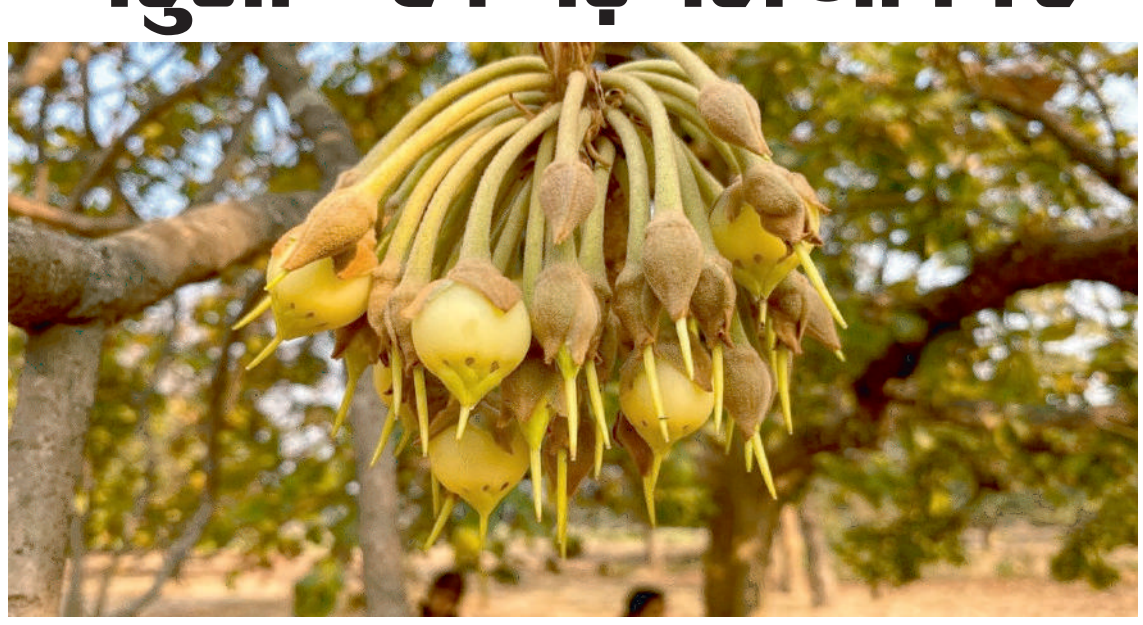

धरती पर कोई कल्पवृक्ष है, तो वो महुआ है – जो इंसान, जानवर, और प्रकृति तीनों के लिए अमृत है। गांवों का स्वाद, जंगल की मिठास, आदिवासी संस्कृति की शान – महुआ का हर फूल, हर फल एक दवा है, एक पकवान है और एक कहानी है। आज जब सब कुछ पैकेट में आ रहा है, चलिए कुछ ऐसा अपनाएं जो सीधे प्रकृति से आता है – शुद्ध, पोषक, और अपनापन भरा।

महुआ : अपनाइये, खाइये, और खिलाइये!

महुआ – सिर्फ एक पेड़ नहीं, जीवन का सार है!

जब धरती पर किसी कल्पवृक्ष की कल्पना की जाती है, तो सबसे पहले ध्यान आता है – महुआ का। यह पेड़ सिर्फ जंगल की शोभा नहीं, बल्कि एक पूरा जीवन है – जिसमें स्वाद, संस्कृति, सेहत और स्वावलंबन सब कुछ समाया हुआ है।

महुआ क्या है? महुआ (Madhuca longifolia) एक विशाल, बहुवर्षीय पेड़ है जो भारत के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में विशेष रूप से पाया जाता है। इसके हर हिस्से – फूल, फल, बीज, पत्ते और छाल – का उपयोग होता है। यह पेड़ न केवल मनुष्यों के लिए, बल्कि पशुओं और पूरी पारिस्थितिकी के लिए भी अनमोल है।

1. फूलों में मिठास, यादों की बात

मार्च–अप्रैल में जब महुआ फूलता है, तो उसकी खुशबू पूरे जंगल को महका देती है। यह फूलः

- पारंपरिक मिठाइयों और पेयों में उपयोग किए जाते हैं।
- ऊर्जा और आयरन से भरपूर होते हैं।
- बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक के लिए पोषण का बेहतरीन स्रोत हैं।
- महुआ के फूलों से बनी शराब भी कई आदिवासी संस्कृतियों में परंपरागत रूप से तैयार की जाती है – जिसे सामाजिक और धार्मिक अवसरों पर आदरपूर्वक उपयोग किया जाता है।

2. बीजों से तेल, जो शरीर और आत्मा को संवार दे

महुआ के बीजों से निकला तेलः

- खाना पकाने के लिए उपयुक्त होता है।
- त्वचा को नमी देता है और जोड़ों के दर्द में राहत देता है।
- कई प्रकार के घरेलू उपचारों में प्रयोग होता है।
- यह तेल न केवल स्वास्थ्य के लिए अच्छा है, बल्कि एक आजीविका का सशक्त साधन भी है।

3. छाल और पत्तियाँ – लोक चिकित्सा की शक्ति

महुआ की छालः

- बुखार, पेचिश, त्वचा संक्रमण जैसी समस्याओं के इलाज में काम आती है।
- इसका काढ़ा या चूर्ण पारंपरिक वैद्य पद्धति में लंबे समय से उपयोग होता आ रहा है।
- महुआ की पत्तियों से बने दोना-पत्तल न केवल पर्यावरण के अनुकूल हैं, बल्कि प्लास्टिक का बेहतरीन विकल्प भी हैं।

4. आदिवासी संस्कृति की आत्मा महुआ पेड़ केवल संसाधन नहीं है – यह एक संस्कृति हैः

- आदिवासी समुदायों में इसे पवित्र माना जाता है।
- त्योहारों, अनुष्ठानों, विवाहों और मेले-ठेलों में महुआ की अनिवार्य भूमिका होती है।
- महुआ से जुड़ी लोककथाएं, गीत और नृत्य आदिवासी जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं।

आज की ज़रूरतः महुआ को फिर से अपनाना आज के युग में जहाँ हर चीज़ पैकिंग और प्रोसेसिंग से होकर गुजरती है, वहाँ महुआ जैसे प्राकृतिक संसाधनों को अपनाना न सिर्फ शरीर के लिए, बल्कि आत्मा के लिए भी ज़रूरी है।

- यह स्थानीय और टिकाऊ जीवनशैली का प्रतीक है।
- यह आदिवासी समुदायों के सम्मान और आर्थिक सशक्तिकरण की कुंजी है।
- यह हमें प्रकृति से जोड़ने वाला सेतु है।

निष्कर्षः महुआ – अपनाइये, खाइये, और खिलाइये! महुआ सिर्फ पेड़ नहीं है – यह एक रिश्ता है, जो हमें जड़ों से जोड़ता है। जब अगली बार आप किसी प्राकृतिक, देसी, और पोषक चीज़ की तलाश में हों – तो महुआ को याद कीजिए। इसे अपने जीवन में लाइए, इसके स्वाद को महसूस कीजिए, और इसकी मिठास को दूसरों से साझा कीजिए। महुआः अपनाइये, खाइये और खिलाइये!

दिल्ली विश्वविद्यालय की शताब्दी और आर्ट निर्भर भारत' की अनूठी पहल

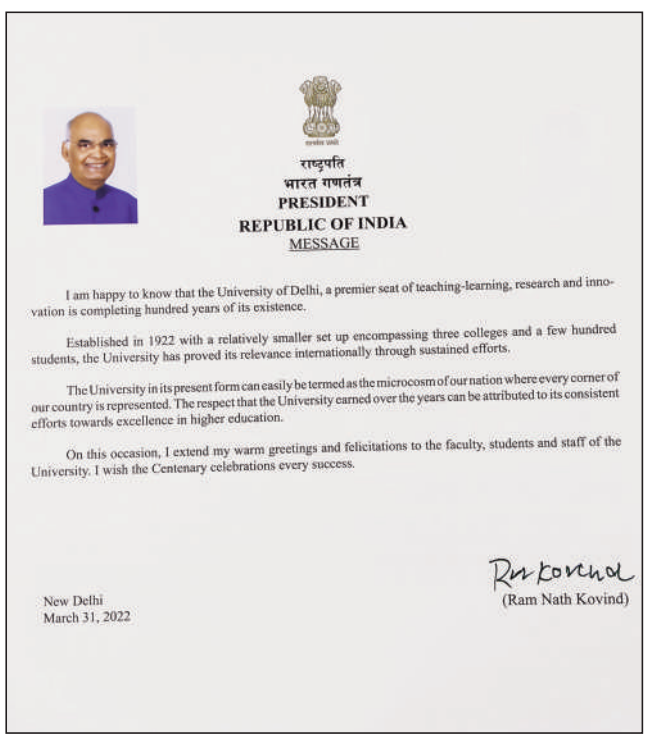

राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA
MESSAGE

I am happy to know that the University of Delhi, a premier seat of teaching-learning, research and innovation is completing hundred years of its existence.

Established in 1922 with a relatively smaller set up encompassing three colleges and a few hundred students, the University has proved its relevance internationally through sustained efforts.

The University in its present form can easily be termed as the microcosm of our nation where every corner of our country is represented. The respect that the University earned over the years can be attributed to its consistent efforts towards excellence in higher education.

On this occasion, I extend my warm greetings and felicitations to the faculty, students and staff of the University. I wish the Centenary celebrations every success.

New Delhi
March 31, 2022

(Ram Nath Kovind)

भारत के प्रधान मंत्री
PRIME MINISTER OF INDIA
संदेश

दिल्ली विश्वविद्यालय की स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने की हार्दिक बधाई। इस स्वर्णिम यात्रा के सहभागी रहे सभी शिक्षकों, कर्मियों एवं विद्यार्थियों को शताब्दी वर्ष समारोह की अनेक शुभकामनाएं।

दिल्ली विश्वविद्यालय का एक शताब्दी का इतिहास गौरवपूर्ण उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा है। विश्वविद्यालय ने विभिन्न कालखण्डों में आवश्यकता और परिस्थिति के अनुरूप खुद को ढालकर राष्ट्र निर्माण में अहम् योगदान दिया है।

गुणवत्तायुक्त और समयानुकूल शिक्षा सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। भविश्योन्मुखी सोच के साथ बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाना, उद्यमिता व नवाचार को बढ़ावा देना और हमारी युवाशक्ति के सामर्थ्य को देश की आकांक्षाओं और लक्ष्यों से जोड़ना, ये गत 8 वर्षों में शिक्षा क्षेत्र में किए गए सुधारों के मूल में है।

देश की प्रतिभाशाली युवाशक्ति पर एक भव्य और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान देने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। मुझे उम्मीद है कि दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी अपने प्रयासों को राष्ट्रीय संकल्पों के साथ जोड़कर देश के विकास में अहम् भूमिका निभाएंगे।

एक बार फिर से विश्वविद्यालय प्रबंधन, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को शताब्दी वर्ष समारोह और भविष्य के प्रयासों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

नई दिल्ली
वैषाख 05, शक सम्वत् 1944
25 अप्रैल, 2022

(नरेन्द्र मोदी)

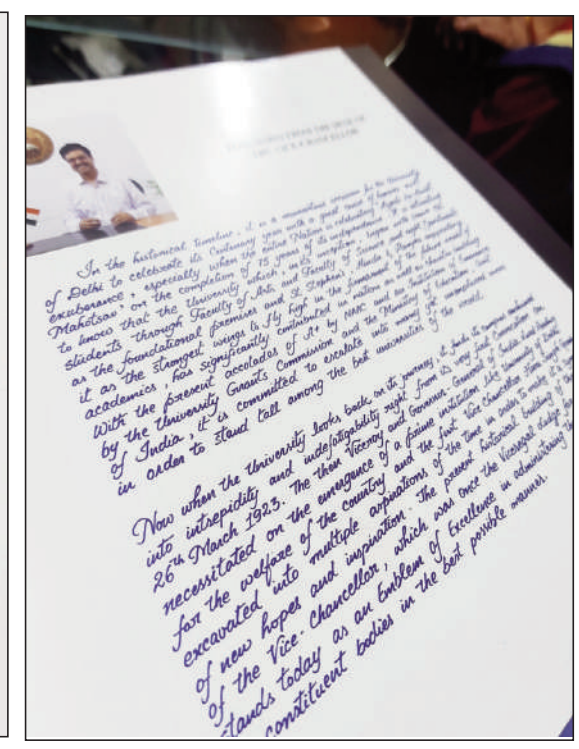

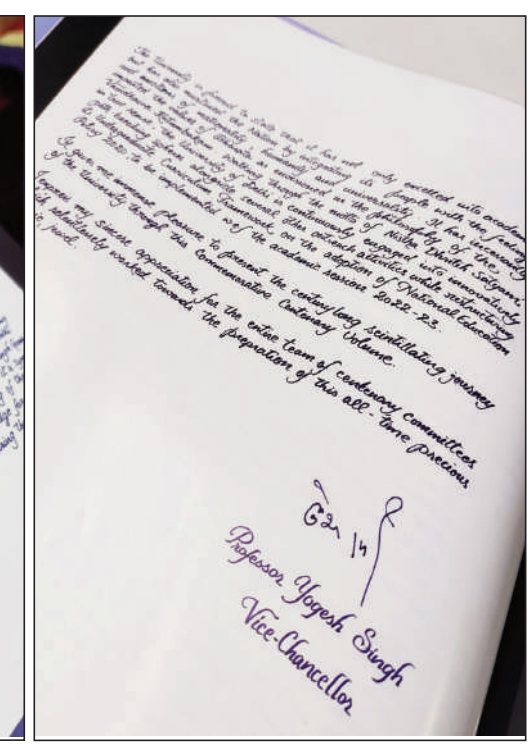

डॉ. अंकुर शरण द्वारा एक विशेष पहल

दिल्ली विश्वविद्यालय ने हाल ही में अपने सौ वर्षों की गौरवशाली यात्रा को अत्यंत भव्यता के साथ मनाया। यह अवसर न केवल शिक्षाविदों और शोध के क्षेत्र में विश्वविद्यालय की उपलब्धियों का प्रतीक था, बल्कि भारतीय संस्कृति, कला और साहित्य की विरासत को भी उजागर करने का माध्यम बना। इस ऐतिहासिक क्षण पर एक विशेष कॉफी टेबल बुक का विमोचन किया गया, जिसकी डिजाइनिंग प्रतिष्ठित डिज़ाइनर श्री अरुण जोशी द्वारा की गई थी। इस बुक में विश्वविद्यालय की स्मृतियों, संस्थानों, छात्रों और शिक्षकों की यात्रा को अत्यंत सुंदरता और गहराई से दर्शाया गया है।

इस शुभ अवसर पर 'आर्ट निर्भर भारत' की ओर से डॉ. अंकुर शरण द्वारा हस्तलेखन की कला को पुनर्जीवित करने और समाज में इसकी महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु एक अनूठी पहल की गई। डॉ. शरण, जो एक वरिष्ठ लॉजिस्टिक्स विशेषज्ञ होने के साथ-साथ लेखन और सामाजिक सरोकारों से भी गहराई से जुड़े हुए हैं, ने इस अवसर पर विद्यार्थियों और शिक्षकों के साथ ₹हस्तलेखन संवाद₹ किया।

हस्तलेखन की महत्ता पर विचार

डॉ. शरण ने कहा कि आज के डिजिटल युग में जहां अधिकांश संवाद टाइपिंग और टेक्स्टिंग पर आधारित हो गया है, वहीं हस्तलेखन न केवल विचारों की गहराई को व्यक्त करता है, बल्कि यह हमारी पहचान, स्मृति और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है। उन्होंने यह भी बताया कि हाथ से लिखा गया एक पत्र, एक कविता या एक डायरी पन्ना भावनाओं को जिस तरह संप्रेषित करता है, वह डिजिटल माध्यम से संभव नहीं।

श्री अरुण जोशी के साथ संवाद

कॉफी टेबल बुक के डिज़ाइनर श्री अरुण जोशी ने इस अवसर पर अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि ₹यह पुस्तक केवल एक प्रकाशन नहीं है, यह एक युग का दस्तावेज़ है। इसमें उन सभी रंगों को समेटा गया है जो दिल्ली विश्वविद्यालय की आत्मा हैं।₹ उन्होंने हस्तलेखन को डिजाइन के दृष्टिकोण से भी एक जीवंत तत्व बताया और कहा कि हस्तलिखित नोट्स और रेखाचित्र आज भी कला की सबसे प्रभावशाली विधाओं में से एक हैं।

'आर्ट निर्भर भारत' की भूमिका

'आर्ट निर्भर भारत' का उद्देश्य है कि युवाओं को पुनः कागज, कलम और स्याही से जोड़ा जाए। इस पहल के तहत स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में हस्तलेखन कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है, जिससे छात्रों में लेखन की रुचि, आत्म-अभिव्यक्ति की शक्ति और मानसिक शांति का विकास हो सके।

डॉ. अंकुर शरण ने इस पहल के माध्यम से सभी विद्यार्थियों और नागरिकों से अनुरोध किया कि वे प्रतिदिन कम से कम कुछ पंक्तियाँ हाथ से लिखें, जिससे लेखन कला को एक नया जीवन मिल सके। उन्होंने यह भी प्रस्तावित किया कि हर शिक्षा संस्थान में हस्तलेखन दिवस मनाया जाना चाहिए।

दिल्ली विश्वविद्यालय की शताब्दी न केवल शिक्षा की विजयगाथा है, बल्कि यह संस्कृति, परंपरा और रचनात्मकता की भी जयंती है। 'आर्ट निर्भर भारत' और डॉ. अंकुर शरण की यह पहल हमें हमारी जड़ों से जोड़ती है और आने वाली पीढ़ियों को यह सिखाती है कि हाथ की लिखावट सिर्फ शब्द नहीं, बल्कि आत्मा की आवाज़ होती है।

नैशनल हेराल्ड में केवल भ्रष्टाचार ही नहीं हुआ आमानत में खयानत का भी मामला है : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की नेशनल हेराल्ड चार्जशीट पर कांग्रेस का आज दिल्ली एवं अन्य शहरों में प्रदर्शन कुछ ऐसा है, मानो चोर मचाये शोर। कांग्रेस नेताओं ने पहले चोरी की पर जब फंस गये तो बजाए कानूनी लड़ाई इमानदारी से लड़ने के सम्बंधित मुकदमे का राजनीतिकरण करने की कोशिश कर रहे हैं।

नैशनल हेराल्ड मामले की चार्जशीट एक व्यक्ति द्वारा कांग्रेस के ही सत्ताकाल में दायर यचिका का पटाक्षेप है कोई प्रतिशोध की कार्यवाई नहीं है। यदि यह मामला कमजोर रहा होता, झूठा होता या प्रतिशोध की कार्यवाई होता तो 2012 मे केस दायर होने से 2014 के मध्य तक देश में गांधी परिवार का राज था इन्होने तब ही केस खत्म करवा लिया होता।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की कांग्रेस के प्रथम परिवार की प्रतिनिधि सोनिया गांधी एवं राहुल गांधी जिस कानूनी शिकंजे में घिरे हैं वह उनके खुद के लालच का परिणाम है।

गांधी परिवारजन और उनके सहयोगी आज अगर जमानत पर हैं और शीघ्र उन्हें पी.एम.एल.ए. के गम्भीर मामले में भी जमानत लेनी पड़ सकती है तो यह भाजपा सरकार के किसी दबाव का परिणाम नहीं, 13 साल से न्यायलय में चल रहे मामले की जांच का परिणाम है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की यह दुखद है की कांग्रेस का प्रथम परिवार आज अपने भ्रष्टाचार को राजनीतिक रंग देने के लिए कांग्रेस कार्यकर्ताओं को आगे धकेल रहा है जबकि ऐसे ही हजारों कार्यकर्ताओं के द्वारा दी पूंजी से नैशनल हेराल्ड की वो सम्पति बनी थी जिसे गांधी परिवार ने निजी कम्पनी बना कर लूटा है। सच कहें तो नैशनल हेराल्ड मामले में केवल भ्रष्टाचार ही नही हुआ आमानत में खयानत का भी मामला है क्योंकि गांधी परिवार ने हजारों कांग्रेस कार्यकर्ताओं के अंशदान से बनी नैशनल हेराल्ड सम्पति को लूटा है।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की सरकार ने दी कामगारों को बड़ी सौगात

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व में दिल्ली सरकार ने एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए राजधानी दिल्ली में कार्यरत सभी श्रेणियों के 40 लाख से अधिक श्रमिकों की न्यूनतम मजदूरी में बढ़ोतरी की है। बढ़ी हुई नई दरें 1 अप्रैल, 2025 से लागू होगी। यह घोषणा आज दिल्ली के श्रम मंत्री श्री कपिल मिश्रा ने एक संवाददाता सम्मेलन के दौरान की।

इस मौके पर श्रम मंत्री कपिल मिश्रा ने कहा, "दिल्ली सरकार मजदूरों के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। हमारी प्राथमिकता रही है कि जो मेहनत करता है, उसे उसका पूरा मेहनताना मिले। इस बढ़ोतरी से 40 लाख से अधिक दिल्ली में रह रहे कामगारों को सीधा लाभ मिलेगा और उनकी जीवन गुणवत्ता में सुधार आएगा। लम्बे समय से तमाम मजदूर यूनियन की मांगों का संज्ञान लेते हुए हमारी सरकार का ये ऐतिहासिक निर्णय है, जिससे निजी और सरकारी क्षेत्र में कार्यरत सभी श्रेणी के कामगारों को आर्थिक राहत मिलेगी। इस फैसले के साथ ही दिल्ली देश में सबसे ज्यादा न्यूनतम मजदूरी देने वाले राज्यों में से एक बन गया है।"

नई मजदूरी दरें एक अप्रैल, 2025 से प्रभावी होंगी। अब अकुशल श्रमिकों की मासिक मजदूरी ₹18,066 से बढाकर ₹18,456 कर दी गई है। इस वृद्धि से वो श्रमिक लाभान्वित होंगे जो निर्माण कार्य, फैक्ट्री, सफाई सेवाएं, दुकानों, अस्पतालों तथा अन्य असंगठित क्षेत्रों जैसे बुनियादी कार्यों में लगे होते हैं । ये अतिरिक्त राशि उनके दैनिक खर्चों में राहत प्रदान करेगी।

वहीँ सेमी-स्किल्ड श्रमिकों की मासिक मजदूरी ₹19,929 से बढाकर ₹20,371 कर दी गई है। इस वर्ग में श्रमिकों में वो लोग शामिल होते हैं जो किसी विशिष्ट कार्य में थोड़ी तकनीकी जानकारी रखते है। इस न्यूनतम मजदूरी वृद्धि से उनकी मेहनत को उचित सम्मान मिलेगा।

इसके साथ ही स्किल्ड श्रमिकों की मजदूरी ₹21,917 से बढाकर ₹22,411 कर दी गई है। इस वर्ग में कुशल कारीगर, तकनीकी दक्ष, इलेक्ट्रिशियन जैसे लोग आते हैं। इनकी मजदूरी में वृद्धि से उनकी दक्षता और अनुभव का उचित सम्मान बढेगा।

वहीँ गैर मैट्रिकुलेट श्रमिकों की मजदूरी ₹19,929 से बढाकर ₹20,371 कर दी गई है। 'मैट्रिकुलेट लेकिन स्नातक नहीं' का न्यूनतम वेतनमान ₹21, 917 से ₹22, 411 एवं 'स्नातक और उससे ऊपर' श्रेणी के श्रमिकों का ₹23,836 से बढाकर ₹24,356 कर दिया गया।

कपिल मिश्रा ने आगे कहा, "पिछली सरकार श्रमिकों की न्यूनतम मजदूरी की वृद्धि का निर्णय नहीं ले पा रही थी लेकिन हमारी सरकार ने इस मुद्दे पर तुरंत निर्णय लिया है। यह वृद्धि श्रमिकों की मेहनत और उनके योगदान को मान्यता देने की दिशा में सकारात्मक कदम है जो उन्हें आत्मनिर्भर बनने और उनकी सामाजिक स्थिति सुधारने में सहायक सिद्ध होगी। यह दरें निजी और सरकारी दोनों क्षेत्रों में लागू होंगी। सभी नियोजकों को यह मजदूरी देना अनिवार्य होगा। अनुपालन नहीं करने की स्थिति में सख्त कार्रवाई की जाएगी।

डॉ.बी.एल.गौड़ फाउंडेशन ने किया कर्मयोगी डॉ. इंद्रजीत शर्मा का अभिनंदन

मुख्य संवाददाता

नईदिल्ली :देश के प्रतिष्ठित सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थान 'कांस्टीट्यूशन क्लब' के डिप्टी चेयरमैन सभागार में कल शाम सुप्रसिद्ध सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक ट्रस्ट 'डॉ.बी.एल.गौड़ फाउंडेशन' द्वारा अमेरिका के एक बड़े और ईमानदार उद्योगपति प्रवासी भारतीय डॉ. इंद्रजीत शर्मा का भव्य अभिनंदन किया गया।

इस गरिमामय समारोह की अध्यक्षता फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. बी.एल.गौड़ ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध लेखिका-शिक्षाविद् एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के लक्ष्मीबाई महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. डॉ. प्रत्यूष वत्सला उपस्थित थीं।

समारोह के विशिष्ट अतिथि थे इंडोनेशिया से पधारे धर्मगुरु डॉ. ई.माधे।

सुप्रसिद्ध कवि एवं शिक्षाविद् डॉ. विवेक गौतम के संयोजन-संचालन में संपन्न इस समारोह का शुभारंभ डॉ.बी.एल.गौड़ के तीन लोकप्रिय साहित्यिक गीतों की मधुर प्रस्तुति से हुआ। इन प्रभावशाली गीतों को अपनी आवाज़ और संगीत से सजाया सुप्रसिद्ध संगीतकार डॉ. विजय श्रीवास्तव ने। कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, अमेरिका के न्यासी डॉ. इंद्रजीत शर्मा को कर्मयोगी की उपाधि से अलंकृत करते हुए उन्हें प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिन्ह, शॉल और पुष्पहार प्रदान किये गये।

कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए मुख्य अतिथि प्रो. डॉ. प्रत्यूष वत्सला ने डॉ.इंद्रजीत शर्मा को उनकी उपलब्धियों और सेवाओं के लिए एक अनुकरणीय व्यक्तित्व बताया।

विशिष्ट अतिथि डॉ. ई. माधे ने अपने उद्बोधन में इंद्रजीत शर्मा को एक सहज-सरल और निश्छल मन वाला मानवता का पुजारी बताया।

इसी क्रम में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए वरिष्ठ साहित्यकार एवं कवि डॉ.बी.एल. गौड़ ने कहा कि कर्मयोगी डॉ.इंद्रजीत शर्मा दूसरों के दुःख को अपना मानकर लोगों की भलाई, सहायता और सम्मान के लिए सदैव तन-मन-धन से तत्पर रहते हैं।

इस अवसर पर डॉ.इंद्रजीत शर्मा ने सभागार में उपस्थित सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें अपने पिता और परिवार से जो संस्कार मिले वही उनकी शक्ति और पूँजी हैं।

मैं उन्हीं संस्कारों और मूल्यों को जीवन में उतार रहा हूँ और शायद दुनिया इसी को सम्मान देते हुए मुझे एक अलग पहचान दे रही है।

अभिनंदन समारोह के दूसरे चरण में अनेक प्रतिष्ठित कवियों द्वारा काव्य-पाठ किया जिनमें वरिष्ठ कवि शैलेंद्र शैल, डॉ .प्रेम भारद्वाज ज्ञानभिक्षु, रमा नीलदीप्ति, सुशील भारती, अरविंद चतुर्वेदी, चंद्रशेखर आश्री, मीरा शलभ, कमलेश भट्ट कमल, विनय संकोची, विज्ञान व्रत, संगीता शर्मा, अनिल गौड़, राम अवतार बैरवा, डॉ.विवेक गौतम और डॉ.बी.एल.गौड़ आदि प्रमुख थे।

इस अवसर पर समारोह में अनेक गणमान्य व्यक्तित्व उपस्थित थे जिनमें शारदा गौड़, दैनिक समाचार पत्र 'नेशनल एक्सप्रेस' के संपादक विपिन गुप्ता, लेखक राजन पाराशर, अशोक खुराना, विनोद शर्मा, दंत रोग विशेषज्ञ डॉ.अजय शर्मा, डॉ.सीमा शर्मा, लेखक डॉ. हरि सिंह पाल, प्रदीप कुमार, डॉ .मीना शर्मा, मीनाक्षी, अरशद अली फ़हमी, डॉ.अनीता श्रीवास्तव, पत्रकार शीबा फ़हमी तथा छायाकार प्रेम मिश्र प्रमुख थे।

सौंदर्य और तकनीक का अनोखा संगम

मुख्य संवाददाता

कंज्यूमर ड्यूरेबल्स सेगमेंट में अग्रणी क्रॉम्पटन ग्रीव्स कंज्यूमर इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड ने अपना नया प्रीमियन अवांसर स्वर्ल सीलिंग फैन पेश किया है। यह प्रीमियम इंडक्शन फैन न केवल शानदार डिज़ाइन बल्कि शक्तिशाली तकनीक और उच्च प्रदर्शन के साथ आता है, जो आपके रहने की जगह को एक नया आयाम देता है।

बैलेरीना की सुंदर घुमावदार मुद्रा से प्रेरित, अवांसर स्वर्ल कालातीत सुंदरता और गतिशीलता का प्रतीक है। इसकी अनूठी डिज़ाइन इसे किसी भी घर के लिए एक उल्लेखनीय हिस्सा बनाती है जिससे घर न केवल अधिक आरामदायक बल्कि अधिक स्टाइलिश भी बन जाता है।

चाहे आप उमस से राहत चाहते हों या चिलचिलाती गर्मी से तुरंत राहत पाना चाहते हों, क्रॉम्पटन का प्रीमियन अवांसर स्वर्ल सभी के लिए आदर्श समाधान है।

चूंकि ऊर्जा दक्षता और घरेलू सौंदर्य का महत्व लगातार बढ़ता जा रहा है, इसलिए उपभोक्ता ऐसे सीलिंग फैन चाहते हैं जो न केवल प्रभावी शीतलता प्रदान करें, बल्कि बिजली की लागत को कम करते हुए उनके आंतरिक साज-सज्जा के साथ सहजता से मेल खाएं। मानसून के दौरान बढ़ती नमी के साथ, पंखे घरों के लिए अनिवार्य हो गए हैं।

क्रॉम्पटन के प्रीमियन अवांसर स्वर्ल सीलिंग फैन को इन आवश्यकताओं को को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है, जो बेहतरीन एयर डिलीवरी और एंटी-डस्ट फिनिश प्रदान करता है, साथ ही ये परिष्कृत डिज़ाइन के साथ आता है है जो विभिन्न प्रकार के इंटीरियर शैलियों के अनुरूप है। इसकी 3-स्टार ऊर्जा दक्षता इसे उन ग्राहकों के लिए बेहतरीन विकल्प बनाती है जो आराम और किफ़ायत दोनों को प्राथमिकता देते हैं। क्रॉम्पटन अवांसर स्वर्ल के साथ अपने रहने की जगह को बदल दें, जो सौंदर्य और तकनीक के बेहतरीन संयोजन के रूप में डिज़ाइन किया गया है। जो किसी भी सजावट को बढ़ाता है। यह फैन अन्य उत्पादों से अलग है क्योंकि ये निम्नलिखित बेहतरीन विशेषताओं के साथ आता है:

अतुलनीय एयर डिलीवरी: यह पंखा 225 CMM की उच्च एयर डिलीवरी प्रदान करता है, जिससे कठिन परिस्थितियों में भी सर्वोत्तम शीतलता बनी रहती है।

पुनः परिभाषित ऊर्जा दक्षता: BEE 3-स्टार रेटिंग के साथ यह पंखा ऊर्जा की बचत करता है, जिससे बिजली बिल कम होता है और पर्यावरण के प्रति जागरूक ग्राहकों के लिए एक स्थायी विकल्प बनता है।

ड्यूराटेक टेक्नोलॉजी: अवांसर स्वर्ल में क्रॉम्पटन की ड्यूराटेक टेक्नोलॉजी का उपयोग किया गया है, जिसमें उच्च गुणवत्ता वाले मोटर घटक होते हैं जो इसे लंबी उम्र और बेहतरीन प्रदर्शन प्रदान करते हैं।

5 साल की वारंटी: यह उत्कृष्ट प्रोडक्ट 5 साल की ड्यूराटेक वारंटी के साथ आता है, जो क्रॉम्पटन की उपभोक्ता संतुष्टि के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

कंपनी के नए प्रोडक्ट लॉन्च पर बोलते हुए, क्रॉम्पटन ग्रीव्स कंज्यूमर इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड के बिज़नेस हेड - होम इलेक्ट्रिकल्स और पंप्स, श्री रजत चोपड़ा ने कहा, "क्रॉम्पटन में, जो कंज़्यूमर ड्यूरेबल्स क्षेत्र क्षेत्र में नवाचार और विश्वसनीयता का पर्याय है, हम ऐसे उत्पाद बनाने का प्रयास करते हैं जो उत्कृष्ट इंजीनियरिंग और डिज़ाइन के माध्यम से रोजमर्रा की जिंदगी को बेहतर बनाएं। अवांसर स्वर्ल सीलिंग फैन इसी प्रतिबद्धता का प्रमाण है, जो आधुनिक तकनीक को सुरुचिपूर्ण डिज़ाइन के साथ सहजता से जोड़ता है। यह प्रीमियम फैन किसी भी रहने की जगह के सौंदर्य को बढ़ाते हुए असाधारण प्रदर्शन के लिए तैयार किया गया है। हमने इ पंखे को कार्यक्षमता से आगे ले जाकर एक ऐसा प्रोडक्ट बनाया है जो ऊर्जा दक्षता के साथ-साथ आपके घर में विलासिता और स्टाइल भी लाता है।"

क्रॉम्पटन अवांसर स्वर्ल सीलिंग फैन 6 आकर्षक रंगों में उपलब्ध है – कॉन्क क्रीम, आइस कॉफी, शैडो ग्रे, डार्क सैफायर, अमेरिकानो ब्राउन और कोकोआ गोल्ड। इस प्रोडक्ट की अधिकतम खुदरा कीमत (MRP) ₹7,499 रखी गई है और इसे सभी क्रॉम्पटन अधिकृत रिटेल आउटलेट्स और प्रमुख ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर खरीदा जा सकता है।

दिल्ली में नालों की होगी नियमित सफाई, PWD इंजीनियर करेंगे ये काम

दिल्ली में मानसून के दौरान जलभराव को रोकने के लिए पीडब्ल्यूडी ने नालों की सफाई की निगरानी के आदेश जारी किए हैं। पीडब्ल्यूडी के अभियंता नियमित रूप से नालों की सफाई का निरीक्षण करेंगे गाद हटाएंगे और एसओपी का पालन सुनिश्चित करेंगे। अतिक्रमण हटाने और वीडियोग्राफी करने के भी निर्देश दिए गए हैं। विभाग के प्रधान सचिव ए अंबरसू के निर्देश पर यह आदेश जारी किया गया है।

नई दिल्ली। मानसून के दौरान जलभराव रोकने के लिए भाजपा सरकार की सख्ती से अफसरों में बढ़ रही टेंशन के बीच लोक निर्माण विभाग ने नालों की सफाई की निगरानी के आदेश जारी किए हैं। विभाग की ओर से जारी आदेश में कहा गया है कि नालों की सफाई की नियमित निगरानी की जाए।

इंजीनियर करेंगे नियमित निरीक्षण

आदेश में साफ कहा गया है कि विभाग के अधीक्षण अभियंता, नालों की सफाई के कार्य से जुड़े सभी अधिशासी अभियंता, सहायक अभियंता और कनिष्ठ अभियंता मुख्य रूप से गाद हटाने और इससे जुड़े कार्यों का निरीक्षण करेंगे। विभाग के प्रधान सचिव ए अंबरसू के निर्देश पर यह आदेश जारी किया गया है। विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि इसके साथ ही नालों की सफाई के लिए जारी मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) का पूरा पालन किया जाएगा। नालों की सफाई को लेकर आरोप-प्रत्यारोप लगने के बाद पिछले साल जुलाई में लोक निर्माण विभाग के मुख्य अभियंता ने नालों की सफाई को लेकर एसओपी जारी की थी, जिसमें अन्य बातों के अलावा नालों की सफाई की अनिवार्य वीडियोग्राफी भी शामिल है। एसओपी के अनुसार नालों पर अतिक्रमण को पीडब्ल्यूडी के अधिकारी खुद या दिल्ली पुलिस, जिलाधिकारी, एमसीडी आदि की मदद से हटाएंगे। किसी भी हालत में गाद हटाने से परहेज नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि इससे जलभराव होता है। एसओपी में कहा गया है कि सभी नालों की हर हाल में पूरी तरह सफाई होनी चाहिए। अगर नालों के कुछ हिस्सों पर अतिक्रमण है तो उसे दिल्ली पुलिस और एमसीडी के साथ-साथ अन्य एजेंसियों की मदद से हटाया जाना चाहिए। सिर्फ एक बार गाद निकालना काफी नहीं है। नाले हर समय साफ होने चाहिए। निकाली गई गाद दो घंटे के अंदर हटाई जानी चाहिए। गाद हटाने के काम को सत्यापित करने के लिए एक स्वतंत्र निगरानी टीम बनाई जानी चाहिए और मुख्यालय को रिपोर्ट देनी चाहिए।

लगाए जाएंगे सीसीटीवी कैमरा

सभी जूनियर और असिस्टेंट इंजीनियर (एई, जेई) और एग्जीक्यूटिव इंजीनियर (इलेक्ट्रिकल) को यह सुनिश्चित करने को कहा गया है कि किसी भी जगह पर खुले या असुरक्षित तार न हों। जिन इलाकों में चोरी का खतरा ज्यादा है, वहां सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएं। इस संबंध में कमी को दूर करने के लिए की गई कार्रवाई की तस्वीरें और वीडियो रिकॉर्ड नियमित रूप से ई-मॉनीटरिंग सिस्टम पर अपलोड किए जाएं।

विदेश में इस भारतीय उत्पाद पर नहीं पड़ेगा ट्रंप की टैरिफ का असर, मंत्री गिरिराज सिंह ने बता दी बड़ी वजह

केंद्रीय कपड़ा मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि हस्तशिल्प क्षेत्र छोटे कारीगरों को रोजगार देता है और देश को आर्थिक व सामाजिक रूप से मजबूत करता है। उन्होंने बताया कि 45 हजार करोड़ रुपये के हस्तशिल्प उत्पादों का निर्यात होता है। इंडिया हस्तशिल्प एवं उपहार मेले में तीन हजार प्रदर्शक और पांच हजार खरीदार आए हैं जहां आठ हजार करोड़ रुपये का कारोबार होने की उम्मीद है।

नोएडा। हस्तशिल्प बहुत बड़ा बाजार है। घरेलू उपहार क्षेत्र की बात करें तो इसका बाजार 6.42 लाख करोड़ रुपये का है। एक्सपो मार्ट में चार दिवसीय हस्तशिल्प एवं उपहार मेला आयोजित किया जा रहा है। इन चार दिनों में आठ हजार करोड़ का कारोबार होगा। यह क्षेत्र छोटे कारीगरों को रोजगार देता है।

यह देश को आर्थिक और सामाजिक रूप से मजबूत कर रहा है। यह बातें केंद्रीय कपड़ा मंत्री गिरिराज सिंह ने इंडिया एक्सपो मार्च में चल रहे चार दिवसीय इंडिया हस्तशिल्प एवं उपहार मेले के उद्घाटन के अवसर पर कहीं। इस दौरान कपड़ा सचिव पवित्रा मार्गेरिटा, विकास आयुक्त अमृत राज आदि मौजूद रहे।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हस्तशिल्प क्षेत्र में उपहार एक ऐसा उत्पाद है जिसे लोग कई अवसरों पर देते हैं। लोग त्योहारों, शादी समारोहों, जन्मदिन और कई खास दिनों पर एक-दूसरे को उपहार देते हैं। ₹मैं बताना चाहूंगा कि भगवान गणेश की मूर्ति बनाने वालों का 100 करोड़ रुपये का बाजार है।₹

कई छोटे-छोटे उत्पाद हैं जिनकी काफी मांग है। सरकार ऐसे छोटे-छोटे उत्पादों को बढ़ावा दे रही है, उनका निर्यात किया जा रहा है। 45 हजार करोड़ रुपये के हस्तशिल्प निर्यात किए जाते हैं।

ट्रंप टैरिफ का अधिक असर नहीं

ट्रंप टैरिफ के सवाल पर केंद्रीय मंत्री ने कहा कि पहले दिन वे कारपेट फेस्ट में गए थे। वहां उनकी मुलाकात एक अमेरिकी कारोबारी से हुई, जिन्होंने कहा कि इस टैरिफ का ज्यादा असर नहीं पड़ेगा, विदेशों में खासकर अमेरिका में भारतीय हस्तशिल्प की मांग बढ़ी है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि दरअसल ये उत्पाद हाथ से बनते हैं, इसमें कला है, यहां के कारीगर इसमें माहिर हैं। कुछ क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा है। भारत दूसरों की भूमिका पर निर्भर नहीं है। इस बार मेले में तीन हजार प्रदर्शक आए हैं। दुनियाभर से पांच हजार खरीदार आ रहे हैं। पहले दिन ही दो हजार खरीदार आ गए हैं।

नया वक्फ कानून गरीबों के लिए

वक्फ संशोधन विधेयक के सवाल पर केंद्रीय मंत्री ने कहा कि नया वक्फ कानून गरीबों के लिए है। इसमें न तो किसी की मस्जिद छीनी जा रही है और न ही मदरसे। यह अफवाह फैलाने वाले मुर्शिदाबाद बंगाल में हिंसा भड़का रहे हैं। कांग्रेस के राहुल गांधी और आरजेडी के तेजस्वी यादव बंगाल में हो रही हिंसा के खिलाफ कुछ क्यों नहीं बोल रहे हैं। राहुल गांधी और सोनिया गांधी के खिलाफ ईडी की कार्रवाई पर उन्होंने कहा कि कानून अपना काम कर रहा है।

150 करोड़ की जमीन पर गरजा बुलडोजर, चंद मिनटों में ध्वस्त की अवैध प्लॉटिंग; भूमाफिया में मचा हड़कंप

ग्रेटर नोएडा के दादरी तहसील क्षेत्र में तहसील प्रशासन ने अवैध कब्जा धारकों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए लगभग 150 करोड़ रुपये की सरकारी भूमि को कब्जा मुक्त कराया। उपजिलाधिकारी अनुज नेहरा के नेतृत्व में राजस्व टीम ने हैबतपुर गांव में हिंडन नदी के डूब क्षेत्र में हो रही अवैध प्लॉटिंग को ध्वस्त किया। इस कार्रवाई से भूमाफिया में हड़कंप मच गया है।

दादरी (ग्रेटर नोएडा)। ग्रेटर नोएडा में दादरी तहसील क्षेत्र में अवैध कब्जा धारकों के खिलाफ तहसील प्रशासन का पीला पंजा (Bulldozer Action) चला। इस दौरान टीम ने करोड़ों रुपये की सैकड़ों बीघा जमीन कब्जा मुक्त कराई है। प्रशासन की कार्रवाई से भूमाफिया में हलचल है। दादरी उपजिलाधिकारी अनुज नेहरा ने बताया कि बुधवार को उनके नेतृत्व में तहसीलदार दादरी ओम प्रकाश राजस्व टीम, नोएडा प्राधिकरण व पुलिस विभाग द्वारा संयुक्त रूप से ग्राम हैबतपुर तहसील दादरी के खसरा नंबर हिंडन नदी के डूब क्षेत्र में हो रहे अवैध प्लॉटिंग व कॉलोनी को लेकर कार्रवाई की गई। बताया गया कि इस दौरान लगभग 120 बीघा जमीन, जिसकी कीमत करीब 150 करोड़ रुपये को मुक्त कराया है।

कांग्रेस ने बाबा साहेब को चुनाव हराया, सपा सरकार में खंडित की गईं मूर्तियां; गाजियाबाद में बोले ब्रजेश पाठक

गाजियाबाद में आंबेडकर जयंती पर उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कांग्रेस सपा और बसपा पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने बाबा साहेब को चुनाव हराया और सपा ने उनकी मूर्तियों को खंडित किया। पाठक ने मोदी सरकार द्वारा किए गए विकास कार्यों की सराहना की और शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार का वादा किया।

गाजियाबाद। देश में पहली बार हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने बाबा साहेब को चुनाव हराने का कार्य किया। बाबा साहेब ने अपनी किताब में लिखा है कि कांग्रेस धोखेबाज पार्टी है, उसके चवन्नी के सदस्य भी मेरे अनुयायियों नहीं बनना। उत्तर प्रदेश में सत्ता में सपा के आने पर बाबा साहेब और मायावती की मूर्तियों को खंडित किया गया। मायावती को मारने की कोशिश की गई। यह बातें मंगलवार को नेहरू नगर के पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में बाबा साहेब डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर की जन्मतिथि के उपलक्ष्य में आयोजित सम्मान समारोह में उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कही। ऑडिटोरियम में आने से पहले उपमुख्यमंत्री नवयुग मार्केट स्थित आंबेडकर पार्क गए। वहां बाबा साहेब की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और सफाई मित्रों को सम्मानित किया।

नवयुग मार्केट स्थित पार्क में डॉ. भीमराव आंबेडकर की मूर्ति को नमन करते यूपी के डिप्टी सीएम बृजेश पाठक। जागरण

जिन्ना ने योगेंद्र नाथ मंडल को किया गुमराहः ब्रजेश पाठक

उन्होंने कहा कि देश के विभाजन के वक्त दो दलित नेता हुआ करते थे, एक बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर और दूसरे योगेंद्र नाथ मंडल थे। जिन्ना ने योगेंद्र नाथ मंडल को गुमराह किया और बंटवारे के बाद वे पाकिस्तान जाकर वहां पहले कानून मंत्री बने। उनके कहने पर लाखों दलित लोग भी वहां पर रह गए थे। जो बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार हो रहा है, वह योगेंद्र नाथ मंडल की देन है।

बाबा साहेब भारत में रहे और आजाद भारत के संविधान निर्माता बने। कांग्रेस 70 साल में देश का विकास नहीं कर सकी। डा. आंबेडकर के विचारों पर चलकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विकास कार्य किए। गरीबों के लिए पक्के मकान, शौचालय बनवाए। उनके घर खाना बनाने के लिए सिलेंडर, पीने के लिए पानी पहुंचाया।

पहले बिजली इटावा, सैफई या फिर रामपुर के बड़े मियां के घर जाती थी, अब प्रत्येक घर में बिजली का कनेक्शन है। सपा सरकार में 1.12 करोड़ बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ते थे, अब 1.92 करोड बच्चे शिक्षा ले रहे हैं। 2017 से पहले प्रदेश में 12 मेडिकल कॉलेज थे, अब 80 मेडिकल कॉलेज हैं।

मुझे चिट्ठी लिखों, मैं कमी को दूर कराऊंगा- डिप्टी सीएम

उन्होंने कहा कि यदि अस्पताल में इलाज में कमी हो तो मुझे चिट्ठी लिखों, मैं कमी को दूर कराऊंगा। कानून व्यवस्था के मुद्दे पर कहा कि पहले प्रदेश में एक गाड़ी में दस बंदूकें लेकर बदमाश चलते थे, अब बंदूक को हाथ लगाने को बदमाश तैयार नहीं हैं, उनकी लुप - लुप हो रही है।

जनता की गाढ़ी कमाई से पूर्व की प्रदेश सरकार ने अपने गांव में हवाई अड्डा बना लिया, मुंबई के फिल्म स्टार वहां उतारे। सपा गुंडों की और नाच देखने वालों की पार्टी है।

प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री सुनील शर्मा ने कहा कि कुछ लोगों ने वोट के लिए आंबेडकर की छवि को खराब किया, उनको एक जाति का नेता बना दिया। वो प्रखर राष्ट्रवादी नेता थे। इस दौरान सांसद अतुल गर्ग, क्षेत्रीय अध्यक्ष सतेंद्र सिसोदिया, महापौर सुनीता दयाल, विधायक अजितपाल त्यागी, संजीव शर्मा, महानगर अध्यक्ष मयंक गोयल, भाजपा नेता अनिल अग्रवाल, रमेश चंद तोमर ,गुंजन शर्मा, करण शर्मा, आशा शर्मा सहित अन्य की उपस्थिति रही।

योगी सरकार का बड़ा फैसला, यूपी में बसों का किराया हो सकता है कम; शहरों से गांवों तक मिलेगी सुविधा

उत्तर प्रदेश सरकार पर्यावरण के अनुकूल ई-बसों के माध्यम से शहरी परिवहन का विस्तार करेगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बड़े शहरों से कस्बों तक निजी ई-बस सेवा शुरू करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने किराए को विनियमित करने और पार्किंग की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए कहा है। सरकार 15 साल से पुरानी डीजल-सीएनजी बसों को हटाकर नई ई-बसें लाएगी और शहरों को स्मार्ट बनाने पर ध्यान केंद्रित करेगी।

लखनऊ। प्रदेश सरकार पर्यावरण अनुकूल स्वच्छ ईंधन वाली बसों के नगरीय परिवहन का विस्तार करने जा रही है। इसके लिए सिटी बस सेवा में निजी ई-बस संचालकों को भी अवसर दिया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बड़े नगरों से नजदीकी कस्बों तक ई बस सेवा का संचालन कराने के निर्देश दिए हैं। कहा है कि जनहित में बसों का किराया विनियमित (रेग्युलेट) किया जाना चाहिए। बसों की पार्किंग की जगह तय हो, रूट तय किए जाएं। मुख्यमंत्री ने बुधवार को नगर विकास विभाग में संचालित परियोजनाओं की समीक्षा की और भावी कार्ययोजनाओं को लेकर दिशा-निर्देश दिए। वर्तमान में 15 नगरों में 700 इलेक्ट्रिक बसों का संचालन हो रहा है। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि 15 वर्ष से अधिक समय तक किसी भी डीजल-सीएनजी बस का उपयोग न होने दिया जाए। बसों को स्क्रैप कराकर ई-बसें लाई जाएं। पार्किंग की समस्या पर चिंता जाते हुए निर्देश दिए कि पार्किंग को मांग, स्थान और समय के अनुरूप व्यवस्थित किया जाए। इसके शुल्क में समरूपता होनी चाहिए, किसी सूरत में पार्किंग के नाम पर अवैध वसूली न होने दी जाए। स्थानीय व्यापारियों, दुकानों, कार्यालयों में काम करने वाले कर्मचारियों आदि का बस सेवा का मासिक पास बनाया जाए। उन्होंने कहा कि नगरों में विज्ञापन होर्डिंग लगाने में एकरूपता हो। इनसे किसी महापुरुष की प्रतिमा-चित्र आदि विकृत नहीं होना चाहिए। खतरनाक होर्डिंग के स्थान पर इलेक्ट्रानिक डिस्प्ले बोर्ड को वरीयता दी जाए। अवैध होर्डिंग को तत्काल हटवाएं। इसके लिए सभी नगरीय निकायों के लिए स्पष्ट नियामवली होनी चाहिए। योगी ने कहा कि सभी नगरीय निकायों में अचल संपत्तियों के नामांतरण, पंजीयन, वसीयत आदि प्रकरणों के लिए एकसमान प्रक्रिया और एकसमान शुल्क की व्यवस्था की जाए।

स्मार्ट नगर पालिका योजना

मुख्यमंत्री ने जिला मुख्यालय वाले नगर निकायों को स्मार्ट नगर पालिका के रूप में विकसित करने की विस्तृत कार्ययोजना बनाने के भी निर्देश दिए। कहा कि योजना के लिए बजट का आवंटन हो चुका है। स्मार्ट नगर पालिकाओं में डिजिटल गवर्नेंस, वैल्यू एडेड सिटिजन सर्विस, जल भराव की समस्या की मानीटरिंग, स्मार्ट पार्किंग, स्मार्ट प्रकाश प्रबंधन, प्रदर्शनी स्थल, आडिटोरियम, वेंडिंग ज़ोन, डिजिटल लाइब्रेरी, नवीकरणीय ऊर्जा प्रकल्पों को प्रोत्साहन जैसे ईज आफ लिविंग संबंधी कार्य कराए जाएं।

इन निकायों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का माहौल तैयार करें। नगर निकायों में मैनपावर की कमी नहीं होनी चाहिए। जहां कहीं पद रिक्त हैं, तत्काल भर्ती की कार्यवाही करें। जहां आउटसोर्सिंग से तैनाती होनी हो, बिना विलंब प्रक्रिया पूरी करें। बरसात आरंभ होने से पहले सभी निकायों में ड्रेनेज व्यवस्था को बेहतर कर लिया जाए। कहीं भी जलभराव न हो, इसके लिए समय से तैयारी कर लें। आवश्यकता हो तो नए नाले भी बनाएं। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि सभी नगर निकाय अपनी आय बढ़ाने के लिए ठोस प्रयास करें। लखनऊ, गाजियाबाद और आगरा नगर निगम के बाद अब इसी माह वाराणसी और प्रयागराज नगर निगम द्वारा म्युनिसिपल बांड जल्द जारी कराया जाए। इसी वित्तीय वर्ष में गोरखपुर, मेरठ और कानपुर नगर निगमों द्वारा म्युनिसिपल बांड जारी करने की तैयारी करें।

हरे माधव दयाल की दया- अमरकंटक की पावन धरा पर अमृत वर्षा-सतगुर के उपकार साधो गणत न गणियाँ जाए

सतगुरु दयाल जब समत्व प्रेम का अमृत पिलाते हैं, तो जाति कर्मो मजहबों वर्णों ऊंचनीच की दीवार हट जाती है-मेरे सतगुराँ हम शरण तेरी आए-**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ जानती है कि कुदरत की इस अद्भुत धारा पर भारत एक ऐसा देश है जहाँ कुदरत की विशेष कृपा है, क्योंकि भारत में दयालुता कोमलता परोपकारिता के भाव अपेक्षाकृत विशालस्तर में है, जो धारा के अन्य स्थानों पर अपेक्षाकृत कम देखने को मिलते हैं, यहां ऐसे विशाल भक्त हैं, जिनका विचार रहता है कि अगर मेरा दयाल सतगुरु इक नूर की नजर कर दे तो मैं एक जिंदगी तो क्या लाखों करोड़ों जिंदगीयाँ बलिहार कर दूंगा, यहां सतगुरु जी से प्राप्त तत्व प्रसाद का चस्का जिसको मिलेगा उसका आत्मविश्वास उसे उन्नति की बुलंदी तक ले जाता है, उसके सत्कर्मों, अटल इरादों को भ्रम के तंदे से डिगा नहीं सकते, वह हर कदम पर आगे बढ़ता चला जाता है। आज हम यह विचार इसलिए प्रकट कर रहे हैं क्योंकि अमरकंटक मध्यप्रदेश की धरा पर 12-13 अप्रैल 2025 को विशाल हरे माधव सत्संग मां नर्मदे की पावन धरा, ऋषि मुनियों की तपोभूमि अमरकंटक की पावन धरा पर रखा गया था, जहां रिपोर्टिंग और दर्शन के लिए मैं स्वयंम उपस्थित था तथा सतगुरु जी की पावन हुजूरी में मैंने मां नर्मदे के तट पर आरती सत्संग के श्री वचन तथा हजारों की मात्रा में स्थानीय व मध्य प्रदेश महाराष्ट्र छत्तीसगढ़ उत्तर प्रदेश राजस्थान गुजरात सहित अनेक प्रदेशों से भक्तजनों के भावों को मैंने देखा तो मैं भाव विभोर हो उठा व इस विषय को मैंने आर्टिकल लिखने के लिए चुना। चूँकि मन की आज्ञा पर लगने वाले जीव मनमुख व गुरु की आज्ञा पर लगने वालें जीव गुरमुख हो जाते हैं व सतगुरु दयाल जब समत्व प्रेम का अमृत पिलाते हैं तो,जाति कर्मों मजहबों ऊंचनीच की दीवार हट जाती है, मेरे सतगुरु हम शरण तेरी आए, इसलिए आज हम मेरे ग्राउंड रिपोर्टिंग, सतगुरु के दर्शन व सत्संग में उपस्थित अनुभव के आधार पर चर्चा करेंगे हरे माधव दयाल की दया, अमरकंटक में अमृतवर्षा सतगुरु के उपकार साधो गणत ना गणियाँ जाए।

साथियों बात अगर हम काल की पहली चाल जीवों को भूलभुलैया में फंसाने की करें तो, पूर्ण संत सतगुरु हम मनुष्यों को हर प्रकार के वहमों भ्रमों से निकलने की सीख अपने अमृत वचन वाणियों में देते हैं। यह सारी कुदरत दयाल प्रभु परमात्मा की रचना है क़ाल भी दयाल का बनाया हुआ है, अकाल पुरुख दयाल प्रभु परमात्मा से शक्ति ऊर्जा लेकर ही वर्तण करता है। परमात्मा की मौज से रचित सृष्टि पर कॉल का पहरा है, यह शरीर पुण्य और पाप कर्मों के मिश्रण से ही बना है, यह काल समय परिवर्तन, मृत्यु, विनाश और कर्मों का फल देने वालीसत्ता का सूचक भी है, यह संसार परमात्मा का खेल है, परमार्थ का गहरा रहस्य पूर्ण संतो नहीं खोला है कि क़ाल ही द्वेत विरोध और विनाश की वह शक्ति है जो परमात्मा की मौज से संसार में कार्य कर रही है। क़ाल की पहली चाल जीव को भुलाने की है, वह ऐसा वतावरण निर्मित करता है कि जीव भूल करें या भूल जाए अथवा भरमा जाए, यह काम क्रोध लोभ मोह अहंकार विषय वासना, इंद्रिय रस भोग क़ाल के हथियार से होते हैं जिनको काटने के लिए सतगुरु दयाल हमें अमृततत्व नाम की प्रसादी देते हैं सेवा बंदगी बख्श साध संगत से जोड़ते हैं, सतगुरु नाम का सिमरन ध्यान सेवा वह संजीवनी बूटी है जिसके सामने कल के सारे हथियार विफल हो जाते हैं। मन वचन कर्म से किसी को सुख देना पुण्य है, दुख देना पाप है।पाप पुण्य के कर्म कभी नाश नहीं होते, वें लेंखे में दर्द हो जाते हैं। इन दोनों प्रकार के कर्मों के भुगतान के कारण मनुष्य चौरासी में बना रहता है, दोनों हीकर्मबंधन है। पूर्ण संत दयाल परमात्मा के भेजे उनके प्यारे पुत्र होते हैं, वें जीवों को क़ाल के बंधनों से मुक्त करने की युक्ति, मुक्ति की चाबी देकर नाम भक्त सेवा कराते हैं और समझते हैं कि सत्कर्म अकर्ता एवं निष्काम भाव से करो, यह पूर्ण सतगुरु का परम उपकार है कि, हमें सेवा, सत्संग, सिमरन ध्यान दर्शन में रामाते हैं, सो हमें चाहिए कि पूर्ण सतगुरु जी की पावन सत्संगति में रह नाम सिमरन ध्यान और सेवा

में अपने चित्त को निर्मल शुद्ध करें जिससे नए कर्म न बने इसका हमें ध्यान रखना चाहिए।

साथियों बात अगर हम निमाणे व निष्काम भाव से सतगुरु घर की सेवा से हमारे कर्मों का भार हल्का होने की करें तो, सेवाएं अनेक प्रकार की होती है प्रत्येक सेवा का अपना-अपना महत्व होता है, हमें जो सेवा प्राप्त हो वह निष्काम और अकर्ता भाव से करना चाहिए, सेवा में कर्ता भाव पतन का कारण हो सकता है, इसी वास्ते संतों ने सत्संग में अमृत संदेशों वचन वाणियों द्वारा शिष्यों को सचेत करते हैं कि, सेवा सदैव निष्काम व अकर्ता भाव से करें तो, स्वास्थ्य एवं मन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है सेवाएं सभी सुखों की खान है। हरीराय सतगुरु भिन्न-भिन्न कौतुक स्वांगो, न्यारे खेलों के द्वारा, हमसे सेवा करा हमारी आत्मा को जागृत कर, अमृत के स्रोत तक पहुंचा देते हैं। पूरण सतगुरु सेवादारों को सेवा प्रदान करते समय इस बात का ख्याल रखते हैं कि, किस सेवादार के लिए कौनसी सेवा आवश्यक है, उसके कर्मों को काटने वाली सेवा उसे प्रदान करते हैं, सारी सेवाएं कर्मों के भार को कम करती एवं काटती है, पर प्रत्येक सेवादार की अपनी अवस्था व पात्रता होती है, सतगुरु जी उसकी पात्रता अवस्था गुण देख सेवाएं प्रदान करते हैं। संग़तो के हित सुखद भविष्य का विचार करते हुए सेवकों को सेवा प्रदान करते हैं, सतगुरु कृपा आदेश से मिली प्रत्येक सेवा हितकारी कल्याणकारी होती है। आज हम संसार के मायावी विकारों में फंस भटक गए हैं, मानव जीवन के असल उद्देश्य लक्ष्य को भूल गए हैं, हमारे सतगुरु न्यारे हैं सर्वोत्तम वृत्ति वाले सतपुरुख है, वें जानते हैं आज मानव संसार के नाशवंत सुखों को जीवन का सुख मानता है। सद्गुरु सच्चे पातशाह हरीराय रूप सतगुरु साईं जी को मानव की यह दशा देखी नहीं जाती, वें हर पल प्रेमी आत्मा शिष्यों को प्रभु के परम तत्व लोक में ले चलते हैं। यही प्रयास रहता है कि संगते सेवा सत्संग सिमरन ध्यान दर्शन के द्वारा पूर्ण निर्मल हो परमात्मा पथ में चलने और प्रभु परम लोक में प्रवेश की पात्रता बनाएं, इसी वास्ते सेवा सत्संग के अपार भंडार खोल दिए प्रत्येक के कर्म अपने होते हैं, या यू कहें कि भिन्न-भिन्न कर्मों का प्रारब्ध होता है, सभी को उनको कर्मों के अनुसार सेवाएं प्रदान करते हैं, कभी वे स्वयं सेवा बताते हैं, कभी अंतर प्रेरणा से संकेत प्रदान करते हैं, कभी सेवाओं के द्वारा संकेत देते हैं, जिसके जैसे कर्म जैसी योग्यता पात्रता उसके अनुसार सेवा दे निर विकार करते हैं। कर्म भार हल्के कर शूल की सजा को कांटे में परिवर्तन करते हैं, संतो को हर पल अमृत वचन वाणियों परम लीलाओं परम महिमाओं के द्वारा निर्मल करते हुए परम आनंद से भर देते हैं, उनके नारे कौतुब खेल वे अपनी मौज में खेलते हैं। सतगुरु कृपा आदेश से मिली प्रत्येक सेवा हितकारी कल्याणकारी होती है। सेवा हमारे कर्मों का भार तो हल्का करती ही है साथ ही साथ सेवा करते-करते हम बहुत कुछ सीखते हैं। सच्ची सेवा वही कर सकता है जो निमाणे भाव से साथ संगत की सेवा चाकरी में रमा रहता है। निष्काम सेवा से सिमरन सहज हो जाता है, सिमरन पूर्ण होते ही निजता का आनंद देने वाला आंतरिक सत्संग प्राप्त होता है। सेवा में शिष्यों का भाव कभी सरल सहज मीठा होता है तो कभी खट्टा होता है, यह सही नहीं है, सेवा सदा सरल सहज श्रद्धा भाव से ही करना चाहिए।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि हरे माधव दयाल की दया- अमरकंटक की पावन धरा पर अमृत वर्षा- सतगुर के उपकार साधो गणत न गणियाँ जाए।मन की आज्ञा पर लगने वाले मनमुख व गुरु की आज्ञा पर लगने वाले गुरमुख हो जातें है।सतगुरु दयाल जब समत्व प्रेम का अमृत पिलाते हैं, तो जाति कर्मो मजहबों वर्णों ऊंचनीच की दीवार हट जाती है -मेरे सतगुराँ हम शरण तेरी आए।

टेस्ला कर सकती है किन दो कारों के साथ भारत में एंट्री, जानें कैसे होंगे फीचर्स

अमेरिका की इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता Tesla की ओर से भारतीय बाजार में जल्द ही अपनी कारों की बिक्री को शुरू किया जा सकता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से सबसे पहले दो कारों को भारत में लाया जा सकता है। यह कौन सी कारें हो सकती हैं और इनमें किस तरह के फीचर्स और रेंज को दिया जाएगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। अमेरिका की प्रमुख इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता Tesla जल्द ही भारत में एंट्री कर सकती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से किन कारों को भारतीय बाजार में सबसे पहले लाया जा सकता है। इनमें किस तरह के फीचर्स को दिया जाएगा। कितनी दमदार बैटरी और रेंज के साथ इन कारों को ऑफर किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

भारत में एंट्री की तैयारी में Tesla

अमेरिकी वाहन निर्माता Tesla जल्द ही भारत में एंट्री करने की तैयारी कर रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी अपना पहला शोरूम भी मुंबई के BKC में खोल सकती है।

किन कारों को करेगी ऑफर

रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से सबसे पहले दो कारों को भारतीय बाजार में ऑफर किया जाएगा। जिसके कुछ समय बाद पोर्टफोलियो की अन्य कारों को भी लाया जा सकता है। जानकारी के मुताबिक जिन कारों को सबसे पहले लाया जा सकता है उनमें Model 3 और Model Y शामिल हैं।

Model 3 में कैसे हैं फीचर्स

टेस्ला की ओर से एंट्री लेवल कार के तौर पर Model 3 को ऑफर किया जाता है। इस गाड़ी में तीन वेरिएंट का विकल्प दिया जाता है, जिसमें लॉन्ग रेंज रियर व्हील ड्राइव, लॉन्ग रेंज ऑल व्हील ड्राइव और परफॉर्मेंस शामिल हैं। इस गाड़ी में 15.4 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, आठ इंच टचस्क्रीन को रियर में दिया गया है। सिंगल चार्ज में इसे 557 से 584 किलोमीटर तक की रेंज मिलती है। 0-100 किलोमीटर की स्पीड हासिल करने में इसे 2.9 सेकेंड से लेकर 4.9 सेकेंड तक का समय लगता है। इसमें लगी मोटर से 504 बीएचपी की पावर मिलती है।

कैसी है Model Y

Tesla की Model Y में रियर व्हील ड्राइव और लॉन्ग रेंज ऑल व्हील ड्राइव के विकल्प मिलते हैं। गाड़ी को सिंगल चार्ज में 719 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है। गाड़ी में लगी मोटर से इसे 0-100 किलोमीटर की स्पीड हासिल करने में 5.9 सेकेंड लगते हैं। लेकिन इसके ऑल व्हील ड्राइव वेरिएंट को 4.3 सेकेंड में ही 0-100 किलोमीटर की स्पीड से चलाया जा सकता है। फीचर्स के तौर पर इसमें एलईडी हेडलाइट्स, एलईडी टेल लाइट्स, 15.4 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, रियर पैसेंजर्स के लिए आठ इंच स्क्रीन जैसे फीचर्स को दिया जाता है।

फॉक्सवेग गोल्फ GTI स्पोर्टी लुक के साथ होगी लॉन्च, मिलेंगे कई एडवांस और प्रीमियम फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में मई 2025 में लॉन्च होने जा रही है। कंपनी ने इसके लॉन्च होने की पुष्टि कर दी है। भारत में इसका मुकाबला Mini Cooper S से देखने के लिए मिलेगा। यह कई बेहतरीन सेफ्टी फीचर्स के साथ आ सकती है। इसके इंटीरियर को भी कई प्रीमियम फीचर्स से लैस किया जाएगा जिससे आपको स्पोर्टी कार की फीलिंग होगी।

नई दिल्ली। Volkswagen ने हाल ही में अपनी नई Tiguan R-Line को लॉन्च किया है। कंपनी अब भारतीय बाजार में अपनी दूसरी कार को लॉन्च करने की प्लानिंग कर रही है। जर्मन कंपनी भारत में Volkswagen Golf GTI को लॉन्च करने वाली है। यह भारत में मई 2025 में लॉन्च होने वाली है। इसे पूरी तरह से निर्मित इकाई (CBU) के रूप में पेश किया जाएगा। आइए जानते हैं कि Volkswagen Golf GTI में क्या कुछ खास मिल सकता है?

एक्सटीरियर

इसके फ्रंट में कनेक्टेड LED DRLs के साथ स्लीक LED हेडलाइट्स और स्लीक ग्रिल मिलेगी। इसमें DRLs के ठीक ऊपर लाल रंग की पट्टी दी गई है, जो कुछ कास कलर कॉम्बिनेशन साथ देखने पर आकर्षक कंट्रास्ट जोड़ती है। Volkswagen Golf GTI के बंपर पर हनीकॉम्ब कॉम्ब पैटर्न के साथ एक आक्रामक डिजाइन दिया गया है, जो फॉग लैंप को बड़े करीने से उनमें एकीकृत किया गया है।

इसके साइड प्रोफाइल में बॉडी-कलर ORVMs और डोर हैंडल दिया गया है। इसमें 18-इंच के डुअल-टोन अलॉय व्हील्स दिए गए हैं और सभी पहियों पर रेड ब्रेक कैलिपर्स हैं। पीछे की तरफ रैप-अराउंड टेल लाइट्स दी गई है, जो सर्कुलर डुअल एग्जॉस्ट पाइप लुक को पूरा करते हैं।

इंटीरियर

Volkswagen Golf GTI में आपको स्पोर्टी फील मिले इसके लिए कंट्रास्टिंग रेड स्टिचिंग के साथ ऑल-ब्लैक केबिन थीम देखने के लिए मिल सकता है। इसमें टार्टन सीटें भी होंगी, जो सभी Volkswagen GTI के साथ पेश की जाती है। इसके अलावा, आगे सीटों पर GTI बैजिंग देखने के लिए मिलेगी, जो लाल रंग के उभरी हुई होंगी।

फीचर्स

इसमें 12.9-इंच टचस्क्रीन सिस्टम के साथ-साथ 10.25-इंच डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, वायरलेस फोन चार्जर, वायरलेस एंड्रॉइड ऑटो और ऐपल कारप्ले, हेड अप डिस्प्ले, 6 स्पीकर साउंड सिस्टम, 30-रंग की एम्बिएंट लाइटिंग, हीटेड फ्रंट सीटें और तीन-जोन ऑटो AC जैसे फीचर्स देखने के लिए मिलेंगे।

सेफ्टी फीचर्स

Volkswagen Golf GTI में पैसेंजर की सेफ्टी के लिए 6 एयरबैग, एक टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम (TPMS), इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल और लेन असिस्ट, ब्लाइंड स्पॉट मॉनिटरिंग और अडेप्टिव क्रूज कंट्रोल जैसे एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम (ADAS) जैसे फीचर्स देखने के लिए मिल सकते हैं।

इंजन

इसमें 2-लीटर टर्बो पेट्रोल इंजन देखने के लिए मिल सकता है, जो 265 PS की पावर और 370 Nm का टॉर्क जनरेट करेगा। इसके इंजन को 7-स्पीड DCT ट्रांसमिशन के साथ जोड़ा जा सकता है।

कीमत

Volkswagen Golf GTI को भारतीय बाजार में करीब 52 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया जा सकता है। भारत में इसका मुकाबला Mini Cooper S से देखने के लिए मिलेगा।

2025 स्कोडा कोडिएक आज होगी लॉन्च, Fortuner, Gloster, Tiguan को मिलेगी

भारतीय बाजार में स्कोडा की ओर से कई सेगमेंट में एसयूवी और सेडान कारों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से कल फुल साइज एसयूवी सेगमेंट में Skoda Kodiaq को लॉन्च किया जाएगा। एसयूवी में किस तरह के फीचर्स को दिया जा सकता है। कितना दमदार इंजन मिल सकता है। किस कीमत पर लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। यूरोप की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल स्कोडा की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता कल अपनी नई एसयूवी के तौर पर Skoda Kodiaq को लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। स्कोडा की नई एसयूवी में किस तरह के फीचर्स को दिया जा सकता है। कितना दमदार इंजन मिल सकता है। किस कीमत पर एसयूवी को लॉन्च किया जा सकता है। बाजार में इसे किन एसयूवी से चुनौती मिल सकती है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

कल लॉन्च होगी 2025 Skoda Kodiaq SUV

स्कोडा की ओर से फुल साइज एसयूवी सेगमेंट में कल 2025 Skoda Kodiaq SUV को औपचारिक तौर पर लॉन्च कर दिया जाएगा। पुराने वर्जन के मुकाबले नई एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जा सकता है।

कितना दमदार इंजन

लॉन्च के बाद ही इसके सभी फीचर्स और इंजन की जानकारी मिलेगी। लेकिन इसमें दो लीटर की क्षमता के इंजन को दिया जा सकता है। जिसे टर्बो के साथ लाया जा सकता है। इस इंजन से एसयूवी को 201 बीएचपी की पावर और 320 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिल सकता है। इसमें 7स्पीड डीसीटी ट्रांसमिशन को दिया जा सकता है। इसके साथ ही इसमें 4X4 को भी दिया जा सकता है।

कैसे होंगे फीचर्स

Skoda Kodiaq एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाएगा। इसमें एलईडी लाइट्स, एलईडी डीआरएल, एलईडी टेल लाइट्स, एंबिएंट लाइट्स, ब्लैक इंटीरियर, पैनोरमिक सनरूफ, मल्टी जोन क्लाइमेट कंट्रोल, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, की-लैस एंट्री, पुश बटन स्टार्ट/स्टॉप, वायरलेस चार्जर, क्रूज कंट्रोल, मल्टी फंक्शन स्टेयरिंग व्हील, 360 डिग्री कैमरा, ड्राइविंग मोड्स, एबीएस, ईबीडी, नौ एयरबैग जैसे फीचर्स को दिया जा सकता है।

कितनी होगी कीमत

स्कोडा की ओर से Kodiaq एसयूवी के लॉन्च के बाद ही कीमत की जानकारी दी जाएगी। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इस एसयूवी को भारतीय बाजार में 50 लाख रुपये के आस-पास की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया जा सकता है। एसयूवी को भारत में दो वेरिएंट्स के साथ लॉन्च किया जा सकता है जिसमें Sportline और L&K शामिल हो सकते हैं।

किनसे होगा मुकाबला

भारतीय बाजार में स्कोडा अपनी नई एसयूवी को फुल साइज एसयूवी सेगमेंट में ऑफर करेगी। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Toyota Fortuner, MG Gloster, Volkswagen Tiguan R Line के साथ होगा। इसके अलावा इसे कई लग्जरी MPVs से भी चुनौती मिल सकती है।

लॉन्च से पहले नजर आई फॉक्सवगन गोल्फ GTI, कितना दमदार होगा इंजन और कैसे होंगे फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

जर्मनी की वाहन निर्माता Volkswagen की ओर से जल्द ही भारतीय बाजार में नई गाड़ी को लॉन्च किया जाएगा। लॉन्च से पहले Golf GTI को टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक गाड़ी की क्या जानकारी सामने आई है। इसे कब तक भारत में लॉन्च किया जा सकता है। कितना दमदार इंजन और फीचर्स इसमें दिए जाएंगे। आइए जानते हैं।

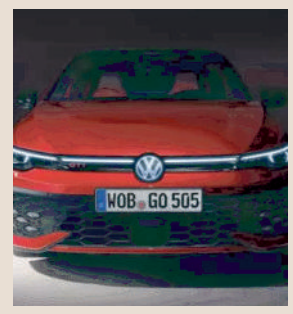

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में फॉक्सवैगन की ओर से जल्द ही नई कारों को लॉन्च किया जाएगा। इसमें से प्रीमियम हैचबैक कार के तौर पर Volkswagen Golf GTI को भी लाने की तैयारी की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हाल में ही इस गाड़ी को भारतीय सड़कों पर देखा गया है। इस गाड़ी की क्या जानकारी सामने आई है। कब तक इसे लॉन्च (Volkswagen Golf GTI India) किया जा सकता है। कितना दमदार इंजन इसमें मिल सकता है। किस तरह के फीचर्स दिए जा सकते हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

भारत आएगी Volkswagen Golf GTI

फॉक्सवैगन की ओर से भारतीय बाजार में जल्द ही नई गाड़ी के तौर पर Golf GTI को लॉन्च किया जाएगा। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक लॉन्च से पहले इस गाड़ी को भारतीय सड़कों पर देखा गया है। इस दौरान गाड़ी के एक्सटीरियर के कुछ फीचर्स की जानकारी सामने आई है।

क्या मिली जानकारी

रिपोर्ट्स के मुताबिक इस प्रीमियम स्पोर्टी हैचबैक कार में चारों पहियों में डिस्क ब्रेक, 5स्पोक अलॉय व्हील्स, रेड ब्रेक कैलिपर्स, एलईडी टेल लाइट्स, जीटीआई की बैजिंग के साथ आएगी। इसके अलावा इस गाड़ी को सामान्य गोल्फ के मुकाबले कम ग्राउंड क्लियरेंस के साथ लाया जाएगा।

कैसे होंगे फीचर्स

कंपनी की ओर से इस गाड़ी में एलईडी मैट्रिक्स हेडलाइट्स, कनेक्टिड एलईडी डीआरएल, हनीकॉम्ब मैश पैटर्न फ्रंट बंपर ग्रिल, ड्यूल एग्जॉस्ट को दिया जाएगा। इंटीरियर में इस कार में ब्लैक के साथ रेड थीम को दिया जा सकता है। इसके अलावा इसमें एल्यूमिनियम पैडल, 12.9 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, ऑटो एसी, वायरलेस फोन चार्जर, एंबिएंट लाइट्स, छह एयरबैग, ईएससी, ADAS जैसे कई फीचर्स को दिया जाएगा।

कितना दमदार इंजन

Volkswagen Golf GTI में कंपनी की ओर से दो लीटर की क्षमता का टर्बो पेट्रोल इंजन दिया जाएगा। इस इंजन से कार को 265 पीएस की पावर और 370 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसके साथ 7स्पीड डीसीटी ट्रांसमिशन को दिया जाएगा। यह कार इतनी तेज होगी कि इसे 0 से 100 किलोमीटर की स्पीड पकड़ने में सिर्फ 5.9 सेकेंड का समय लगेगा।

कब तक होगी लॉन्च

कंपनी की ओर से इसके लॉन्च की तारीख को लेकर अभी तक आधिकारिक जानकारी नहीं है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इस गाड़ी को अगले दो से तीन महीनों के दौरान लॉन्च किया जा सकता है। इसे सीबीयू के तौर पर लाया जाएगा, जिस कारण इसकी सीमित यूनिट्स की ही बिक्री भारतीय बाजार में की जाएगी।

रोड सेफ्टी को स्कूल के सिलेबस में किया जाएगा शामिल, नितिन गडकरी ने शिक्षा मंत्री के साथ की बैठक

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बुधवार को केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के साथ एक बैठकी की। इस दौरान उन्होंने सड़क सुरक्षा को स्कूल शिक्षा में शामिल करने की बात की। वहीं बच्चों को कम उम्र से ही सड़क सुरक्षा के बारे में जागरूक किया जा सकें ताकि भविष्य में सड़क हादसों में कमी लाई जा सकती है।

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने 16 अप्रैल 2025 को केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के साथ एक बैठकी की अध्यक्षता की। इस बैठक का उद्देश्य स्कूल शिक्षा प्रणाली में सड़क सुरक्षा को शामिल करना रहा, ताकि बच्चों को कम उम्र से ही सड़क सुरक्षा के बारे में जागरूर किया जा सकें। नितिन गडकरी ने इस बैठक के बारे में अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर शेयर किया। इसके साथ ही उन्होंने सड़क सुरक्षा को राष्ट्रीय चिंता का विषय भी बताया है। आइए जानते हैं कि इस बैठक में क्या कुछ हुआ।

सड़क हादसे में गई 11,000 से ज्यादा लोगों की जान

इस बैठक में नीतिन गडकरी ने बताया कि 2023 में स्कूलों और संस्थानों के आसपास के इलाकों में 11,000 से ज्यादा लोगों की जान सड़क हादसों में गई। इनमें से 10,000 से ज्यादा बच्चे शामिल थे, जिनकी उम्र 18 साल से कम थी। यह आंकड़ा काफी ज्यादा चिंताजनक है और इसपर तुरंत कदम उठाने की जरूरत है। इस बैठक में उन्होंने बताया कि बच्चों की सुरक्षा के लिए सरकार अब इस दिशा में ठोस कदम उठाने जा रही है।

सरकार चलाएगी सड़क सुरक्षा अभियान

इस बैठक को लेकर नीतिन गडकरी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर लिखते हुए बताया कि शिक्षा मंत्रालय के सहयोग से 'सड़क सुरक्षा अभियान' को देशभर के स्कूलों तक विस्तार देने का फैसला लिया गया। इसका मकसद स्कूल के बच्चों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करना है। इसके तहत बच्चों को सड़क पर चलने, ट्रैफिक नियमों का पालन करने और सुरक्षित व्यवहार अपनाने के बारे में बताया जाएगा। अगर बच्चो को छोटी उम्र से ही सड़क सुरक्षा के लिए नियम सीख लें, तो भविष्य में सड़क हादसों में कमी लाई जा सकती है।

सुरक्षित स्कूल जोन की जरूरत

इस बैठक में नीतिन गडकरी ने सुरक्षित स्कूल जोन बनाने पर भी चर्चा की। स्कूलों के आसपास सख्त नियम का लागू करने की योजना है, ताकि बच्चों की सड़क पर सुरक्षा को बेहतर किया जा सकें। स्कूल के समय में बच्चों के स्कूल में प्रवेश और छूट्टी के समय पर सख्त प्रोटोकॉल बनाए जाएंगे। इसके अलावा, स्कूल बसों और वैन में सेफ्टी स्टैंडर्ड्स का पूरी तरह पालन सुनिश्चिक किया जाएगा। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि स्कूल बसों में सीटबेल्ट, जीपीएस, और आपातकालीन सिस्टम जैसे फीचर्स को जरूरी किया जाएगा। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि सड़क सुरक्षा के इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए सभी का यानी सरकार, स्कूल प्रशासन, अभिभावकों और समाज का सहयोग जरूरी है। साथ ही उन्होंने विश्वास जताया कि इन प्रयासों से भारत में हर बच्चे के लिए सड़कें सुरक्षित बनाई जा सकेंगी।

खेती में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी

विजय गर्ग

दरअसल, यहां डॉक्टरों की बढ़ती भीड़ चेता भी रही है और डरा भी रही है। आज से बीस-तीस साल पहले जहां ढूंढ़े से कोई डॉक्टर मिलता था, आज वहां भीड़ है। मेरा अंतर्मन कहता है कि हम सुख की तलाश 'दौलत' में करते-करते सबसे बड़े जीवन-मूल्य 'परिश्रम' को भूल बैठे हैं। जबकि यह एक हकीकत है कि पसीने से महकते किसान, जवान और श्रमिक कोई व्यायाम करने को नहीं कहता।

हाल ही में भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद की ओर से एक निजी कंपनी के साथ मिल कर तैयार की गई रपट में बताया गया है कि देश के कृषि कार्यबल में 64.4 फीसद महिलाएं हैं, लेकिन सिर्फ छह से दस फीसद महिलाएं कृषि और इससे संबंधित शीर्ष कंपनियों में शीर्ष पदों पर हैं। इस रपट ने कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका और शीर्ष पदों पर उनकी कम उपस्थिति के बीच गहरी खाई को उजागर किया है। रपट के मुताबिक कृषि व्यवसाय का भविष्य महिलाओं को शिक्षा, को शिक्षा, कार्यस्थलों समावेश बढ़ा कर और नेतृत्व विकास के माध्यम है। रपट में यह सशक्त बनाने में निहित आया है कि कृषि शिक्षा कार्यक्रमों में महिलाओं का 30-40 फीसद नामांकन ही होता है, लेकिन इनमें से बहुत कम औपचारिक कृषि क्षेत्र में रोजगार पाती हैं। इसलिए कृषि में महिलाओं के करने की जरूरत है। उनकी सामने आने वाली चुनौतियों और बाधाओं को दूर करने की समान भागीदारी समर्थन करने से ही कृषि क्षेत्र को समृद्ध बनाया जा सकता है। तभी इसका लाभ समाज सभी सदस्यों को मिल सकेगा। रपट के हवाले से विशेषज्ञों का कहना है कि कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ानी । होगी। मगर उच्च शैक्षणिक स्तर केबावजूद मजबूत औपचारिक रोजगार में उनकी संख्या नगण्य है। इसे बढ़ाने पर जोर दिया जाना चाहिए। रपट में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए कई रणनीतियां सुझाई हैं। इनमें महिलाओं को संसाधनों तक समान पहुंच सुनिश्चित करना, उनके लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू करना और समावेशी कार्यस्थलों को बढ़ावा देकर उनको नेतृत्व के लिए प्रेरित करना शामिल हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि देश में कृषि परिदृश्य एक आश्चर्यजनक विरोधाभास प्रस्तुत करता है। महिलाएं कृषि कार्यबल और शैक्षिक समूहों का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं, फिर भी स्नातकों एक बड़ा हिस्सा औपचारिक रोजगार संरचनाओं में प्रवेश नहीं कर पाता है। हमें इस स्थिति पर गंभीरता से विचार करते हुए समाधान के रास्ते खोजने होंगे।

असल में, कृषि में स्त्रियों की भागीदारी बहुआयामी प्रक्रिया है, जो कई सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों से प्रभावित होती है। कृषि में महिलाओं की पूर्ण और बराबर भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए कई चुनौतियों का समाधान किया जाना बाकी है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय के आंकड़ों के कड़ों के अनुसार, भारत में कृषि श्रम बल में महिलाएं महत्त्वपूर्ण अनुपात में हैं। वर्ष 2010-11 की अवधि में लगभग 43 फीसद किसान और 52 फीसद कृषि मजदूर महिलाएं थीं। मगर समय साथ कृषि श्रमबल में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई है। वर्ष 2002- -03 में महिला कृषकों का अनुपात 37 फीसद से बढ़ कर वर्ष 2010-11 में 43 फीसद हो गया। इसी अवधि में महिला कृषि मजदूरों 1143 का अनुपात 48 फीसद से बढ़ कर 52 फीसद हो गया।

कृषि क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने हमेशा कृषि में अहम भूमिका निभाई है, चाहे वे किसान हों या मजदूर। हालांकि उनके योगदान को अक्सर अनदेखा किया और कम करके आंका जाता है। उन्हें इस क्षेत्र में समान भागीदारी और निर्णय लेने में

कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। महिलाओं को बढ़ावा देने वाले मुख्य कारकों में से एक, इस क्षेत्र में पुरुष श्रम शक्ति में गिरावट है। यह गिरावट कई कारकों से प्रेरित है, जिसमें कृषि का मशीनीकरण, गैर-कृषि रोजगार में बदलाव और बेहतर रोजगार के अवसरों की तलाश में पुरुषों का शहरी क्षेत्रों में पलायन शामिल है। नतीजतन, महिलाओं ने कृषि में अधिक से अधिक जिम्मेदारियां और भूमिकाएं निभानी शुरू की हैं।

महिलाओं के बढ़ते योगदान को अब कम करके आंका नहीं जा सकता। उनको यह मान्यता विभिन्न नागरिक समाज संगठनों और सरकारी पहलों संभव हुई है। खेती में स्त्रियों की भागीदारी सकारात्मक रूप से बढ़ी है। हालांकि उन्हें अब भी कृषि में समान भागीदारी के लिए कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। आंकड़ों से पता चलता है कि कृषि में भूमि और अन्य संसाधनों तक महिलाओं की पहुंच अक्सर पुरुषों की तुलना में सीमित होती है। वर्ष 2010- 11 की अवधि में भारत 1 में केवल 13 फीसद महिला कृषकों के पास खेती की जमीन थी, जबकि 37 फीसद पुरुष कृषकों के कपास खेती की जमीन थी। यह असमानता अन्य संकेतकों में भी। दिखाई देती है, जहां महिलाओं की विस्तार सेवाओं और विपणन तक पुरुषों की तुलना में कम पहुंच है।

इस क्षेत्र में आने वाली मुख्य चुनौतियों में भेदभाव और रूढ़िवादिता भी है, जो इस क्षेत्र में संसाधनों, ज्ञान और अवसरों तक महिलाओं की पहुंच को सीमित करती है। इनका समाधान करने और खेती में महिलाओं की समान भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए ऐसी नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करना आवश्यक है, जो जो इस क्षेत्र में उनको बढ़ावा देने का समर्थन करते हैं। इसमें ऐसी पहलें शामिल हैं, जिनका उद्देश्य संसाधनों, ज्ञान और व तक महिलाओं की पहुंच में सुधार करते हुए लोगों की पुरानी सोच को । बदलना है। इसके लिए नागरिक समाज भी कृषि क्षेत्र की महिलाओं को सामूहिक रूप से संगठित करने, उन्हें उनके सभी अधिकारों के बारे में शिक्षित करने, विस्तार सेवाओं उनकी पहुंच को सक्षम तक 1 और उन्हें स्थायी आजीविका रबनाने प्रशिक्षण प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके लिए महिलाओं को भूमि और अन्य संसाधनों तक समान पहुंच प्रदान करना होगा, जिसमें ऋण, विस्तार सेवाएं और भंडारण सुविधाएं शामिल हैं। । कृषि में महिलाओं के अवैतनिक और अनौपचारिक श्रम की मान्यता तथा मूल्य को बढ़ावा । देना जरूरी है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रमों सहित कृषि में महिलाओं की शिक्षा और प्रशिक्षण को समर्थन देने वाली नीतियों और कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करना होगा।

किसान संगठनों, सहकारी समितियों और अन्य स्थानीय संस्थाओं सहित सभी स्तरों पर र निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना होगा। तकनीकी सहायता और वित्त पोषण के प्रावधान माध्यम से कृषि में महिलाओं के नेतृत्व वाली पहलों और उद्यमों के विकास का समर्थन करना होगा। महिलाओं के भूमि स्वामित्व को बढ़ावा देना होगा, ताकि उन्हें विभिन्न कृषि योजनाओं के तहत लाभ प्राप्त करने में मदद मिल सके निस्संदेह कृषि में महिलाओं की भूमिका अहम है। वे खेती संबंधी कई काम करती हैं, जैसे बीजों का चयन, खेतों की जुताई, फसलों की कटाई, मवेशी प्रबंधन, दूध दुहना, चारा इकट्ठा करना आदि। उनकी भागीदारी दर अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग होती है। मगर समानता को बढ़ावा देने और क्षेत्र की स्थिरता तथा उत्पादकता में सुधार के लिए आवश्यक है कि स्त्रियों की भूमिका बढ़ाई जाए। उनकी समान भागीदारी का समर्थन कर कृषि क्षेत्र को समृद्ध किया जा सकेगा। वहीं महिलाएं कृषि और इससे संबंधित शीर्ष कंपनियों में नेतृत्वकारी पदों पर पहुंच पाएंगी। कृषि क्षेत्र साथ ही देश के विकास के लिए ऐसा करना जरूरी है। इसके लिए हम सभी को मिल कर काम करना होगा। सरकार के साथ समाज भी जब ऐसे कार्यक्रमों के लिए आगे आएगा, तभी देश का संपूर्ण विकास संभव है। इस विकास को हमें क्रियाशील बनाना ही होगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

ताकि बची रहे धरती : विजय गर्ग

महान दार्शनिक अरस्तू ने कहा है, परिवर्तन प्रकृति का नियम है। यानी परिवर्तन शाश्वत है। समय के साथ किसी भी वस्तु, विषय और विचार में भिन्नता आती है और यह आनी भी चाहिए। तभी इसकी महत्ता है। हम अपने आसपास देखते हैं। महसूस करते हैं कि मौसम बदलता है। मनुष्य की स्थितियां बदलती हैं, जिससे जीवन-क्रम चलता रहता है। अगर हम बदलाव से मुंह चुराएंगे, तो हमारा विकास नहीं हो सकेगा। हमें इस सत्य को मानना पड़ेगा कि जीवन में खुशियों के लिए परिवर्तन बहुत जरूरी है। जिस पुराने तरीके से आज तक जो हम सोच रहे थे, उस तरीके से अगर हमें सफलता नहीं मिलती है तो उसे छोड़कर हमें नए तरीकों से सोचना भी पड़ता है। हम प्रकृति के इस नियम को जब भी मानने से इनकार करने लगते हैं, तब हम दुखी होते हैं, अवसाद से घिर जाते हैं। यह सर्व स्वीकृत सत्य है कि जब अच्छे दिन स्थायी नहीं रहते, तो बुरे दिन भी नहीं रहेंगे। जीवन में त्योहार भी इसलिए मनाए जाते हैं क्योंकि इससे कुछ सुखद अनुभव होते हैं।

आजकल त्योहार जैसा जीवन रोज जिया जा सकता है। जैसे अच्छी तरह से तैयार होना, अपनी पसंद का भोजन करना आदि । इंसान अब हर दिन पसंद का काम कर सकता है। इसलिए अब हर दिन उसके लिए त्योहार के समान हो गया है, लेकिन इस तरह की जीवनशैली को पाने के लिए प्रकृति के कार्यों में मनुष्य ने व्यवधान पैदा करना शुरू किया। ऐसा करते हुए उसे भरोसा हो गया कि उसने प्रकृति को पूरी तरह पराजित कर दिया है। हमारा सारा तथाकथित विकास प्रकृति के दोहन से हो रहा है। कुदरत ने हमें बहुत कुछ दिया है, लेकिन संयमित रूप से इस्तेमाल करने के लिए, न कि अंधाधुंध रूप से बर्बाद करने के लिए।

आज हमारी इस करनी का फल भी हमारे सामने ही उपस्थित हो रहा है। अपने भयावह रूप में। आमतौर पर मार्च तक वसंत ऋतु मानी जाती है जब मौसम से सुहावने होने की संभावना रहती है, लेकिन जिस तरह से मार्च से ही गर्मी पड़ रही है, वह डराने वाली है, क्योंकि अभी गर्मी का मौसम बाकी है। पिछले साल गर्मियों में पारा चढ़ा हुआ था । अब इस साल क्या होगा, यह चिंता का विषय है। धरती पर वैश्विक तापमान जिस तरह से बढ़ रहा है, आने वाला समय चुनौतियों भरा हो सकता है। हर साल इस मसले पर बड़ी-बड़ी बातें की जाती हैं। छिट- पुट पेड़ लगाए जाते हैं। लेकिन नतीजा, वही ढाक के तीन पात रहता है । ऐसा इसलिए कि इन सबके लिए हम स्वयं ही जिम्मेवार हैं । समस्या की जड़ भी हम जानते हैं, लेकिन उसे खत्म करने का दृढ़ निश्चय किसी में नहीं। इसलिए आज भी समस्या जस की तस है।

वैश्विक तापमान के लिए मुख्य रुप से मानव गतिविधियां जिम्मेदार हैं। उद्योगीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित और अंधाधुंध दोहन और बढ़ता प्रदूषण इसके प्रमुख कारण हैं। इसके अलावा, कार्बन डाइआक्साइड उत्सर्जन का सबसे बड़ा स्रोत कोयला, पेट्रोल और डीजल जैसे ईंधनों का जलना है । ये ग्रीनहाउस गैसों को बढ़ाते हैं, जिससे धरती का तापमान बढ़ता है। इससे बचने का एक प्रभावी तरीका पेड़ लगाना है । लेकिन आए दिन जंगलों की कटाई हो रही है। जबकि हम सब जानते हैं कि पेड़ कार्बन डाईआक्साइड को अवशोषित करते हैं और आक्सीजन देते हैं। जब जंगल काटे जाते हैं, तो यह गैस वातावरण में बनी रहती है, जिससे तापमान बढ़ता है। फिर बढ़ रहा उद्योगीकरण भी पर्यावरण को बुरी तरह से कुप्रभावित कर रहा है। फैक्टरियों और उद्योगों से निकलने वाली गैसें, जैसे कार्बन डाईआक्साइड, मीथेन और नाइट्रस आक्साइड ग्रीनहाउस प्रभाव को तेज करती हैं। साथ ही, खादों और कीटनाशकों के इस्तेमाल से भी नाइट्रस आक्साइड निकलता है, जो वैश्विक तापमान को बढ़ाता है ।

आज मनुष्य अलग-अलग तरीकों से धरती को नुकसान पहुंचा रहा है, जिसमें प्लास्टिक का बढ़ता प्रदूषण भी एक है। प्लास्टिक कचरा नष्ट होने में सैकड़ों साल लेता है। इसे जलाने से जहरीली गैसें निकलती हैं, जो वातावरण को गर्म करती हैं। अगर इन्हें मिट्टी में दबा दिया जाए तो मिट्टी की उर्वरता घटती है। फिर बढ़ती गाड़ियां और हवाई जहाजों से निकले धुएं में मौजूद कार्बन डाई आक्साइड और अन्य गैसें ग्रीनहाउस प्रभाव को तेज कर रही हैं। हवा और जमीन का यह प्रदूषण अब नदियों और समुद्र को भी प्रदूषित कर रहा है। समुद्रों में तेल रिसाव और प्लास्टिक प्रदूषण से समुद्री जीवन प्रभावित होता है। समुद्रों की कार्बन सोखने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे वातावरण में तापमान बढ़ता है।

पीढ़ियों से चली आ रही प्राकृतिक सुविधाओं और पर्यावरण का उपभोग वर्तमान पीढ़ी जिस तरह से कर रही है, वह व्यवस्था आने वाली पीढ़ियों को भी उसी रूप में मिले, इस बात को सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी भी हमारी है। ऐसा न हो कि हमको मिल रहा है तो सब खत्म कर दें और आगे जो आएंगे उनका वे जाने! आज संपोषित विकास को अपनाने की आवश्यकता है। इसका तात्पर्य ऐसे विकास से है जो विकास के साथ-साथ वन क्षेत्र, जैविक संसाधनों, चक्रीय व्यवस्था को उनके मूल रूप में बनाए रखे, ताकि भावी पीढ़ी को भी स्वच्छ पर्यावरण, स्वस्थ जीवन, स्वच्छ धरती और संसाधन मिलें । वन संपदा और जीव-जंतु संरक्षित रहें। वैश्विक तापमान को रोकने के लिए हमें स्वच्छ ऊर्जा यानी सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना होगा, वृक्षारोपण, ईंधन की बचत और टिकाऊ जीवनशैली अपनानी होगी । अगर अभी ध्यान नहीं दिया गया, तो भविष्य में इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं, क्योंकि आज हमारे पास चीजों को ठीक करने का मौका है। अगर हम अभी भी नहीं संभले, तो यही समस्या संपूर्ण जीव जगत को लील लेगी ।

सरकार व समाज मिलकर निकालें समाधान

विजय गर्ग

भारत में गली-कूचों में घूमने वाले आवारा कुत्तों की बढ़ती संख्या एक गंभीर जन-सुरक्षा संकट बन चुकी है। हाल ही में कांग्रेस सांसद कार्ति चिदंबरम ने इस मुद्दे को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सामने उठाया। उन्होंने समस्या के समाधान के लिए एक नेशनल टास्क फोर्स गठित करने की मांग की। बताया जाता है कि भारत में करोड़ों आवारा कुत्ते गंभीर चुनौती का सबब बने हुए हैं। कई शहरों में यह समस्या विकराल रूप ले चुकी है, लेकिन प्रशासन के पास इस संकट के समाधान के लिये कोई प्रभावी नीति नहीं है। वर्ष 2012 की लाइवस्टॉक सेंसस रिपोर्ट के अनुसार, भारत में करीब 1.7 करोड़ आवारा कुत्ते थे, लेकिन 2019 तक यह संख्या बढ़कर 6.2 करोड़ हो गई। कुत्तों की संख्या नियंत्रित करने के लिए सरकार की एबीसी (एनीमल बर्थ कंट्रोल) योजना है, लेकिन इसे प्रभावी तरीके से लागू नहीं किया जा रहा। देश में हर साल 1.75 करोड़ से अधिक लोग कुत्तों के हमलों का शिकार होते हैं। भारत में विश्व की 36 प्रतिशत रैबीज मौतें होती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, हर साल देश में 20,000 से अधिक लोग रैबीज से मरते हैं। दरअसल, रैबीज से होने वाली मौतों में 99 प्रतिशत मामले कुत्ते काटने के होते हैं।

रैबीज एक जानलेवा बीमारी है और इसका कोई इलाज नहीं है। रैबीज का एकमात्र समाधान टीकाकरण और जानवर आबादी नियंत्रण है। लेकिन भारत में 80 प्रतिशत से अधिक आवारा कुत्तों का कोई टीकाकरण नहीं होता। इसके कारण संक्रमण का खतरा और बढ़ जाता है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में गली के कुत्तों द्वारा काटे जाने की घटनाएं बढ़ रही हैं। छोटे बच्चे और बुजुर्ग इस

संकट से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। कुत्तों के हमले की कई ऐसी घटनाएं सामने आई हैं, जिनमें कई लोगों की जान तक चली गई। आवारा कुत्ते कचरे के ढेर में खाना खोजते हैं, जिससे गंदगी फैलती हैं। साथ ही अन्य बीमारियां फैलने का खतरा बढ़ता है। खुले में भोजन की तलाश करने वाले ये कुत्ते अन्य जीव-जंतुओं पर भी हमला करते हैं, जिससे उनमें भी रैबीज फैलने का खतरा बढ़ जाता है।

अब तक भारत में कोई समग्र राष्ट्रीय नीति नहीं है जो इस समस्या का समाधान कर सके। वहीं स्थानीय निकायों के पास भी इस मुद्दे से निपटने की कोई ठोस रणनीति नहीं है। इसी कारण सांसद कार्ति चिदंबरम ने प्रधानमंत्री से नेशनल टास्क फोर्स बनाने की अपील की है। टास्क फोर्स में केंद्र, राज्य सरकारें, नगर निकाय, पशु चिकित्सा विशेषज्ञ और एनजीओ को शामिल करने की मांग की गई है।

आवारा कुत्तों की संख्या नियंत्रित करने के लिए प्रभावी नीति बनाने के अलावा टीकाकरण कार्यक्रम को तेज करने के साथ ही आवारा कुत्तों की नसबंदी के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग करने की जरूरत है। सरकार को राज्य और जिला स्तर पर नसबंदी केंद्र बनाने चाहिए।

डब्ल्यूएचओ के 2030 तक रैबीज मुक्त भारत के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक टीकाकरण अभियान चलाना चाहिए। अस्पतालों में मुफ्त वैक्सीन उपलब्ध कराई जाए। साथ ही स्ट्रे डॉग शेल्टर बनाने के लिए अनुदान दिया जाए। एनिमल हेल्थ सेंटर बनें, जहां घायल-बीमार आवारा कुत्तों का इलाज हो सके।

जरूरी है कि जनता को रैबीज और कुत्तों से बचाव के तरीकों के बारे में जागरूक किया जाए। कुत्तों के प्रति हिंसा को रोकने के लिए उनके पुनर्वास कार्यक्रम चलाए जाएं। एनजीओ और पशु कल्याण संगठनों को इस अभियान में शामिल किया जाए।

हरियाणा में भी आवारा कुत्तों बढ़ती संख्या और उनके हमलों की कई चिंताजनक घटनाएं सामने आई हैं। फतेहाबाद के बड़ोपल क्षेत्र और हिसार जिले के मंगली-रावतखेड़ा क्षेत्र में आवारा कुत्तों के हमलों से स्थानीय नीलगाय और काले हिरण की आबादी खतरे में है। जनवरी, 2016 से मई, 2020 तक, हिसार संभाग में कुत्तों द्वारा 361 काले हिरण, 1,641 नीलगाय, 25 मोर, 29 चिंकारा और 35 बंदरों की मौत दर्ज की गई है। पंजाब व हरियाणा उच्च न्यायालय के निर्देशों के अनुपालन में, हरियाणा-पंजाब ने आवारा कुत्तों से निपटने को जिला-स्तरीय समितियों का गठन किया है।

निस्संदेह, नेशनल टास्क फोर्स के गठन से इस मुद्दे का स्थायी समाधान निकाला जा सकता है। इससे लोगों की जान बचाने में मदद मिलेगी। यदि हम समय पर उचित कदम नहीं उठाते, तो यह समस्या और विकराल रूप ले सकती है। सरकार, प्रशासन और समाज मिलकर इस संकट से निपटने के लिए ठोस कार्ययोजना बनाएं

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

पहले पुरुष जिसने परमाणु को विभाजित किया : विजय गर्ग

परमाणुओं, जैसा कि आप अच्छी तरह से स्कूल में अध्ययन किया हो सकता है, उपपरमाण्विक कणों शामिल हैं । पूर्ण मानव नियंत्रण में एक तत्व (लिथियम) का पहला परमाणु रूपांतरण भौतिक विज्ञानी जॉन कॉकक्रॉफ्ट और अर्नेस्ट वाल्टन द्वारा 14 अप्रैल, 1932 को प्राप्त किया गया था।

जॉन कॉकक्रॉफ्ट 27 मई, 1897 को जन्मे, कॉकक्रॉफ्ट उत्तरी इंग्लैंड के टोडमोर्डन में कपास निर्माताओं के एक परिवार से आए थे। वह एक विविध शैक्षिक अनुभव से गुजरा, जिसने उसे अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए अच्छी स्थिति में डाल दिया।

प्रथम विश्व युद्ध से पहले उन्होंने 1914-15 में मैनचेस्टर विश्वविद्यालय में गणित की पढ़ाई की थी. युद्ध के दौरान रॉयल फील्ड आर्टिलरी के साथ सेवा करने के बाद, वह मैनचेस्टर लौट आया - गणित का अध्ययन जारी रखने के लिए नहीं, बल्कि कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग को आगे बढ़ाने के लिए। वह 1924 में सेंट जॉन्स कॉलेज, कैम्ब्रिज जाने से पहले, एक प्रशिक्षु के रूप में दो साल के लिए मेट्रोपॉलिटन विकर्स ("मेट्रोविकर") इलेक्ट्रिकल कंपनी में शामिल हो गए।

व्यापक कौशल प्रशिक्षण के अलावा - अब आधुनिक त्वरक विज्ञान और इंजीनियरिंग के लिए एक शर्त के रूप में देखा जाता है - गणित, भौतिकी और इंजीनियरिंग में कॉकक्रॉफ्ट का सैद्धांतिक पता-कैसे, एक स्थानीय विद्युत कंपनी के साथ व्यावहारिक अनुभव के साथ उसे सही ट्रैक पर रखा। जब उन्होंने न्यूजीलैंड के प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी अर्नेस्ट रदरफोर्ड को फिर से शामिल किया - जिनके साथ उन्होंने पहले मैनचेस्टर में प्रशिक्षु थे - कैवेंडिश प्रयोगशाला में, कॉकक्रॉफ्ट के सबसे महत्वपूर्ण योगदान के लिए सभी तत्व जगह में थे।

सर जॉन कॉकक्रॉफ्ट (केंद्र), हरवेल, इंग्लैंड में परमाणु ऊर्जा अनुसंधान प्रतिष्ठान के निदेशक, अमेरिका की यात्रा के दौरान । यहां, कॉक्रोफ्ट को अमेरिकी रसायनज्ञ ग्लेन सीबोर्ग (बाएं) और अमेरिकी भौतिक विज्ञानी डॉ।एडविन मैकमिलन।

अप्रैल 1932 में अपनी सफलता के बाद, कॉकक्रॉफ्ट 1934 में कैम्ब्रिज में चुंबक प्रयोगशाला के प्रमुख के रूप में चला गया। उन्होंने 1939 में रक्षा के लिए रडार सिस्टम पर काम किया और 1944 में कनाडा में चॉक रिवर लेबोरेटरी के निदेशक बने। जब वह यू.के. दो साल बाद, उन्हें विंडस्केल में दुनिया के पहले वाणिज्यिक परमाणु ऊर्जा केंद्र की परिचालन सफलता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए परमाणु ऊर्जा अनुसंधान प्रतिष्ठान (एईआर), हरवेल का उद्घाटन निदेशक बनाया गया।

कई शक्तिशाली और प्रभावशाली पदों को रखने के अलावा, वैज्ञानिक और प्रशासनिक दोनों, कॉकक्रॉफ्ट के काम को भी कई तरीकों से स्वीकार किया गया था, जिसमें विभिन्न अकादमियों से मानद सदस्यता और डॉक्टरेट शामिल थे। 18 सितंबर, 1967 को 70 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

अर्नेस्ट वाल्टन 6 अक्टूबर, 1903 को जन्मे वाल्टन बेलफास्ट (अब उत्तरी आयरलैंड में) कॉलेज गए और उन्होंने ट्रिनिटी कॉलेज, डबलिन (अब आयरलैंड गणराज्य में) में भौतिकी का अध्ययन किया। उन्होंने अपना स्नातक कार्य कैम्ब्रिज के ट्रिनिटी कॉलेज में किया, जो कैवेंडिश प्रयोगशाला में रदरफोर्ड के साथ काम कर रहा था। 1931 में पीएचडी प्राप्त करने के बाद, वाल्टन कैम्ब्रिज में एक साथी के रूप में रहे, कॉकक्रॉफ्ट के साथ अपने अब प्रसिद्ध प्रयोग पर काम कर रहे थे। जबकि वाल्टन इस प्रयोग में जूनियर पार्टनर थे, वह निश्चित रूप से प्रमुख प्रयोगवादी थे।

डॉ. अर्नेस्ट वाल्टन, आयरिश भौतिक विज्ञानी और एडविन मैकमिलन (दाएं) के साथ नोबेल विजेता। फोटो 15,1965 अप्रैल को लिया गया।। फोटो क्रेडिटः अमेरिकी राष्ट्रीय अभिलेखागार / नारा

अपनी सबसे बड़ी सफलता के बाद, वाल्टन ने कैवेंडिश लैब में काम की उन्मत्त गति से दूर जाने का फैसला किया। वह 1934 में ट्रिनिटी कॉलेज, डबलिन लौटे - इस बार एक प्रोफेसर के रूप में। हालांकि इसका मतलब यह था कि वह अब कण भौतिकी में अत्याधुनिक काम में शामिल नहीं था, लेकिन, वह लंबे समय से आयोजित सपने को पूरा कर रहा था।

वाल्टन को न केवल शिक्षण पसंद था, बल्कि यह भी अच्छा था, और वह अपने करियर के शेष समय के लिए डबलिन में रहे। वास्तव में, जब 1951 में इसकी घोषणा की गई थी - उनके सफल प्रयोग के लगभग दो दशक बाद - कि उन्होंने

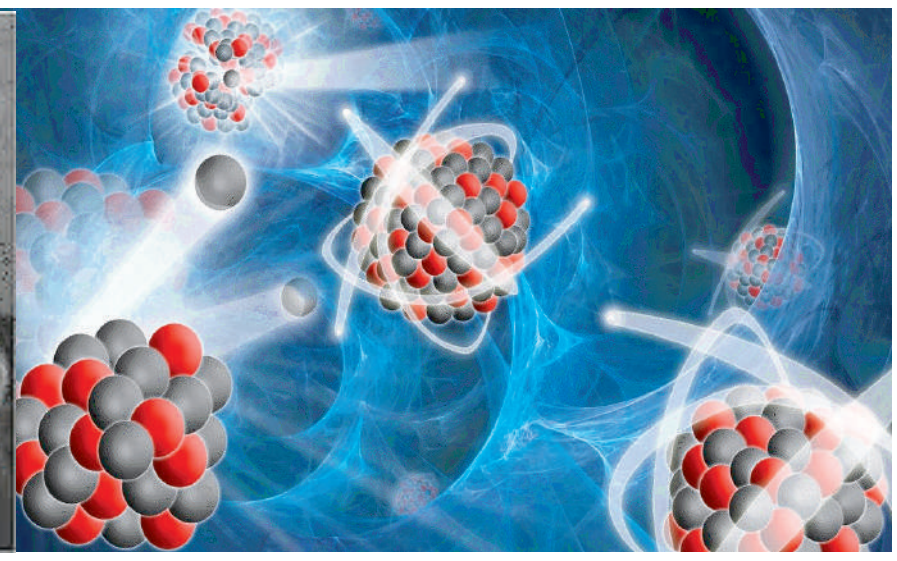

कॉकक्रॉफ्ट के साथ, कॉकक्रॉफ्ट-वाल्टन जनरेटर को विकसित करने के लिए भौतिकी में नोबेल पुरस्कार जीता था जिसने परमाणु को विभाजित करने में मदद की थी, यह वास्तव में उसके लिए एक आश्चर्य के रूप में आया था। 25 जून, 1995 को 91 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

कॉकक्रॉफ्ट-वाल्टन जनरेटर रदरफोर्ड ने कॉकक्रॉफ्ट और वाल्टन को दिया, जो कैवेंडिश लैब में उनके नीचे एक साथ आए थे, तेजी से आगे बढ़ने वाले अल्फा कणों या प्रोटॉन को नियंत्रित करने का एक तरीका पता लगाने का चुनौतीपूर्ण कार्य जैसे कि उन्हें लक्ष्य के उद्देश्य से किया जा सकता है - जिससे वे आगे की जांच कर सकते हैं परमाणु नाभिक की प्रकृति।

कॉकक्रॉफ्ट ने 1928 में प्रयोगशाला में अपनी यात्रा के दौरान सोवियत भौतिक विज्ञानी जॉर्ज गामो से क्वांटम टनलिंग के बारे में सीखा। इस घटना के अनुसार, एक छोटा कण संभवतः नाभिक के ऊर्जा अवरोध के माध्यम से छेद सकता है। इसका मतलब यह था कि एक बहुत कम ऊर्जा अपने उद्देश्य को अच्छी तरह से प्राप्त कर सकती है, जो वे शुरू में सोच रहे थे।

जबकि उस युग में अनसुने वोल्टेज के साथ काम करने सहित कई बाधाओं को दूर किया जाना था, 1929 से 1932 में अंतिम सफलता तक 1929 तक बल्कि सेडेट गति से काम किया गया। धीमी प्रगति में कई कारकों का योगदान हो सकता था। सबसे पहले, रिकॉर्ड स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि कैवेंडिश लैब में दिन कभी जल्दी शुरू नहीं हुए और हमेशा शाम 6 बजे समाप्त हुए। जैसा कि रदरफोर्ड लोगों के स्वास्थ्य को संरक्षित करने और उनके चिंतन को सक्षम करने का एक मजबूत विश्वास था। इसे इस तथ्य में जोड़ें कि कॉकक्रॉफ्ट और वाल्टन दोनों ने अधिकांश अन्य शोधकर्ताओं की तरह अपने प्रयोगात्मक रुखिलौनाह को डिजाइन करने, बनाने और पूरा करने का आनंद लिया। उनकी प्रयोगशाला के स्थानांतरण और 800 केवी रेटिंग के लिए उनके उपकरण के पुनर्निर्माण ने भी देरी में योगदान दिया।

जिस दिन वे अंत में परमाणु को विभाजित करते हैं वह 14 अप्रैल, 1932 था। रदरफोर्ड के धैर्य खोने और परिणाम प्राप्त करने के लिए कॉकक्रॉफ्ट और वाल्टन को धक्का देने के साथ, दोनों ने शुरू में लिथियम परमाणु को प्रोटॉन बीम के साथ विभाजित करने के लिए 280 केवी की बीम का उपयोग किया। परमाणुओं को मानव नियंत्रण में प्रोटॉन के कृत्रिम रूप से उत्पादित बीम द्वारा पहली बार विभाजित किया गया था। बाद में परमाणु के प्रदर्शन 150 केवी से नीचे ऊर्जा के साथ एक बीम के साथ प्राप्त किए गए थे।

लिथियम न्यूक्लियस को तोड़कर उत्पादित अल्फा कणों की उपस्थिति की पुष्टि तब की गई जब आस-पास की एक जिंक सल्फाइड स्क्रीन को सिंटिलेशन और चमक के साथ जलाया गया। पहले वाल्टन और कॉकक्रॉफ्ट, और फिर रदरफोर्ड ने खुद देखा, जो सहमत होने से पहले हो रहा था कि उन्होंने वास्तव में परमाणु को विभाजित किया था। कॉकक्रॉफ्ट और वाल्टन ने 16 अप्रैल को प्रकृति को रस्विफ्ट प्रोटॉन द्वारा लिथियम का विघटनह नामक एक पत्र शूट किया, और यह महीने के अंत तक प्रकाशित हुआ।

इसके बाद के वर्षों में, दुनिया भर में कई प्रमुख भौतिकी प्रयोगशालाओं के लिए कई कॉकक्रॉफ्ट-वाल्टन जनरेटर का उत्पादन किया गया। सीढ़ी-कैस्केड सिद्धांत क्षमता की एक श्रृंखला के माध्यम से चार्ज स्विच करके वोल्टेज स्तर का निर्माण करने के लिए, जिसे कॉकक्रॉफ्ट-वाल्टन गुणक भी कहा जाता है, आज भी उपयोग में रहता है।

कॉकक्रॉफ्ट का भारतीय कनेक्शन

प्रो. एसवी टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (टीआईएफआर) के एक अकादमिक शोधकर्ता डैमले ने सर जॉन कॉकक्रॉफ्ट को प्लास्टिक के गुब्बारों की तस्वीरों को दिखाया, जिनका उपयोग भारत-अमेरिका में किया गया था। 1961 में गुब्बारे की उड़ानें। प्रो. 1975 से 1987 तक TIFR के निदेशक के रूप में सेवा करने वाले श्रीकांतन बाईं ओर हैं।। फोटो साभारः द हिंदू आर्काइव्स

"मानव प्रगति हमेशा उत्कृष्ट क्षमता और रचनात्मकता के कुछ व्यक्तियों की उपलब्धियों पर निर्भर करती है। होमी भाभा इनमें से एक थीं

1966 में एक उड़ान दुर्घटना के कारण उनकी मृत्यु के बाद, भारतीय भौतिक विज्ञानी होमी भाभा को श्रद्धांजलि देते समय ये कॉकक्रॉफ्ट के शब्द थे।

कॉकक्रॉफ्ट और भाभा दोनों कैम्ब्रिज में थे, जहां वे सहकर्मी और फिर दोस्त बन गए। एशिया के पहले रिसर्च न्यूक्लियर रिएक्टर अप्सरा को जब अगस्त 1956 में कमीशन किया गया था, तब समृद्ध यूरेनियम का पूरा भार यू.के. जिन कारकों ने इसे संभव बनाया उनमें से एक था भाभा के साथ कॉकक्रॉफ्ट का सौहार्दपूर्ण संबंध।

भारत के परमाणु कार्यक्रम में कॉकक्रॉफ्ट की विशेषज्ञता ने भी उल्लेखनीय भूमिका निभाई। वास्तव में, वह शुरू से ही लगभग सही शामिल था। नवगठित भारत सरकार की विदेशी राजनयिक विजयलक्ष्मी पंडित ने उन्हें यू.के. देश में परमाणु ऊर्जा उद्यम बनाने की सलाह लेना। कॉकक्रॉफ्ट ने शायद सोचा था कि यह अच्छे हाथों में होने जा रहा है जब उन्हें पता चला कि उद्यम भाभा के नेतृत्व में चलाया जा रहा है।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

गोबर के पीछे सरकार: विज्ञान, शिक्षा और विवेक का अपहरण

"गोबर, गुस्सा और विश्वविद्यालय की गिरती गरिमा"
गोबर का जवाबः जब शिक्षा की दीवारों पर गुस्सा पुता हो।

डॉ. सत्यवान सौरभ

जिस देश में बच्चों के हाथों में लैपटॉप और प्रयोगशालाएं होनी चाहिए, वहाँ आज गोबर से लीपे क्लासरूम पर प्रयोग हो रहा है। और यह कोई गाँव की छवि नहीं, बल्कि दिल्ली विश्वविद्यालय जैसी देश की शीर्षस्थ शिक्षण संस्था की हकीकत है — जहाँ गोबर से ठंडक पाने की बात कहकर क्लासरूम की दीवारें लीपी जा रही हैं, और विरोध करने पर छात्रों को उपद्रवी कहा जा रहा है। सवाल है — क्या यह ₹अनुसंधान₹ है या शिक्षा व्यवस्था पर थोपे जा रहे राजनीतिक प्रयोग?

यह विडंबना नहीं, विघटन है — और सबसे पहले यह सवाल उठना चाहिए कि जिन लोगों को खुद के लिए वातानुकूलित (AC) कमरे चाहिए, वे छात्रों को गोबर की ठंडक का उपदेश क्यों दे रहे हैं? ऐसा कौन-सा शोध है जो बच्चों को प्रयोगशाला नहीं, प्रयोग मानता है?

'गोबर क्रांति' या दिशाहीन जिद?

आजकल एक विचित्र मोह देखा जा रहा है — जैसे गोबर में ही देश की सारी समस्याओं का समाधान छुपा हो। ऊर्जा से लेकर पर्यावरण तक, हर मुद्दे का जवाब गोबर में खोजा जा रहा है। लेकिन इस 'गोबर क्रांति' का पहला प्रायोगिक केंद्र यदि छात्रों की कक्षा है, तो यह केवल पाखंड है। क्योंकि जिन नीति-निर्माताओं ने यह निर्णय लिया, उनके अपने कार्यालयों में न तो गोबर है, न ही उसका कोई प्रयोग। वे तो आधुनिक सुख-सुविधाओं में जीते हैं, और छात्रों पर देसी ठंडक का बोझ डालते हैं।

क्या यह विचार करने का विषय नहीं कि भारत आज भी अपने स्कूलों में शौचालय, पंखा और साफ़ पानी नहीं दे पाया है, लेकिन गोबर से ठंडक का दिखावा ज़रूर कर रहा है?

शिक्षा में विज्ञान नहीं, सनक घुस आई है

चीन, जापान, कोरिया जैसे देश स्कूलों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और क्वांटम कंप्यूटिंग सिखा रहे हैं। वहीं भारत में बच्चों को बताया जा रहा है कि गोबर की परत से गर्मी दूर होगी। सरकार की तकनीकी सोच यदि गोबर तक सीमित हो गई है, तो यह केवल हास्यास्पद ही नहीं, चिंताजनक भी है।

शोध के नाम पर यदि आप छात्रों को अनचाहे प्रयोग का हिस्सा बना रहे हैं, तो यह संविधान में दिए गए उनके मूल अधिकारों का उल्लंघन है। यह तंत्र अब शिक्षा का नहीं, अंध-आस्थाओं का प्रतिनिधि बन गया है।

DUSU अध्यक्ष की प्रतिक्रिया: जवाबदेही या विद्रोह?

यह किसी तरह का अराजक प्रदर्शन नहीं था। दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (DUSU) अध्यक्ष की प्रतिक्रिया एक वैचारिक प्रतिरोध था। जब छात्र अपनी पढ़ाई, अपने स्वास्थ्य और अपने परिवेश के लिए चिंतित हों — और उनकी बात सुनी न जाए — तो क्या वे चुप बैठ जाएं?

DUSU अध्यक्ष ने जिस तरह से गोबर-प्रयोग के विरोध में आवाज़ उठाई, वह एक छात्र प्रतिनिधि की जिम्मेदारी है। इस दौर में, जहाँ छात्रों को अक्सर ₹देशद्रोही₹ करार देकर चुप कराया जाता है, वहाँ उनका अपनी ज़मीन पर खड़ा होना साहस है, और लोकतंत्र का सबसे बड़ा प्रमाण भी।

क्लासरूम या गोशाला? अंतर तय कौन करेगा?

शिक्षा एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, उसमें भावनाओं और प्रतीकों का स्थान सीमित होता है। पर आज लगता है कि क्लासरूम को गोशाला में बदलने की एक असामाजिक कोशिश की जा रही है। यदि सरकार को वाकई गोबर पर इतना भरोसा है तो क्यों न संसद भवन, सचिवालय और मंत्रालयों में 'गोबर-कूलिंग सिस्टम' लागू किया जाए? क्यों सिर्फ बच्चों पर यह भार?

यह वही मानसिकता है जो अपने बच्चों को इंग्लिश मीडियम स्कूलों में भेजती है लेकिन सरकारी स्कूलों में 'संस्कृति' का पाठ पढ़ाने पर जोर देती है। यह वही दोहरापन है जो बच्चों से 'आत्मनिर्भर' बनने को कहता है लेकिन खुद अमरीकी कंपनियों के एसी और गैजेट्स से चिपका रहता है।

भारत बनाम भारत सरकार: विकास की परिभाषा में टकराव

भारत की जनता स्मार्ट तकनीक चाहती है, वैज्ञानिक सोच चाहती है, और आधुनिक शिक्षा चाहती है। लेकिन भारत सरकार की कुछ संस्थाएं प्रतीकों और परंपराओं में उलझी हैं। सरकार का यह गोबर प्रेम तब तक ठीक लगता है जब तक वह स्वैच्छिक होता है। लेकिन जैसे ही इसे अनिवार्य या शैक्षणिक प्रयोग बना दिया जाता है, वह खतरनाक बन जाता है।

गोबर एक जैविक तत्व है, इसमें कोई विवाद नहीं। लेकिन हर जैविक चीज़ उपयोगी नहीं होती यदि वह तर्कहीन तरीकों से लागू की जाए। क्या छात्रों की सहमति ली गई? क्या उनके स्वास्थ्य के लिए जोखिम का आकलन किया गया? यदि नहीं, तो यह न केवल अवैज्ञानिक है बल्कि अमानवीय भी।

व्यंग्य में लिपटा यथार्थ

जिस देश में आज भी लाखों बच्चे स्कूलों में ज़मीन पर बैठते हैं, जहाँ छतें टपकती हैं, वहाँ गोबर से ठंडक पाने का तर्क देना केवल लापरवाही नहीं, बच्चों के भविष्य के साथ क्रूर मज़ाक है। भारत की शिक्षा व्यवस्था को नीति, नवाचार और निगरानी की ज़रूरत है — न कि गोबर के लेप की।

अंत में

एक समय था जब शिक्षा को मंदिर कहा जाता था। लेकिन अब लगता है जैसे शिक्षा को 'लेप केंद्र' बना दिया गया है — जहाँ दीवारें गोबर से लीपी जाती हैं, और विरोध करने वालों को 'विघटनकारी तत्व' बताया जाता है। ऐसे समय में छात्रों की आवाज़ बनना ही असली देशभक्ति है, और उसी देशभक्ति का परिचय DUSU अध्यक्ष ने दिया।

गोबर संवाद

— प्रियंका सौरभ

कभी रिसर्च की चुप्पी में,
दीवारों पर गोबर उतरा।
तो कभी प्रतिरोध की गर्मी में,
वही गोबर उल्टा फेरा।

मैडम बोलीं — 'ये संस्कृति है',
छात्र बोले — 'ये राजनीति!'
एसी हटाओ, मिट्टी लगाओ,
सच्ची रिसर्च की चलो नीति।

डूसू का प्रेसिडेंट आया,
और हाथ में बाल्टी लाई।
क्लासरूम का उल्टा पाठ,
प्रिंसिपल पर छाया भाई।

ज्ञान की बात गई किनारे,
अब गोबर से फैले अर्थ।
कभी प्रयोगशाला बना कॉलेज,
कभी प्रतिकार का स्थल यह पर्थ।

अब कौन सही, कौन गलत —
ये बहस बेमानी लगती है।
जब शिक्षा भी ट्रेंड में बिके,
तो विद्रोह भी कहानी लगती है।

"शोध अगर सत्ता को चिढ़ाए,
तो विद्रोह भी शोध बन जाएगा।
कभी दीवारों पर पोता जाएगा,
कभी कुर्सियों पर बैठाया जाएगा।"

गोबर का गीत

— डॉ सत्यवान सौरभ

जहाँ पठन-पाठन की बात थी,
वहाँ चुप्पी की बारात थी।
कक्षा में ना विचार बचे,
बस 'आदेशों' की सौगात थी।

दीवारों पर नहीं चित्र थे,
ना ही कोई सृजन खड़ा था।
छात्रों का गुस्सा जल रहा,
और प्रिंसिपल घर बड़ा था।

नारे अब न काग़ज़ पे थे,
ना पोस्टर की भव्यता थी।
गोबर की गंध में घुली,
एक युग की मुखर व्यथा थी।

पावन कहो, या अपवित्र,
ये प्रश्न भी अब मौन हुए।
जब न्याय नहीं, संवाद नहीं,
तो प्रतिकार भी मौन हुए।

गाय के नाम पे सत्ता हँसी,
गाय के नाम पे गुस्सा भी।
जब शासन ने प्रतीक चुराए,
तब छात्रों ने रचा व्यंग्य कभी।

पंडित बोले — यह अशुद्ध है,
मीडिया चिल्लाया — ये अपराध!
पर किसी ने ना पूछा कारण,
किससे टूटी वह मर्यादा-वृत्त-रेखाग्राध।

अब शुद्धि क्या और पाप क्या है,
जब भाषा को मिटा दिया गया?
तो गोबर ही बना शास्त्र नया,
जब संवाद को लजा दिया गया।

बचा नहीं जब कोई मंच,
तो घर की चौखट तक आना था।
शिक्षा अगर मौन रहे सदा,
तो बदबू से उसे जगाना था।

सावधान हो ओ शिक्षा के स्वामी,
छात्र अब कलम से नहीं डरते।
अगर तुम विचारों को कैद रखोगे,
तो दीवारें भी गंध से लड़ते।

"गोबर, गुस्सा और विश्वविद्यालय की गिरती गरिमा" गोबर का जवाबः जब शिक्षा की दीवारों पर गुस्सा पुता हो।

दिल्ली विश्वविद्यालय में छात्रों द्वारा क्लासरूम और प्रिंसिपल के घर पर गोबर लिपने की घटना केवल अनुशासनहीनता नहीं, बल्कि एक गहरी असंतोष की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति थी। इस विरोध ने सत्ता और शिक्षा व्यवस्था के पाखंड को उजागर किया — जहां एक ओर गोबर को सांस्कृतिक प्रतीक माना जाता है, वहीं जब छात्र उसी प्रतीक का इस्तेमाल विरोध में करते हैं, तो उसे 'असभ्य' करार दिया जाता है। विश्वविद्यालय अब संवाद के नहीं, सत्ता के मंच बनते जा रहे हैं, जहां छात्रों की असहमति को दबाया जाता है। इस असामान्य विरोध ने न केवल व्यवस्था की संवेदनहीनता पर सवाल खड़े किए, बल्कि यह भी बताया कि प्रतीकों के ज़रिए भी तीखा प्रतिरोध संभव है। जब असहमति की जगह छिन जाती है, तो गुस्सा प्रतीकों के ज़रिए बोलता है — और कभी-कभी गोबर से भी।

प्रियंका सौरभ

दिल्ली विश्वविद्यालय, जिसे भारत के सबसे प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों में गिना जाता है, हाल ही में एक अजीबोगरीब और प्रतीकात्मक विरोध का केंद्र बना। कुछ छात्रों ने क्लासरूम की दीवारों पर गोबर लिपा और प्रिंसिपल के घर के बाहर भी गोबर फेंक दिया। यह कोई फिल्मी सीन नहीं था, न ही कोई ग्रामीण उत्सव — यह था एक गुस्से से भरा राजनीतिक वक्तव्य। यह घटना न केवल ध्यान खींचती है, बल्कि कई गहरे और असहज सवाल भी खड़े करती है: क्या विश्वविद्यालय अब सिर्फ सत्ता का विस्तार बन चुके हैं? क्या छात्र आंदोलन केवल 'विचारों' से नहीं, अब 'गंध' से भी संवाद करने लगे हैं?

घटना के पीछे की कथा

यह विरोध दिल्ली यूनिवर्सिटी के साउथ कैंपस स्थित एक कॉलेज में हुआ, जहां छात्रों ने गोबर लिपकर क्लासरूम को 'पवित्र' करने की कोशिश की। दरअसल, यह 'पवित्रता' का तंज था — एक ऐसे सिस्टम पर, जिसे छात्र 'अपवित्र' मानते हैं। कहा गया कि यह विरोध जातिगत भेदभाव, एक दलित प्रोफेसर के साथ अन्याय, और प्रशासन की असंवेदनशीलता के खिलाफ था। छात्रों ने न सिर्फ कक्षाओं को गोबर से लिपा, बल्कि प्रिंसिपल के घर तक जाकर वहां भी प्रदर्शन किया।

गोबरः विरोध का प्रतीक या व्यंग्य?

भारत में गोबर का उपयोग सदियों से पवित्रता, शुद्धता और स्वदेशी जीवनशैली के प्रतीक के रूप में होता आया है। लेकिन इस मामले में इसका प्रयोग गहराई से व्यंग्यात्मक था। यह एक ऐसा प्रतीक था जो न केवल सत्ता की 'पवित्रता' को उलट देता है, बल्कि यह दिखाता है कि छात्र अब विरोध के पारंपरिक तरीकों से आगे बढ़कर, सत्ता की भाषा को उसके ही प्रतीकों से जवाब दे रहे हैं। यह विरोध दरअसल उस छद्म सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर चोट करता है जो गाय, गोबर और गंगाजल को पवित्र मानता है, लेकिन दलित, आदिवासी, और वंचित समुदायों की पीड़ा को अपवित्र विषय मानता है।

विश्वविद्यालयः ज्ञान का केंद्र या सत्ता की चौकी?

भारतीय विश्वविद्यालय धीरे-धीरे उस विचारभूमि से हटते जा रहे हैं जहां असहमति को प्रोत्साहन मिलता था। आज यदि कोई छात्र या प्रोफेसर सत्ता के खिलाफ बोलता है, तो उसे 'राष्ट्रविरोधी', 'गद्दार', या 'विकास-विरोधी' कहा जाने लगता है। कैंपस अब लोकतांत्रिक संवाद के केंद्र नहीं, बल्कि अनुशासन और डर के घेरे बनते जा रहे हैं।

छात्रों के इस कदम को केवल 'असभ्यता' कहकर खारिज करना आसान है, लेकिन यह भूलना नहीं चाहिए कि यह घटना उस निराशा और हताशा की उपज है जो वर्षों से भीतर ही भीतर सुलग रही है। जब संवाद के सारे रास्ते बंद कर दिए जाते हैं, तो प्रतीकात्मक और चौंकाने वाले कदम ही एकमात्र विकल्प बनते हैं।

यह विरोध 'हिंसक' नहीं था, लेकिन 'सुगंधित' भी नहीं था

निश्चित रूप से, गोबर से दीवारें लिपना किसी भी संस्थान के लिए एक अनुशासनहीन हरकत मानी जाएगी। लेकिन यह भी सोचना होगा कि जब छात्र अपनी बात कहने के लिए इतना असामान्य तरीका अपनाते हैं, तो समस्या केवल छात्रों में नहीं, व्यवस्था में भी है। वे किस हद तक खुद को असहाय और अनसुना समझते हैं, यह इस घटना से ज़ाहिर होता है।

यह विरोध न तो हिंसक था, न ही शारीरिक नुकसान पहुँचाने वाला। लेकिन यह मानसिक और सांस्कृतिक असहजता पैदा करने वाला जरूर था। शायद यही इसका उद्देश्य भी था — लोगों को हिलाकर रख देना, ध्यान खींचना, और एक झटके में सत्ता की नकली गरिमा को धूल-गोबर में मिला देना।

प्रिंसिपल का घरः एक नया 'प्रदर्शन स्थल'

छात्रों का प्रदर्शन प्रिंसिपल के निजी घर तक पहुँचना न केवल प्रतीकात्मक था, बल्कि यह दर्शाता है कि छात्रों को अब संस्थागत दायरे में न्याय की उम्मीद नहीं रही। जब कॉलेज के भीतर के मंच निष्क्रिय हो जाते हैं, तो विरोध निजी दायरे तक पहुँच जाता है। यह खतरनाक संकेत है — न केवल शिक्षा व्यवस्था के लिए, बल्कि लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए भी।

मीडिया का व्यवहारः गोबर दिखाओ, गंभीरता नहीं

मीडिया ने इस घटना को सनसनीखेज ढंग से दिखाया — "छात्रों ने लिपा गोबर!", "गाय के नाम पर राजनीति फिर से!" — लेकिन दुर्भाग्यवश किसी ने यह नहीं पूछा कि छात्र ऐसा क्यों कर रहे हैं? किस घटना ने उन्हें इस हद तक पहुंचाया? किसने संवाद के रास्ते बंद किए? मीडिया अक्सर लक्षणों पर बहस करता है, लेकिन बीमारी की जड़ तक नहीं जाता।

सत्ता का दोहरापन

सत्ता जब गाय और गोबर को संस्कृति का हिस्सा मानकर उन्हें नीतियों में शामिल करती है — जैसे गोबर आधारित उत्पादों को बढ़ावा देना, पंचगव्य को चिकित्सा बताना — तब वह 'धर्म-सम्मत' होता है। लेकिन जब यही प्रतीक छात्रों के विरोध में आते हैं, तो वे 'अशलीत' और 'असभ्य' बन जाते हैं। यही सत्ता का दोहरापन है।

छात्रों का यह विरोध सत्ता के इस पाखंड की पोल खोलता है — यह दिखाता है कि सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग केवल सत्ता के लिए सुरक्षित नहीं है, बल्कि आम जनता भी उन्हें विरोध के औजार बना सकती है।

एक व्यंग्यात्मक सवालः अगली बार अगर छात्र "गंगाजल" छिड़कें तो?

मान लीजिए अगली बार छात्र प्रशासनिक आदेश को पवित्र मानकर उस पर गंगाजल छिड़क दें — क्या तब भी यह 'असभ्यता' मानी जाएगी, या यह 'संस्कृति' के सम्मान में गिना जाएगा? जब प्रतीकों की राजनीति हो, तो प्रतीकों से ही जवाब देना सबसे तीखा व्यंग्य होता है — और यही छात्रों ने किया।

समाधान क्या है?

इस घटना के बहाने यह ज़रूरी हो गया है कि विश्वविद्यालयों में संवाद की संस्कृति को फिर से मज़बूत किया जाए। छात्रों की आवाज़ को सुनने, समझने और मान्यता देने की प्रक्रिया को संस्थागत रूप दिया जाना चाहिए। प्रोफेसरों और छात्रों के बीच विश्वास और सम्मान की नींव फिर से खड़ी की जानी चाहिए। किसी भी असहमति को देशद्रोह या अनुशासनहीनता बताने की प्रवृत्ति पर लगाम लगानी होगी।

छात्रों को यह समझाना भी ज़रूरी है कि विरोध का तरीका ऐसा हो जो व्यापक समाज में उनकी बात को सही तरीके से पहुँचाए, न कि केवल क्षणिक ध्यान आकर्षित करे।

यह घटना एक प्रतीकात्मक चेतावनी है — शिक्षा का मंदिर यदि सत्ता की चौकी बन जाए, तो छात्र वहीं पर 'शुद्धि यज्ञ' करने लगते हैं। गोबर का यह विरोध हमें यह याद दिलाता है कि लोकतंत्र में असहमति की गुंजाइश बनी रहनी चाहिए — वरना दीवारें ही नहीं, सोच भी गंधाने लगती है।

न्याय की शुरुआत खुद से: पहले समय का पालन, समय का अनुशासनः न्याय का असली आभूषण

हर पल, जब कोई इंसाफ की गुहार लेकर अदालत के दरवाजे पर दस्तक देता है, समय उसकी सबसे कठोर अग्निपरीक्षा बन जाता है। इंसाफ महज हक दिलाना नहीं, बल्कि उसे सही वक्त पर सौंपने का अटूट वचन है। मगर जब सुर्खियां चीखकर बताती हैं कि राष्ट्रपति को विधेयकों पर तीन महीने में फैसला लेने का फरमान सुनाया गया, और उसी पल यह खबर गूंजती है कि सुप्रीम कोर्ट ने चार दशक बाद एक बेटी को उसका हक वापस किया, तो दिल सन्नाटे में डूब जाता है। ये खबरें सिर्फ अखबारों की स्याही नहीं, बल्कि एक कराहती पुकार हैं—क्या हमारी न्यायपालिका, जो लोकतंत्र का सबसे अडिग किला है, समय की इस आग में तप पा रही है? क्या उसमें अपनी चाल को तेज करने और खामियों को बेदखल करने का जज्बा बाकी है?

न्यायपालिकाः समय की कठघरे में

हमारी न्यायपालिका लोकतंत्र का वह जगमगाता सूरज है, जो हर अंधेरे को चीरने का दम रखता है। यह वह पवित्र मंदिर है, जहां सबसे कमजोर नागरिक भी अपने हक की फरियाद लेकर बेखौफ पहुंचता है, यह यकीन लिए कि उसकी पुकार सुनी जाएगी। मगर जब यह पुकार सालों, बल्कि दशकों तक गूंजती रहती है और जवाब में सिर्फ सन्नाटा मिलता है, तो वह मंदिर भी धुंध की चादर में लिपटा सा दिखने लगता है। आंकड़े इस कड़वे सच को और बेनकाब करते हैं। नेशनल ज्यूडिशियल डेटा ग्रिड (एनजेडीजी) की सितंबर 2024 की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत की अदालतों में 4.9 करोड़ से ज्यादा मामले लंबित पड़े हैं, जिनमें 1.3 करोड़ मामले पांच साल से भी पुराने हैं। सुप्रीम कोर्ट के कंधों पर ही 80,000 से अधिक मामलों का बोझ है। ये सिर्फ आंकड़े नहीं, बल्कि उन लाखों जिंदगियों की त्रासदी हैं, जो इंसाफ की आस में अदालतों के चक्कर काटते-काटते थक हार जाती हैं। जब एक बेटी को अपने हक के लिए 40 साल तक जूझना पड़े, जैसा कि हाल के सुप्रीम कोर्ट के फैसले में सामने आया, तो यह महज देरी नहीं, बल्कि इंसाफ का गला घोंटने जैसा है। ऐसी देरी न सिर्फ पीड़ितों के विश्वास को चूर करती है, बल्कि न्यायपालिका की साख को भी कटघरे में खड़ा कर देती है।

दोहरा मापदंडः समय की पाबंदी का सवाल

जब सुप्रीम कोर्ट कार्यपालिका को समय की सख्त घड़ी थमाता है, मसलन राष्ट्रपति को विधेयकों पर तीन महीने की मोहलत, तो एक तीखा सवाल हवा में तैरता है—क्या वह खुद इस घड़ी की सुइयों के साथ कदमताल कर पा रही है? एक तरफ वह दूसरों को फुर्ती का मंत्र सिखाती है, दूसरी तरफ उसके अपने गलियारों में लंबित मुकदमों की फाइलें धूल चाट रही हैं। यह दोमुंहा रवैया उसकी विश्वसनीयता को कठघरे में खड़ा करता है। अगर समय ही न्याय का असली आलम है, तो क्या पहले अपने चौबारे को नहीं संवारना चाहिए? यह नजारा चीख-चीखकर कह रहा है—न्याय के मंदिर में सुधार की लौ अब और तेज जलनी चाहिए, पहले भीतर, फिर बाहर।

चुनौतियांः समय के आगे बौनी व्यवस्था

भारत जैसे विशाल और विविध देश में, जहां हर वर्ग न्यायपालिका से उम्मीद भरी नजरों से देखता है, समय पर न्याय देना एक बड़ी चुनौती है। सबसे गंभीर समस्या है जजों की कमी—2024 तक भारत में प्रति 10 लाख लोगों पर मात्र 21 जज थे, जबकि अमेरिका में यह संख्या 150 के आसपास है। जटिल कागजी कार्यवाही और तकनीकी संसाधनों की कमी इस देरी को और गहराती है। नतीजतन, समय न्याय की राह में सबसे बड़ा रोड़ा बन जाता है। फिर भी, यह निराश होने का समय नहीं है। यदि न्यायपालिका को समाज का सच्चा मार्गदर्शक बनना है, तो उसे समय के साथ कदम मिलाकर चलना होगा।

सुधार की राहः समय को पकड़ने का जज्बा

न्यायपालिका को समय के साथ कदम मिलाने के लिए निर्णायक और त्वरित सुधारों की जरूरत है। पहला कदम है तकनीक को अपनाना—ई-कोर्ट परियोजना को गति देना, ऑनलाइन सुनवाई को सर्वसुलभ बनाना और डिजिटल रिकॉर्ड-कीपिंग को अचूक करना। 2023 में सुप्रीम कोर्ट ने 3.3 लाख से अधिक मामलों की वर्चुअल सुनवाई की, जो एक सशक्त शुरुआत है। दूसरा, फास्ट-ट्रैक कोर्ट्स की संख्या में भारी वृद्धि जरूरी है, खासकर महिलाओं, बच्चों और कमजोर वर्गों के लिए। वर्तमान में मात्र 800 फास्ट-ट्रैक कोर्ट्स हैं, जो मांग की तुलना में नाकाफी हैं। तीसरा, जजों की भर्ती, प्रशिक्षण और संख्या में इजाफा अनिवार्य है, साथ ही उन्हें आधुनिक कानूनी और तकनीकी ज्ञान से सुसज्जित करना होगा। सबसे महत्वपूर्ण, जवाबदेही सुनिश्चित करनी होगी—फैसलों में देरी के कारणों को पारदर्शी बनाना और समयबद्ध न्याय की नीति लागू करना विश्वास बहाली का आधार बनेगा।

आत्मावलोकनः समय से बड़ा सुधारक कोई नहीं

आत्मावलोकन कमजोरी नहीं, बल्कि ताकत का प्रतीक है। जब कोई संस्था अपनी खामियों का ईमानदारी से सामना करती है, तभी वह समाज का अटूट भरोसा अर्जित करती है। न्यायपालिका को अपनी सुस्त गति, लंबित मामलों के पहाड़ और फैसलों में असमानता जैसे गंभीर सवालों पर ठहरकर विचार करना होगा। यह महज एक संस्था की बात नहीं, बल्कि उस हर व्यक्ति की पुकार है, जो न्याय की उम्मीद में जिंदगी का अनमोल वक्त कोर्ट-कचहरी में गंवा देता है। समय पर न्याय न मिलना केवल देरी नहीं, बल्कि न्याय का इनकार है। यदि न्यायपालिका को समाज का सच्चा पथ-प्रदर्शक बनना है, तो उसे सबसे पहले अपनी रफ्तार पर सवाल उठाने होंगे।

लोकतंत्र की ताकतः समय पर इंसाफ

जब न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका—हर संस्था समय के साथ तालमेल बिठाकर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करती है, तभी लोकतंत्र की गरिमा सिरमौर बनती है। न्यायपालिका को अपनी भूमिका का नये सिरे से मूल्यांकन करना होगा—खामियों को निडरता से स्वीकारते हुए समयबद्ध न्याय का अटल संकल्प लेना होगा। क्योंकि अगर न्याय की नींव डगमगाई, तो कोई भी समाज देर तक टिका नहीं रह सकता। समय वह कसौटी है, जो हर संस्था की सत्यता परखता है। यदि न्यायपालिका इस कसौटी पर खरी उतरना चाहती है, तो उसे अपनी गति को तेज करना होगा।

नई सुबहः समय पर इंसाफ का वादा

न्यायपालिका वह दीपक है, जो समाज को अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाता है। यदि यह दीपक मंद पड़ जाए, तो इसे फिर से प्रज्वलित करना हम सबका कर्तव्य है। आत्मावलोकन की निडरता और सुधार की ज्वाला के साथ, न्यायपालिका न केवल अपने गौरव को पुनः स्थापित कर सकती है, बल्कि हर नागरिक के लिए वह सुबह ला सकती है, जहां न्याय सिर्फ सपना नहीं, समयबद्ध हकीकत हो। समय की पाबंदी केवल एक नियम नहीं, बल्कि न्याय का प्राण है—यह वह आधार है, जो भरोसे को अटल बनाता है। यह सुबह तभी साकार होगी, जब न्यायपालिका न केवल दूसरों को समय का पाठ पढ़ाए, बल्कि स्वयं उसे जीए। समय की पुकार है कि वह अपनी कमियों को दूर करे, गति को तीव्र करे और यह विश्वास दिलाए कि न्याय की राह में कोई पीछे नहीं छूटेगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

दर्दः न धर्म देखे, न जात, बस दिल में घुस जाए बात-बात महंगाई में एक चीज जिसका प्रोडक्शन कभी नहीं रुका — दर्द

इस महंगाई के दौर में, जहां एक चुटकी केसर खरीदने से पहले जेब टटोलनी पड़ती है, एक चीज ऐसी है जो अब भी मुफ्त बरसती है – दर्द। बिना टैक्स, बिना जीएसटी, बिना किसी सब्सक्रिप्शन के। ये ऐसा बिन बुलाया मेहमान है जो दिल की चौखट पर दस्तक तक नहीं देता, सीधे अंदर घुसता है और किराएदार बनकर टिक जाता है। इसे बांटने के लिए न लाइसेंस चाहिए, न इसे लेने के लिए कोई क्वालिफिकेशन और न सरकार की मंजूरी। बस एक ठेस, एक ताना, एक नजर – और दर्द हाजिर, बिल्कुल मुफ्त, सीधे आपके दिल के ठिकाने पर। सब कुछ महंगा हो गया है - दाल-चावल, पेट्रोल, रिश्ते, वफादारी, और यहाँ तक कि मुस्कान भी अब क्रेडिट कार्ड पर मिलती है। लेकिन दर्द? ये तो ऐसा उदार सौदागर है जो मुफ्त में गले लगाता है और जाने का नाम नहीं लेता। ये चाय की आखिरी चुस्की की तरह चिपकता है, जो खत्म होने का नाम ही नहीं लेता। दर्द का बाजार कभी मंदा नहीं पड़ता – न स्टॉक क्रैश, न रिसेशन, बस फ्री डिलीवरी, 24/7।

दर्द का डिलीवरी सिस्टम तो ऐसा है कि स्विगी-जोमैटो सब इसके सामने फीके। दोस्त का "ब्रो, तू अभी तक सेटल क्यों नहीं हुआ?" वाला तीर, रिश्तेदार का "अब तो शादी कर ले" ताना, या मोहल्ले की गुप्ता आंटी का अपने बेटे की विदेशी नौकरी का वायरल रील – हर गली से दर्द की मुफ्त डिलीवरी, वो भी '30 मिनट या फ्री' गारंटी के साथ। आंटी चुप रहें तो दर्द, क्योंकि उनकी खामोशी आपके फ्लॉप स्टार्टअप पर साइलेंट मिस्ड कॉल है। और बोलें तो दर्द, क्योंकि उनका "हमारा बेटा तो ऑस्ट्रेलिया में ठाठ करता है" आपकी जिंदगी को 2-स्टार रेटिंग वाली वेब सीरीज बना देता है। ऊपर से समाज का फ्री का फंडा – "थोड़ा जॉब ढूंढो, देखो शर्मा जी का बेटा CEO बन गया!" बस, दर्द का पैकेज कन्फर्म, सीधा दिल में ड्रॉप।

ट्रेन का टिकट 700 का, मूवी का 400 का, लेकिन ब्रेकअप का दर्द? वो तो फ्लैश डिलीवरी में घर पहुंचता है, वो भी बिना शिपिंग चार्ज। प्रेमी का 'सीन' बिना जवाब? दिल में भूकंप। जवाब में "व्यस्त हूँ"? सुनामी। कोई डाउन पेमेंट नहीं, बस इमोशनल कर्ज और ब्याज में आंसुओं की किश्तें। और अगर प्रेमी ने "हम सिर्फ दोस्त हैं" कह दिया, तो समझो दिल का पूरा ढांचा ही ढह गया। सरकारी दफ्तरों में दर्द का मेला सजा है। लाइन में खड़े-खड़े कमर टूटे, वो शारीरिक दर्द। फाइल टेबल से टेबल घूमे और काम न हो, वो मानसिक दर्द। अफसर की बनावटी मुस्कान हो या चपरासी की घुड़की, दोनों मुफ्त में दिल तोड़ने का ठेका लिए घूमते हैं। आपकी फाइल "कल आना" के चक्रव्यूह में फंसती है, और समाधान सिर्फ आपके दिल में घूमता रहता है – वो भी मुफ्त का दर्द बनकर।

सोशल मीडिया तो दर्द का डिजिटल सुपरमार्केट है। किसी की मालदीव्स की तस्वीर देखी, और अपनी जिंदगी की साइकिल की हवा निकल गई। कोई नई एसयूवी फ्लॉन्ट करे, तो लगता है आपकी पुरानी स्कूटी आप पर ठहाके लगा रही है। इंस्टाग्राम की स्टोरी आपकी नींद चुराती है, और कोई फिल्टर इस दर्द को छुपा नहीं पाता। किसी ने "लिविंग माइ बेस्ट लाइफ" कैप्शन डाला, और आप अपने ऑफिस की कुर्सी पर अपनी "वर्स्ट लाइफ" का हिसाब करने लगते हैं। ये दर्द मुफ्त है, लेकिन इसकी कीमत आपकी शांति चुकाती है। फिल्मों में भी यही हाल। हीरोइन की विदाई, मां का रोना, बैकग्राउंड में वायलिन। टिकट का पैसा तो वसूल, लेकिन आंसुओं की कीमत मुफ्त। पॉपकॉर्न खत्म होता है, दर्द नहीं।

शादी? वो तो दर्द की लाइफटाइम फ्री सब्सक्रिप्शन है। पति का "क्या हुआ" और पत्नी का "कुछ नहीं" – ये वो डायलॉग हैं जो दर्द की स्क्रिप्ट लिखते हैं। पत्नी की खामोशी तूफान का ट्रेलर है, और पति का "बोलो न" वो बटन जो तूफान को रिलीज करता है। सास-बहू का ड्रामा? वो तो मुफ्त दर्द का बोनस पैक – ताने, तकरार, और तमाशा, सब एक ही डील में। और अगर ससुराल में "खाना नमक ज्यादा है" सुन लिया, तो समझो दर्द का मुफ्त कटोरा भर गया। दर्द का सबसे बड़ा सप्लायर है – उम्मीद। हम उम्मीद करते हैं कि दोस्त वक्त देगा, सरकार सस्ता राशन देगी, बॉस तारीफ करेगा, बेटा/बेटी अच्छे पढ़ेंगे, जॉब करेंगे। लेकिन जब ये सपने टूटते हैं, तो दर्द बिना नोटिस दिल में दाखिल हो जाता है। उम्मीद जितनी ऊंची, दर्द उतना गहरा। फिर भी हम हर बार उम्मीद की दुकान पर लौटते हैं, और हर बार दर्द का मुफ्त सामान लेकर घर आते हैं।

लेकिन दर्द की तारीफ करनी पड़ेगी। ये नकली नहीं, वादों की तरह झूठा नहीं, भरोसे की तरह टूटता नहीं। ये ईमानदार है – जितना देना है, उतना देता है, बिना भेदभाव। अमीर-गरीब, बड़ा-छोटा, सबके लिए बराबर। ये न जात देखता है, न धर्म, न बैंक बैलेंस। ये तो बस दिल की भाषा समझता है। दर्द की मार्केटिंग भी गजब है। इसे न बिलबोर्ड चाहिए, न टीवी ऐड। ये तो मुंह-जुबानी फैलता है। एक गलत बात, एक गलतफहमी, एक टूटा वादा – और दर्द वायरल। ये फेसबुक के ट्रेंड से तेज फैलता है, और ट्विटर के हैशटैग से ज्यादा असर करता है।

इस दुनिया में जहां हर सांस की कीमत वसूल की जाती है, दर्द वो बेशकीमती रत्न है जो बिना मांगे, बिना शर्त, सीधे दिल की गहराइयों में उतर आता है। न लाइन, न सब्सिडी, न कोई टीएंडसी। बस दिल से दिल तक डायरेक्ट डिलीवरी। ये लोकतंत्र का असली नमूना है – कोई वीआईपी कोटा नहीं, कोई रिजर्वेशन नहीं। हर वर्ग, हर उम्र, हर इंसान को बराबर हिस्सा। कहते हैं न, दुनिया में सब बिकता है। केसर, सोना, हीरा – सब की कीमत। लेकिन दर्द? वो आज भी मुफ्त है। और शायद इसलिए सबसे ज्यादा बरसता है। क्योंकि ये वो मुद्रा है जो न छपती है, न गिनी जाती है, बस महसूस होती है। तो अगली बार जब दर्द की डिलीवरी आपके दरवाजे पर आए, उसे गले लगाइए। आखिर, ये एकमात्र चीज है जो इस महंगाई में भी मुफ्त है – और पूरी ईमानदारी से आपका साथ देती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर हीमोफीलिया पीड़ित भी जी सकते हैं खुशहाल जीवन

हर वर्ष 17 अप्रैल को 'विश्व हीमोफीलिया दिवस' के रूप में मनाया जाता है। पाठकों को बताता चलूं कि हीमोफीलिया खून की एक काफी दुर्लभ बीमारी है, तथा लगभग 10,000 लोगों में से 1 व्यक्ति इससे प्रभावित होता है। वास्तव में, हीमोफीलिया एक गंभीर रक्तस्राव विकार है, जो क्लॉटिंग कारकों (यानी, फैक्टर 8 और फैक्टर 9 प्रोटीन) की कमी के कारण होता है। दरअसल, हीमोफीलिया रोग और अन्य वंशानुगत रक्तस्राव विकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए हर साल 17 अप्रैल को इस दिवस को मनाया जाता है। पाठकों को बताता चलूं कि वर्ष 1989 में, विश्व हीमोफीलिया दिवस की शुरुआत विश्व हीमोफीलिया महासंघ (डब्ल्यूएफएच) द्वारा डब्ल्यूएफएच के संस्थापक फ्रैंक नेबेल के जन्मदिन के सम्मान में की गई थी। यहां पाठकों को यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि हीमोफीलिया एक दुर्लभ, आनुवंशिक रक्त विकार है, जो तब होता है जब किसी व्यक्ति का रक्त इतना नहीं जमता कि रक्तस्राव धीमा या बंद हो जाए। उपलब्ध जानकारी के अनुसार हीमोफीलिया तब होता है, जब किसी व्यक्ति के शरीर में सामान्य मात्रा में थक्के जमने वाले कारक(प्रोटीन और प्लेटलेट्स) नहीं होते। पाठक जानते होंगे कि थक्के जमने वाले कारक ही रक्त के थक्के जमने में मदद करते हैं।खून से जुड़ी यह बीमारी(हीमोफीलिया) श्राम्बोप्लास्टिन पदार्थ की कमी से होती है। चिकित्सकों के अनुसार हीमोफीलिया एक लाइलाज बीमारी है, जिससे जड़ से नहीं खत्म किया जा सकता। वास्तव में, हीमोफीलिया के पीछे शरीर की एंटी-हीमोफीलिक फैक्टर (एएचएफ) को पर्याप्त मात्रा में नहीं बना पाने की अक्षमता जिम्मेदार है।अगर इस बीमारी के बारे में जल्द पता नहीं चलता है तो इससे जोड़ों, हड्डियों, मांसपेशियों में बार-बार खून बहने से सिनोविटिस, अर्थराइटिस और जोड़ों में स्थायी विकृति हो सकती है। बहरहाल, यहां यदि हम आंकड़ों की बात करें तो हीमोफीलिया एंड हेल्थ कलेक्टिव ऑफ नॉर्थ (एचएचसीएन) के आंकड़ों के अनुसार, भारत में हीमोफीलिया 'ए' से पीड़ित अनुमानित 1,36,000 लोग रहते हैं - जो विश्व स्तर पर दूसरे नंबर पर है। जानकारी के अनुसार इनमें से वर्तमान में केवल 21,000 ही पंजीकृत हैं। हालांकि, यह बात अलग है कि भारत में हीमोफीलिया पीड़ितों की वास्तविक संख्या इससे ज़्यादा हो सकती है।एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार अनुमान है कि भारत में हीमोफ़िलिया के लगभग 80% मामले अपंजीकृत हो जाते हैं। बहरहाल,सरल शब्दों में कहें तो हीमोफीलिया एक ऐसी बीमारी है, जो खून के थक्के बनने की क्षमता को सीमित कर देती है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह बीमारी लगभग वंशानुगत होती है और महिलाओं की तुलना में ज़्यादातर पुरुषों को प्रभावित करती है। दरअसल, एक बच्चे के लिंग का निर्धारण करने के तरीके में शामिल आनुवंशिकी के कारण, महिलाओं की तुलना में पुरुष हीमोफीलिया के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। इससे पीड़ित लोगों में रक्तस्राव अपने आप या किसी चोट के कारण हो सकता है तथा इससे पीड़ित लोगों में रक्तस्राव नियंत्रित करना मुश्किल होता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि हीमोफ़िलिया से पीड़ित लोगों में क्लॉटिंग फैक्टर का स्तर सामान्य से कम होता है।इससे पीड़ित लोगों में आंतरिक रक्तस्राव एक

गंभीर चिंता का विषय है तथा इससे पीड़ित लोगों में संक्रमण का खतरा बना रहता है। वास्तव में, हीमोफीलिया जीन में उत्परिवर्तन या परिवर्तन के कारण होता है, जो रक्त का थक्का बनाने के लिये आवश्यक क्लॉटिंग फैक्टर प्रोटीन बनाने के लिये निर्देश प्रदान करता है। यह परिवर्तन या उत्परिवर्तन क्लॉटिंग प्रोटीन को ठीक से कार्य करने या पूरी तरह समाप्त होने से रोक सकता है। ये जीन X(एक्स) गुणसूत्र पर स्थित होते हैं। जानकारी के अनुसार यह (हीमोफीलिया) दो प्रकार का होता है, जिनमें क्रमशः हीमोफीलिया 'ए' और हीमोफीलिया 'बी' को शामिल किया जा सकता है। जानकारी के अनुसार हीमोफीलिया 'ए' हीमोफीलिया का सबसे सामान्य प्रकार है। इसमें रक्त में थक्के बनने के लिये आवश्यक 'फैक्टर 8' की कमी हो जाती है। वहीं दूसरी ओर हीमोफीलिया 'बी' बेहद कम सामान्य है। हीमोफीलिया 'बी' में थक्के बनने के लिये आवश्यक 'फैक्टर-9' की कमी हो जाती है। उल्लेखनीय है कि हीमोफीलिया 'ए', लगभग 5,000 में से एक (1) व्यक्ति में होता है, जबकि हीमोफीलिया 'बी' इससे भी दुर्लभ है, जो कि लगभग 20,000 में से 1 व्यक्ति को होता है। बहरहाल,पाठकों को बताता चलूं कि 'विश्व हीमोफीलिया दिवस' वर्ष 2022 की थीम 'सभी के लिये पहुँचः साझेदारीः नीतिः प्रगति, अपनी सरकार को शामिल करना, विरासत में मिली रक्तस्राव विकारों को राष्ट्रीय नीति में एकीकृत करना' रखी गई थी। वहीं साल 2023 में विश्व हीमोफ़िलिया दिवस की थीम थी, 'सभी के लिए पहुंचः देखभाल के वैश्विक मानक के रूप में रक्तस्राव की रोकथाम' थी तथा वर्ष 2024 में थीम 'सभी के लिए समान पहुँचः सभी रक्तस्राव विकारों को पहचानना' रखी गई थी।इस साल यानी कि वर्ष 2025 में विश्व हीमोफ़िलिया दिवस की थीम, 'सभी के लिए पहुंचः महिलाओं और लड़कियों को भी रक्तस्राव होता है' रखी गई है। वास्तव में, इस थीम का मकसद, रक्तस्राव विकारों से पीड़ित महिलाओं और लड़कियों को बेहतर निदान और इलाज मुहैया कराना है। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि विश्व हीमोफीलिया महासंघ (डब्ल्यूएफएच) के अध्यक्ष सीज़र गैरिडो ने यह बात कही है कि 'रक्तस्राव विकार से पीड़ित महिलाओं और लड़कियों को पहचानना हमारे समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। अतीत में, उन्हें अक्सर रक्तस्राव विकार से पीड़ित व्यक्तियों के बजाय केवल वाहक के रूप में देखा जाता था। अब समय आ गया है कि हम उनके अनुभवों और संघर्षों को पूरी तरह से स्वीकार करें। महिलाओं और लड़कियों के निदान और उपचार को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है, और ऐसा करने से हमारे पूरे रक्तस्राव विकार समुदाय को मजबूती मिलती है। महिलाओं और लड़कियों सहित सभी के लिए पहुँच के लिए अपना समर्थन दिखाने के लिए 17 अप्रैल को हमसे जुड़ें।' बहरहाल, वास्तव में, यहां यह एक कटु सत्य है कि आज, रक्तस्राव विकार वाली महिलाओं और लड़कियों का अभी भी कम निदान किया जाता है और उन्हें उचित सेवाएँ नहीं मिल पाती हैं। ऐसे में आज जरूरत इस बात की है कि इसे एक जिम्मेदारी समझते हुए इस पर पर्याप्त ध्यान दिया जाए। कहना ग़लत नहीं होगा कि हीमोफीलिया की समय पर पहचान, निदान, उपचार और देखभाल के माध्यम से, महिलाओं और लड़कियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता है। यहां उल्लेखनीय है कि आज भी हमारे देश के अनेक दूर-दराज के क्षेत्रों(रिमोट एरियाज) में उचित निदान सुविधाओं की कमी के कारण गंभीर रक्त विकार से पीड़ित लगभग 80 प्रतिशत भारतीयों का निदान नहीं हो पाता है। हालांकि, हीमोफीलिया का कोई पुख्ता इलाज नहीं है, लेकिन कुछ समय पहले ही एक प्रतिष्ठित हिंदी दैनिक के हवाले से यह खबरें आईं थीं कि भारतीय वैज्ञानिकों ने विश्व स्तर पर हीमोफीलिया बीमारी पर एक बड़ी कामयाबी हासिल की है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार हीमोफीलिया के मरीजों के लिए भारत की पहली मानव जीन-थेरेपी सफल रही है। एक प्रतिष्ठित दैनिक में छपी एक खबर के अनुसार 'गंभीर हीमोफीलिया 'ए' से ग्रस्त मरीजों में जब इस थेरेपी का इस्तेमाल किया गया, तो कुछ ही सप्ताह के दौरान उनमें रक्तस्राव की दर शून्य तक पहुंचने के साथ-साथ बार-बार रक्त के थक्के जमाने वाले कारकों को बदलने की आवश्यकता भी नहीं पड़ी।' अंत में यही कहूंगा कि हालांकि, हीमोफीलिया पर आज भी नये-नये मेडिकल शोध किए जा रहे हैं और इसका पुख्ता इलाज ढूढने की दिशा में तेजी से काम किया जा रहा है, लेकिन आज भी समय पर हीमोफीलिया की पहचान करके, दवाओं का उपयोग करके, अच्छा पौष्टिक भोजन, नियमित व्यायाम और नियमित रूप से हीमोफीलिया उपचार केंद्र की विजिट करके, हीमोफीलिया से पीड़ित व्यक्ति एक लंबा, अच्छा और खुशहाल जीवन जी सकता है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

ओडिशा कांग्रेस ने राजनीतिक मामलों की समिति गठित की

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वरः अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष की स्वीकृति से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव श्री के सी वेणुगोपाल ने ओडिशा प्रदेश कांग्रेस कमेटी की राजनीतिक मामलों की समिति की घोषणा की है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा घोषित ओडिशा राजनीतिक मामलों की समिति में 25 सदस्य हैं, जबकि दो ओडिशा सह-प्रभारी पदेन सदस्य हैं और सभी प्रतिनिधि संगठन प्रमुख सदस्य हैं। उक्त समिति में ओडिशा प्रभारी श्री अजय कुमार लल्लू तथा पीसीसी अध्यक्ष श्री भक्त चरण दास शामिल हैं।इसी तरह विधायक रामचंद्र कदम, सांसद सप्तगिरी उलाका, पूर्व पीसीसी अध्यक्ष निरंजन पटनायक, जयदेव जेना, शरत पटनायक, प्रसाद हरिचंदन, वरिष्ठ कांग्रेस नेता श्रीकांत जेना, नागेंद्र प्रधान, जगन्नाथ पटनायक, अमर नाथ प्रधान मौजूद हैं । तदनुसार, समिति में पूर्व सांसद सुशीला तिरिया, अनंत प्रसाद सेठी, रामचंद्र खुंटिया, पूर्व मंत्री शरत राउत, एआईसीसी सचिव आसफ अली खान, वरिष्ठ विधायक तारा प्रसाद बाहिनीपति, रमेश जेना, सी.एस. राजनायके, पूर्व विधायक देबाशीष पटनायक, संतोष सिंह सलूजा, मोहम्मद मुकीम, कांग्रेस नेता विश्व रंजन मोहंती, एआईसीसी महिला कांग्रेस सचिव सस्मिता बेहरा शामिल हैं।

जीडिमेटला बडेर के पदाधिकारियों को किया आमंत्रित

परिवहन विशेष न्यूज

हैदराबादः सीरवी समाज ट्रस्ट लग्गेरे की ओर से नवनिर्मित आईमाता बडेर की प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव के लिए सीरवी समाज जीडिमेटला हैदराबाद बडेर के पदाधिकारियों को आमंत्रण पत्रिका देकर आमंत्रित किया गया। लग्गेरे बडेर के सह-कोषाध्यक्ष बगदाराम सिंदडा ने बताया कि चार दिवसीय प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन 4 जून 2025 को धर्मगुरू दीवान माधवसिंह के सानिध्य में होगा। इस अवसर पर जीडिमेटला बडेर के सदस्य भूराराम काग व मंदिर के मुख्य पुजारी उपस्थित रहे।

पाकिस्तान में चीनी सेना की तैनाती, भारत के लिए चिंता का विषयः डॉ. नर्मदेश्वर प्रसाद चौधरी

चीन ने पाकिस्तान में बढ़ते आतंकी हमले के बीच अपनी परियोजनाओं और चीनी नागरिकों की सुरक्षा के लिए पहली बार पाकिस्तान में निजी सुरक्षा कर्मियों को तैनात किया है। खबर यह आ रही है कि पाकिस्तान में चीन-पाकिस्तान इकोनॉमिक कॉरिडोर के नाम से चीन ने निवेश किया है जिसकी कीमत 50 मिलियन डॉलर है। चीन के काशगर से लेकर पाकिस्तान के ग्वादार तक कॉरिडोर बनाया गया है।

मजे की बात यह है कि इस कार्य को करने के लिए चीन अपने यहां से ही श्रमिक ले आया है। सामान्यतः होता यह है कि जब कोई देश किसी दूसरे देश में निवेश करता है तो श्रमिक स्थानीय ही होते हैं, लेकिन पाकिस्तान में इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने में जो राजस्व उत्पादित होगा, वह चीन को ही मिलेगा अर्थात चीनी कंपनी, चीनी श्रमिक, चीनी मशीनरी और चीन के पैसे से जो भी कार्य होना था, वह चीन खुद वापस ले जाएगा। चीन के 30 हजार नागरिक पाकिस्तान में कार्य कर रहे हैं और उन्हें बलूच लोग निशाना बना रहे हैं क्योंकि ग्वादार बलूचिस्तान में आता है और बलूचिस्तान के खनिज भंडार पर चीन की नज़रें टिकी हुई है जिसे बलूचिस्तान के लोग बचाना चाहते हैं। इसलिए बलूचिस्तान के लोग चीनियों को पकड़-पकड़ कर मार रहे हैं। वर्ष 2025 में ही लगभग 20 ऐसे मामले हैं, जहां पर चीनियों की जान भी जा चुकी है। चीन इस विषय पर पाकिस्तान के साथ लगातार चर्चा भी कर रहा है कि कम से कम हमारे नागरिकों की सुरक्षा ही कर दो। पाकिस्तान ने कहा कि अब हम क्या करें जब अपने श्रमिक अपने यहां से लाए हैं। आप कम से कम हमारे यहां के लोगों को रोजगार तो दीजिए।

अब चीन ने अपनी तीन निजी सुरक्षा कंपनियों डेवे सिक्योरिटी फ्रंटियर सर्विस ग्रुप, चाइना ओवरसीज सिक्योरिटी ग्रुप और हुआक्सीन झांगशान सिक्योरिटी सर्विस को संयुक्त सुरक्षा व्यवस्था के लिए नियुक्त किया है। अब पाकिस्तान में चीनियों की सुरक्षा व्यवस्था भी चीनी सुरक्षा एजेंसियों की हो गई है, तो प्रश्न यह उठता है कि चीनी सुरक्षा में पाकिस्तानी सेना अपने को कहां देखती है? यह परिस्थिति उनके लिए कितनी अपमानजनक है कि वह दुनिया भर में ढिंढोरा पीटते हैं कि हम भारत से लोहा मोल लेते हैं और हर बार हारते हैं, हमारी सेनाएं बहुत अच्छी हैं लेकिन ऐसी नाकारा परिस्थिति उत्पन्न हो गई है कि चीन को भी अब इन पर विश्वास नहीं है।

यहां पर भारत के लिए चिंता का विषय यह है कि काशगर से होकर ग्वादार तक का जो रूट बन रहा है, वह पाक अधिकृत कश्मीर से होकर गुजर रहा है और जब चीन सुरक्षा के नाम पर अपनी सेना पाक अधिकृत कश्मीर में ले आएगा और पाकिस्तान को भारत के खिलाफ चीन भी सहयोगी के रूप में मिल जाएगा और भारत से लड़ने के लिए दो बड़े-बड़े फ्रंट खुल जाएंगे। भविष्य में जब भी भारत पाक अधिकृत कश्मीर को स्वतंत्र करने का प्रयास करेगा तो चीन और पाकिस्तान मिलकर तीन दिशाओं से भारत के लिए खतरा बन सकते हैं।

बलूचिस्तान पाकिस्तान का सबसे बड़ा राज्य है और खनिज संपन्न भी है, इसीलिए चीन पाकिस्तान में निवेश कर रहा है और पाकिस्तान को उपनिवेश बनाने की फिराक में है।

चीनी सेना की तैनाती भारत के लिए एक बड़ी चिंता का विषय है, क्योंकि जब चीनी सेना पाक अधिकृत कश्मीर में आ जाएगी और भारत भी वहां पर चीनी सेना को बर्दाश्त नहीं करेगा। इससे तनाव के माहौल उत्पन्न हो सकते हैं । इस स्थिति पर विशेष नजर रखने की जरूरत है।

हमारा इतिहास और संस्कृति, एक अमूल्य धरोहर

हमारा इतिहास और संस्कृति हमारी पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हमें हमारे पूर्वजों के बारे में बताता है, उनकी उपलब्धियों और चुनौतियों के बारे में बताता है, और हमें हमारी जड़ों से जोड़ता है।इतिहास हमें हमारे अतीत के बारे में बताता है, जिससे हमें अपने वर्तमान और भविष्य को समझने में मदद मिलती है। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि हम कहाँ से आए हैं और हम कहाँ जा रहे हैं। संस्कृति हमें हमारी पहचान और मूल्यों के बारे में बताती है। यह हमें हमारी परंपराओं और रीति-रिवाजों के बारे में बताती है, और हमें हमारी विरासत से जोड़ती है।

हमारी संस्कृति में कई विशेषताएं हैं जो हमें अद्वितीय बनाती हैं। इनमें से कुछ विशेषताएं हैं:

हमारी संस्कृति विविधता से भरपूर है, जिसमें विभिन्न धर्मों, भाषाओं, और परंपराओं का समावेश है।

हमारी संस्कृति में आध्यात्मिकता का महत्वपूर्ण स्थान है, जो हमें हमारे जीवन के उद्देश्य और अर्थ के बारे में बताती है।

हमारी संस्कृति में कई परंपराएं हैं जो हमें हमारे पूर्वजों से विरासत में मिली हैं।

हमारे इतिहास और संस्कृति का संरक्षण करना हमारी जिम्मेदारी है। हमें अपने इतिहास और संस्कृति के बारे में जानने और उन्हें अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए प्रयास करना चाहिए।

हमारे इतिहास और संस्कृति का संरक्षण करके, हम अपनी पहचान और विरासत को बचाए रख सकते हैं और अपने भविष्य को सुदृढ़ बना सकते हैं।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़

ना समझा करों गरीब...!

खुद को ना समझा करों गरीब,
क्योंकि तुम हो बहुत ही शरीफ।
तुम्हें कभी पर्याप्त नहीं मिलता,
कम हैं कमाई संतोष है खिलता।
ना किया करों गरीबी का ऐलान,
ईश्वर-अल्लाह सभी हैं मेहरबान।

खुद को ना समझा करों गरीब,
क्योंकि तुम हो बहुत ही शरीफ।
बताओ तुम्हारे पास क्या नहीं है,
इस ज़िन्दिगी का एहसास नहीं है।
सांस ले रहें हो ये पर्याप्त नहीं है,
मांगकर ना लेना भाग्य में नहीं हैं।

खुद को ना समझा करों गरीब,
क्योंकि तुम हो बहुत ही शरीफ।
वह आदत छोड़ो कि पीड़ित हो,
सबसे बड़ी नेमत हैं जीवित हो।
तुम सिर्फ खुद से ही रूठें हुए हो,
मानसिक स्थिति बदलों डटे रहो।

संजय एम तराणेकर

दर्द सहन न कर पाने के कारण रेलवे ट्रैक पर ही एक श्रद्धालु की मौत हो गई

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वरः ढेंकनाल जिले के मुख्यालय गेंगुटिया गांव के पास रेलवे पटरी पर एक शव मिला। मृतक ढेंकनाल जिले के कामाख्यानगर थाना क्षेत्र के साहिर रसानंद पति हैं। रसानंद पति कामाख्यानगर के अनंतपुर साही स्थित राम मंदिर के उपासक थे।जानकारी के अनुसार रसानंद 14 तारीख को दोपहर 2 बजे घर से निकला और वापस नहीं लौटा। अंततः रसानंद का शव गेंगुटिया गांव के पास रेलवे ट्रैक पर मिला। शव के पास एक सुसाइड नोट मिला।जिसमें उन्होंने लिखा था कि वह करीब 10 वर्षों से हृदय रोग से पीड़ित हैं। मिर्गी के कारण उन पर काफी कर्ज हो गया है और उनकी चार हृदय शल्यक्रियाएं हो चुकी हैं।पिछले 10 महीनों से मेरा स्वास्थ्य बहुत ख़राब है। चाहे मैं कितनी भी दवा ले लूं, यह ठीक नहीं होता। मेरे पास दवा लेने के लिए और पैसे नहीं हैं। बीमारी का दर्द असहनीय है । अंततः मैं आत्महत्या कर रहा हूं। मेरी आत्महत्या के लिए कोई जिम्मेदार नहीं है। मेरी एक ही इच्छा है कि मेरी मृत्यु के बाद मेरा शरीर किसी बड़े चिकित्सा संस्थान को दान कर दिया जाए। उधर, घटना की सूचना मिलने पर सदर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने सुसाइड नोट भी जब्त कर लिया है तथा जांच जारी है।

कड़वा सच : वफ़ा के लिए तड़पते मर्द और बेवफ़ाई पर चुप समाज, आखिर क्यों ?

पारसमणि अग्रवाल

जब भी कोई रिश्ता टूटता है, समाज बिना सुने, बिना समझे और बिना परखे सीधे लड़के को कठघरे में खड़ा कर देता है। लड़की रोती है, वो मासूम है। लड़का चुप है – वो गुनहगार है। लड़की रिश्ता तोड़े – स्वतंत्रता की मिसाल। लड़का रिश्ता छोड़े – बेवफा। यह कैसा इंसाफ है? क्या किसी रिश्ते की पूरी जिम्मेदारी सिर्फ पुरुष के कंधों पर डाल दी गई है?

प्यार, यह शब्द सुन के जहन रोमांचित हो उठता है क्योंकि प्यार एक आस होती है, एक विश्वास होता है, दो दिलों का अटूट मिलन होता है, दोनों एक दूजे के लिए खास होते है, हर सुख दुःख में साथ होते है पर मौजूदा परिवेश में प्यार समानता की चौखट पर बेदम होकर रिश्तों की अदालत में सिर्फ पुरुष को क्यों फांसी देता प्रतीत हो रहा है। हर बार जब कोई रिश्ता खत्म होता है तो समाज का पहला सवाल होता है – "लड़के ने क्या किया?" कभी पूछा है किसी ने – "लड़की ने क्या किया?" कभी-कभी तो लड़की ही होती है जो धोखा देती है, दोहरी जिंदगी जीती है, झूठ बोलती है, फिर भी समाज उसे मासूम मानता है। क्यों? सिर्फ इसलिए कि वो औरत है? क्या औरतें इंसान नहीं जो गलतियाँ नहीं कर सकतीं? यहाँ सिर्फ रिश्ता टूटा नहीं बल्कि फांसी पर सिर्फ लड़का चढ़ा। समाज के इस चेहरे से तो आप परिचित होंगे क्योंकि उसी समाज के आप भी हिस्सा है। एक लड़की ब्रेकअप करे तो उसके लिए तर्कों की झड़ी लग जाती है और कहा जाताहै कि उसे उसकी आज़ादी चाहिए थी, लड़का टॉक्सिक था. उसके पैरेंट्स को पसंद नहीं था लेकिन जब लड़का ब्रेकअप करे तो वो तुरंत बेवफा, मतलबी, खिलवाड़ करने वाला और न जाने क्या-क्या बन जाता है। लड़का अपनी मेहनत, समय, पैसा और भावनाएँ लगाता है। वो घंटों फोन पर बात करता है, मीटिंग्स छोड़कर मिलने जाता है, अपनी ज़रूरतें किनारे रखकर लड़की की ख्वाहिशें पूरी करता है। फिर भी उसे क्या मिलता है? शक, तिरस्कार और अंत में बेवफा का टैग। जो रिश्ता लड़के ने सींचा, उसी में उसे जहर घोलने वाला कहा गया।

सम्भवतः समाज की दकियानूसी सोच में यह बात पूरी तरह घुल चुकी है कि हर हर्ट ब्रेक की जड़ में लड़का ही होता है। सिर्फ इतना ही नहीं, जब कोई सोशल मीडिया पर ब्रेकअप स्टोरी आती है तो बिना तथ्यों के ही लड़के को गालियाँ पड़ती हैं। लड़की के आँसू देखकर जजमेंट पास कर दिया जाता है। इसके साथ ही यदि कई लड़कियाँ जानबूझकर लड़कों की भावनाओं का उपयोग करती हैं। रिश्ते का दिखावा करके उनसे गिफ्ट्स लेना,पैसे खर्च करवाना,उनका समय और मानसिक ऊर्जा खींचना, फिर किसी बेहतर विकल्प के आते ही रिश्ता तोड़ देना और ऊपर से समाज क्या कहता है? शायद लड़की मजबूर रही होगी। एक लड़का अगर दो लड़कियों से बात कर ले तो समाज उसे चरित्रहीन कह देता है लेकिन अगर लड़की दो लड़कों से एक साथ डेटिंग कर रही हो, तो लोग कहते हैं – वो तो अपने ऑप्शन एक्सप्लोर कर रही है।

ये कैसी मानसिकता है जिसमें वही काम लड़की करे तो मॉडर्न और लड़का करे तो गुनहगार? आजकल सोशल मीडिया पर ब्रेकअप्स की कहानियाँ वायरल होती हैं। लड़कियाँ लड़कों की फोटो, चैट्स और पर्सनल बातें सार्वजनिक कर देती हैं। उनका चरित्र हनन कर देती हैं। और लड़के? नौकरी खो बैठते हैं, मानसिक तनाव से जूझते हैं, कई बार आत्महत्या तक कर लेते हैं फिर भी दुनिया चुप रहती है। लड़का एक बार सच में किसी लड़की से प्यार करता है, तो वो सब कुछ दांव पर लगा देता है। परिवार से बगावत, करियर से समझौता, खुद की खुशियों का त्याग। लेकिन बदले में अगर उसे धोखा मिले, तो वह कहीं जाकर अपने दर्द को किसी अंधेरे में छुपा लेता है क्योंकि उसे समाज से सहानुभूति नहीं मिलती। अगर मिलती है तो सिर्फ चुप्पी और उपहास, जो सबसे ज्यादा प्यार करता है, वही सबसे ज्यादा टूटता है लेकिन दिखावा नहीं करता। कहा जाता है न कि पाँचो अंगुलियां एक सी नहीं होती .ऐसे ही हर प्रेम कहानी में ऐसा नहीं होता लेकिन 99 प्रतिशत कहानियों में दोषी सिर्फ लड़का ठहराया जाता जबकि कड़वा सच तो ये है कि हर ब्रेकअप में लड़का गलत नहीं होता। हर आँसू सच्चे नहीं होते। हर आरोप की सच्चाई नहीं होती।

अब ज़रूरत है कि समाज आँख खोले। लड़कों के दर्द को, उनकी भावनाओं को, उनकी वफ़ा को पहचाने। क्योंकि वफ़ा किसी जेंडर की जागीर नहीं, यह इंसानियत का एहसास है। लड़के प्यार में बेवफा नहीं. वो बस टूट जाते हैं और बोलने की हिम्मत नहीं बचा पाते। रिश्तों के कटघरे में लड़कों पर बेवफा होने का दाग कब तक रहेगा ,ये तो भविष्य के गर्भ में है लेकिन एक बार चिंतन जरूर कीजिए कि ऐसी घटनाओं में क्या वाकई झूठे आंसू सच को धो जाते है।

पारसमणि अग्रवाल

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023